शोधशौर्यम्

ISSN - 2581-6306

Peer Reviewed and Refereed
International
Scientific Research Journal

website : www.shisrrj.com

SHODHSHAURYAM
INTERNATIONAL SCIENTIFIC REFEREED
RESEARCH JOURNAL

Volume 6, Issue 5, September-October-2023

Email: editor@shisrrj.com, shisrrj@gmail.com

शोधशौर्यम्

Shodhshauryam

International Scientific Refereed Research Journal

[Frequency: Bimonthly]

ISSN : 2581-6306

Volume 6, Issue 5, September-October-2023

International Peer Reviewed, Open Access Journal
Bimonthly Publication

Published By
Technoscience Academy

Website URL : www.technoscienceacademy.com

Advisory / Editorial Board

Advisory Board

- **Prof. Radhavallabh Tripathi**
  Ex-Vice Chancellor, Central Sanskrit University, New Delhi, India
- **Prof. B. K. Dalai**
  Director and Head. (Ex) Centre of Advanced Study in Sanskrit. S P Pune University, Pune, Maharashtra, India
- **Prof. Divakar Mohanty**
  Professor in Sanskrit, Centre of Advanced Study in Sanskrit (C. A. S. S.), Savitribai Phule Pune University, Ganeshkhind, Pune, Maharashtra, India
- **Prof. Ramakant Pandey**
  Director, Central Sanskrit University,Bhopal Campus.Madhya Pradesh, India
- **Prof. Parag B Joshi**
  Professor & OsD to VC, Department of Sanskrit Language & Literature, HoD, Modern Language Department, Coordinator, IQAC, Director, School of Shastric Learning, Coordinator, research Course, KKSU, Ramtek, Nagpur, India
- **Prof. Sukanta Kumar Senapati**
  Director, C.S.U., Eklavya Campus, Agartala, Central Sanskrit University,Janakpuri, New Delhi, India
- **Prof. Sadashiv Kumar Dwivedi**
  Professor, Department of Sanskrit, Faculty of Arts, Coordinator, Bharat adhyayan kendra, Banaras Hindu University, Varanasi Uttar Pradesh, India
- **Prof. Dinesh P Rasal**
  Professor, Department of Sanskrit and Prakrit, Savitribai Phule Pune University, Pune, Maharashtra, India
- **Prof. Kaushalendra Pandey**
  Head of Department, Department of Sahitya, Faculty of Sanskrit Vidya Dharma Vigyan, Banaras Hindu University, Varanasi, Uttar Pradesh, India
- **Prof. Manoj Mishra**
  Professor, Head of the Department, Department of Vedas, Central Sanskrit University, Ganganath Jha Campus, Azad Park, Prayagraj, Uttar Pradesh, India

- **Prof. Ramnarayan Dwivedi**
  Head, Department of Vyakarana Faculty of Sanskrit Vidya Dharma Vigyan, BHU, Varanasi, Uttar Pradesh, India
- **Prof. Ram Kishore Tripathi**
  Head, Department of Vedanta, Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi, Uttar Pradesh, India
- **Dr. Pankaj Kumar Vyas**
  Associate Professor, Department- Vyakarana, National Sanskrit University (A central University), Tirupati, India

---

Editor-In-Chief

- **Dr. Raj Kumar**
  SST, Palamu, Jharkhand, India
  Email : editor@shisrrj.com

Associate Editor

- **Prof. Dr. H. M. Srivastava**
  Department of Mathematics and Statistics, University of Victoria, Victoria, British Columbia, Canada
- **Prof. Daya Shankar Tiwary**
  Department of Sanskrit, Delhi University, Delhi, India
- **Prof. Satyapal Singh**
  Department of Sanskrit, Delhi University, Delhi, India
- **Dr. Ashok Kumar Mishra**
  Assistant Professor (Vyakaran), S. D. Aadarsh Sanskrit College Ambala Cantt Haryana, India
- **Dr. Somanath Dash**
  Assistant Professor, Department of Research and Publications, National Sanskrit University, Tirupati, Andhra Pradesh, India

- **Dr. Raj Kumar Mishra**
  Assistant Professor, Department of Sahitya, Central Sanskrit University Vedavyas Campus Balahar Kangara Himachal Pradesh, India

---

Executive Editor

- **Dr. Sheshang D. Degadwala**
  Associate Professor & Head of Department, Department of Computer Engineering, Sigma University, Vadodara, Gujarat

---

Editors

- **Dr. Ekkurti Venkateswarlu**
  Assistant Professor in Education, Sri Lal bahadur Sashtri National Sanskrit University, (Central University), New Delhi, India
- **Rajesh Mondal**
  Department of Vyakarana, National Sanskrit University, Tirupati, Andhra Pradesh, India

---

Assistant Editors

- **Dr. Virendra Kumar Maurya**
  Assistant Professor- Sanskrit, Government P.G. College Alapur, Ambedkarnagar, Uttar Pradesh, India

---

International Editorial Board

- **Dr. Agus Purwanto, ST, MT**
  Assistant Professor, Pelita Harapan University Indonesia, Pelita Harapan University, Indonesia

- **Dr. Morve Roshan K**
  Lecturer, Teacher, Tutor, Volunteer, Haiku Poetess, Editor, Writer, and Translator
  Honorary Research Associate, Bangor University, United Kingdom

- **Vaibhav Sundriyal**
  Research Scientist, Old Dominion University Research Foundation, USA

- **Dr. Elsadig Gamaleldeen**
  Assistant Professor, Omdurman Ahlia University, Sudan

- **Frank Angelo Pacala**
  Samar State University, Samahang Pisika ng Pilipinas

- **Thabani Nyoni**
  Department of Economics Employers Confederation of Zimbabwe (EMCOZ) ,
  University of Zimbabwe, Zimbabwe

- **Md. Amir Hossain**
  IBAIS University/Uttara University, Dhaka, Bangladesh

- **Mahasin Gad Alla Mohamed**
  Assistant Professor, Kingdom Saudi Arabia, Jazan University, Faculty of Education - Female Section, Sabya

CONTENT

SR. NO	ARTICLE/PAPER	PAGE NO
1	**गर्भवती महिलाओं के रक्ताल्पता में सुधार हेतु समुदाय आधारित पोषण एवं परामर्श का अध्ययन** डॉ. शिखा खरे, पूजा तिवारी	01-05
2	**व्यक्तित्वविकासे योगप्रकाराः आवश्यकताश्च** डॉ. अनुपविश्वासः	06-11
3	**त्यागपत्र उपन्यास की शिल्पगत समीक्षा** सतीश कुमार	12-15
4	**प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा के केन्द्र के रूप में तक्षशिला विश्वविद्यालय** संतोष कुमार पाण्डेय	16-20
5	**Use of Literary Devices and Figure of Speech in An Innovative Way** Dr. Jyoti Thakur	21-24
6	**पूर्वी उत्तर प्रदेश की थारू जनजाति का सामाजिक-सांस्कृतिक पाश्र्वचित्र** डॉ. योगेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी	25-29
7	**Population Dynamics : A Geometrical Approach of Some Epidemic Models** MS Ojha, Prof. Manoj Kumar Srivastava	30-47
9	**राष्ट्रीयशिक्षानीतौ 2020 इत्यस्यां मूल्यानि** ममता	53-55
10	**विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास पर चयनित योगाभ्यास का प्रभाव: एक यादृच्छिक प्रयोगात्मक अध्ययन** डॉ. समरजीत सिंह, अजय उनियाल	56-62
11	**The Impact of Human Resource Information Systems : An Exploratory Study in Selected Private Firm** Ms. Priyanka Patel	63-87
12	**गीतवीतरागेऽलङ्कारविमर्शः** जगदीश नस्कर	88-94
13	**श्रीरामलक्ष्मणसीतानां तापसानामाश्रममण्डले आतिथ्यविषये विषमपदार्थटीकादिशा समीक्षणम्** सुभाषिनी उमरावः, डॉ. नीरजतिवारी	95-101

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 5
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

गर्भवती महिलाओं के रक्ताल्पता में सुधार हेतु समुदाय आधारित पोषण एवं परामर्श का अध्ययन

डॉ0 शिखा खरे
शोधनिर्देशिका (सहायक आचार्य)
गृह विज्ञान विभाग, नेहरु ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालयः, कोटवा, जमुनीपुर – दुबावल, प्रयागराज, उ0प्र0
पूजा तिवारी
गृह विज्ञान विभाग, नेहरु ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालयः कोटवा, जमुनीपुर – दुबावल, प्रयागराज, उ0प्र0

Article Info

Publication Issue :
September-October-2023
Volume 6, Issue 5

Page Number : 01-05

Article History
Received : 01 Sep 2023
Published : 11 Sep 2023

सारांश– रक्ताल्पता विकासशील देशों में गर्भवती महिलाओं को प्रभावित करने वाली सबसे आम पोषण संबंधी विकारों में से एक है। गर्भावस्था के दौरान रक्ताल्पता आमतौर पर गर्भावस्था के खराब परिणाम से जुड़ा होता है और इसके परिणामस्वरूप जटिलताएं हो सकती हैं जो मां और भ्रूण दोनों के जीवन को खतरे में डाल सकती हैं।इसके कारण गर्भवती महिलाओं में अनेकों बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं जिसका गहरा प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर पड़ता है तथा कभी –कभी उनसे उत्पन्न बच्चे में भी इसके दुष्परिणाम दिखाई पड़ते हैं। हालाँकि हमारी सरकारों ने महिलाओं में रक्ताल्पता जैसी समस्या से निजात पाने के लिए बहुत सी सरकारी योजनाओं को प्रारंभ किया है तथा इसके सकारात्मक परिणाम भी हमें प्राप्त हो रहे हैं फिर भी इस क्षेत्र में सरकारी तंत्र के साथ – साथ आम जनमानस व समुदाय को भी विशेष प्रयास करने होंगें तभी हम इस समस्या को जड़ से समाप्त कर सकते हैं और महिलाओं को एक स्वस्थ जीवन प्रदान कर सकते हैं।इस शोध में शोधकर्त्री द्वारा भी गर्भवती महिलाओं के रक्ताल्पता में सुधार हेतु समुदाय आधारित पोषण एवं परामर्श पर शोध किया है और प्राप्त विचारों को प्रस्तुत किया है।

मुख्य षब्द– रक्ताल्पता, पोषण, समुदाय, परामर्श, गर्भवती, महिला, सरकार।

प्रस्तावना–रक्ताल्पता महिलाओं की एक आम बीमारी है।अपने देश में निवास करने वाली महिलाओं का एक बहुत बड़ा हिस्सा इस रोग से ग्रसित है।प्रायः यह देखा गया है कि मासिक धर्म वाली पांच में से एक महिला और सभी गर्भवती महिलाओं में से आधी रक्ताल्पता से ग्रसित हैं। रक्ताल्पता, गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाली पोषण से सम्बंधित एक सामान्य शारीरिक विकार है। एक सर्वेक्षण केअनुसार

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

विकसित देशों में इसका प्रसार 14%, विकासशील देशों में 51% और भारत में यह 65% से 75% तक है।

रक्ताल्पता भारत में मातृ मृत्यु का दूसरा सबसे आम कारण है और दक्षिण पूर्व एशिया में 80% मातृ मृत्यु का कारण रक्ताल्पता ही है। रक्ताल्पता भी अंतर्गर्भाशयी विकास मंदता के लिए एक स्थापित जोखिम कारक है। , जिससे खराब स्वास्थ्य वाले नवजात की उत्पत्ति तथा गर्भवती महिलाओं की प्रसवकालीन मृत्यु हो जाती है।

संभावित अवलोकन अध्ययन व्यापकता का अनुमान लगाने और गर्भवती महिला में एनीमिया से जुड़ी मातृ और प्रारंभिक नवजात रुग्णता और मृत्यु दर का अध्ययन करने के लिए किया जाता है।

परिणाम – गर्भावस्था में आहार एवं पोषण का अमूल्य योगदान होता है क्योंकि स्वस्थ शिशु को जन्म देने के लिए माता का स्वस्थ रहना आवश्यक होता है। संतुलित आहार के सेवन से स्वास्थ्य उत्तम रहता है। साथ ही गर्भस्थ शिशु का शारीरिक एवं मानसिक विकास भी उत्तम प्रकार से होता है। संतुलित व पोषण आहार द्वारा ही माँ बच्चे की ठीक से रचना कर पाती है। अतः गभवती माँ को अधिक कार्बोहाइड्रेट, वसा, प्रोटीन, कैल्शियम, आयरन, विटामिन 'ए', 'सी', 'डी' की अत्यधिक आवश्यकता होती है। गर्भावस्था के दौरान वसा की कोई अतिरिक्त आवश्यकता नहीं होतीं हैं। किन्तु अणीय अंगो (Foetalorgans) जैसे यकृत तथा मस्तिष्क में अनिवार्य वसीय अम्लों की प्रचुर मात्रा रहती है। संतुलित आहार से ही उसकी आवश्यकता पूरी हो जाती है। गर्भावस्था में हीमोग्लोविन (Heamoglobin) के निर्माण के लिए लगभग 400 मिलीग्राम लौह तथा भ्रूण में लौह के भण्डारण के लिए 240 मि.ग्रा. की आवश्यकता होती है। अपरा (Placenta) से होकर लौह की क्षति तथा प्रसव के दौरान रक्त से लौह की क्षति लगभग 90 मि.ग्रा. होती है। लौह की इस क्षति को दूर करने के लिए गर्भवती महिला को अतिरिक्त 8 मि.ग्रा. लौह की प्रतिदिन की आवश्यकता होती है।आयोडीन की भी अतिरिक्त आवश्यकता होती है। आयोडीन एक हार्मोन थायरॉक्सिन (Thyroxine) का महत्वपूर्ण अवयव ही जिसकी कमी से में घेंघा रोग (Goitre) होता है जबकि शिशु में वामनता की स्थिति का निर्माण होता है जिससे शिशु का शारीरिक और मानसिक विकास अवरुद्ध हो जाता है। अतः गर्भवती महिला को पर्याप्त मात्रा में आयोडीन युक्त आहार मिलना चाहिए जो कि साधारण नमक के उपयोग से प्राप्त हो जाता है। गर्भावस्था में विटामिन्स की अतिरिक्त मात्रा कीआवश्यकता होती है। विशेषज्ञ समिति द्वारा प्रस्तावित एक सामान्य महिला के लिए 200 I.U. विटामिन 'डी' की आवश्यकता होती जबकि गर्भवती महिला को 400 I.U. विटामिन 'डी' की आवश्यकता होती है।

इस प्रकारयह स्पष्ट होता है कि गर्भवती माँ को अधिककार्बोहाइड्रेट, वसा, प्रोटीन, कैल्शियम एवं लोहा, विटामिन 'ए', 'सी' एवं 'डी' की अत्यधिक आवश्यकता है। चिकित्सकों एवं वैज्ञानिकों के द्वारा किए गए अनुसंधानों से यह स्पष्ट ज्ञात हो चुका है कि जिस माता के आहार में अपने तथा गर्भ में पल रहे भावी शिशु के लिए उपयुक्त मात्रा में पौष्टिक तत्व विद्यमान रहते है, उसे गर्भकाल में अनुपयुक्त एवं निम्न आहार, आहार करने वाली माता की अपेक्षा कम कष्ट एवं रोग होते हैं। पूर्ण पौष्टिक आहार का सेवन करने वाली माता गर्भ को पूरे समय तक अधिक सुरक्षित रख सकती है और प्रसवकालीन कष्ट को भी अधिक सहजता एवं सरलता से सहन कर सकती है। इतना ही नहीं शिशु जन्म के पश्चात् वह शिशु का पालन–पोषण भी अधिक अच्छे ढंग से कर सकती है । वैसी माँ के दूध में अधिक पौष्टिक तत्व विद्यमान रहते है। स्वयं माँ का गर्भावस्था में एवं प्रसवोपरान्त स्वास्थ्य भी उत्तम रहता है। स्वस्थ सन्तुलित खान–पान की आदत

गर्भधारण से पहले से ही डाल लेनी चाहिए ये स्वस्थ्य बच्चे के विकास के लिए जरूरी है। क्योंकि गर्भ के आने के दिन से ही उसके पोषण की सारी आवश्यकताए मां से ही पूरी होती है।

गर्भावस्था में विभिन्न पोषकों की आवश्यकता की पूर्ति संतुलित आहार के साथ ही की जानी चाहिए। एक दिन में 3 या 4 बार आहार देने की अपेक्षा 3 या 6 बार लघु आहार (Small feeds) देना बेहतर / उत्तम रहता है। पत्तेदार सब्जी, फल, अन्य हरी सब्जियाँ तथा द्रवों का सेवन भी आवश्यक है।

अत्यधिक भार के अर्जन से बचने के लिए अत्यधिक मसालेदार तथा तले हुये आहारों, (Highly spiced and fried foods) भारी मिष्ठान (Heavydesert) देने की अपेक्षा गुड़ सेवन उत्तम होता है क्योंकि गुड़ में लौह की मात्रा अधिक है ।

गर्भावस्था के दौरान स्वास्थ्यवर्धक आहार खाना और नियमित तौर पर व्यायाम करना गर्भवती महिलाओं और गर्भ में पल रहे बच्चे के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। इससे इनका वजन भी नियंत्रित रहेगा औरशिशु के बढ़ने में मदद मिलेगी, आपके बच्चे का वज़न अच्छा होगा और आपकी डायबिटीज भी नियंत्रण में रहेगी। विभिन्न प्रकार के आहार खाने से आपको ऐसे पोषक तत्व मिलते हैं, जो आपके बच्चे के विकास को प्रोत्साहित करते हैं और आपको तरोताज़ा रखते हैं। इसलिए गर्भवती महिलाओं को नियमित रूप से संतुलित आहार खाना चाहिए।

गर्भावस्था में स्वास्थ्यवर्धक आहार –

- **अनाजः** चावल, पास्ता अथवा ब्रेड से आपको ऊर्जा और Bसमूह के विटामिन मिलते हैं। साबुत अनाज वाले आहार विटामिन और आहार–संबंधी रेशों से भरपूर होते हैं, जो आपको कब्ज़ नहीं होने देते। रिफ़ाइंड चावल अथवा सफेद ब्रेड की अपेक्षा साबुत अनाज वाले उत्पाद चुनें, जैसे भूरे चावल, ब्रेड अथवा ओट्स।
- **सब्ज़ियां और फलः** सब्ज़ियां और फल विटामिन और खनिजों के अच्छे स्रोत होते हैं। पत्तेदार सब्ज़ियां फ़ोलिक एसिड से भरपूर होती हैं, जो भ्रूण को तंत्रिकीय नलिका दोष (मस्तिष्क और रीढ़ की जन्मजात विकलांगता) से प्रभावित होने से बचाती हैं। संतरा और कीवी जैसे फलों में पाया जाने वाला विटामिनCआपके शरीर के आयरन को मिलाने में मदद करता है। रंगीन सब्ज़ियां और फल जैसे कद्दू, टमाटर और गहरे हरे रंग की सब्ज़ियों में कैरोटीन अधिक मात्रामें मिलता है और इनसे आपको पर्याप्त मात्रा में विटामिन ए प्राप्त होता है।
- **मांस, मछली, अंडे और अन्य विकल्प :** इनमें आमतौर पर अंडे, बीन्स, टोफू, मेवे और बीज शामिल होते हैं। प्रोटीन, आयरन और विटामिन B12 प्राप्त करने के लिए अपने भोजन में बिना चर्बी वाला मांस और चिकन शामिल करें। तेलयुक्त मछली, जैसे सामन, पैसेफ़िक साउरी अथवा सारडाइन मछली ओमेगा–3 फ़ैटी एसिड, जैसे कि DHA की अच्छी स्रोत होती हैं, जो मस्तिष्क के विकास के लिए महत्वपूर्ण है।
- **दूध और दूध के विकल्पः**अपने आहार में कम चिकनाई वाला दूध, दही अथवा पनीर और बिना दूध वाले कैल्शियम के अन्य स्रोत जैसे कैल्शियमयुक्त सोयादूध, टोफू, डिब्बाबंद सारडाइन अथवा गहरे हरे रंग की पत्तेदार सब्ज़ियां शामिल करें।

- खाना पकाने के लिए वनस्पति तेल का उपयोग करें।
- कम नमक खाएं और अपने नमक के उपभोग को प्रतिदिन 5 ग्राम अथवा 1 छोटे चम्मच तक सीमित रखें। डिब्बाबंद आहार और प्रोसैस किया हुआ मांस, जैसे हैम और सॉसेज कम खाएं।
- ढेर सारा पानी पीएं।
- अतिरिक्त मीठे और ठोस चिकनाई वाले आहार, जैसे तले हुए व्यंजन, नूडल्स, आइसक्रीम, कैंडी, बिस्कुट, मिठाइयां, सॉफ़्ट ड्रिंक या सोडा और फल पेय कम से कम चुनें। इन आहारों में कैलोरी अधिक और पोषक तत्व कम होते हैं।

गर्भावस्था में आहार चार्ट –

सुबह 7 बजे	चाय 1 कप खजूर–5–6ः 'मेरी' विस्कुट – 2 –3 या सूजी का रस
सुमह 8.30 बजे	डबलरोटरी 2 स्लाइस या दलिया–1 कटोरा या इडली– 2 या चपाती – 2 और साथ में 1 कटोरी सब्जी पनीर–1 टुकड़ा या अंडा–1, दूध–1 गिलास
सुबह 11 बजे	फल–1 या अंकुरित दाल – 1 कटोरा या भुने हुए चने और गुड़–1 कटोरी
दोपहर 1 बजे (भोजन)	दाल – 1 कटोरी, हरी सब्जी–1 कटोरी दही– 1 कटोरी, चपाती – 3 या 4 अथवा चावल 3 करछुल सलाद 1 प्लेट
सांय 4 बजे	1 गिलास या पनीर का सैंडविच 1 अथवा पोहा या उपमा या लस्सी – 1 गिलास
रात्रि 8.30 बजे	सब्जी– 1 कटोरी, दाल – 1 कटोरी, दही– 1 कटोरी, या मीट या मछली या चिकन– 1 कटोरी चपाती–3 या 4, चावल – 3 करछुल सलाद –1 प्लेट
रात्रि 9.30 बज	दूध 1 गिलास

निष्कर्ष – गर्भवती महिलाओं में रक्ताल्पता की उच्च व्यापकता इंगित करती है कि भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में रक्ताल्पता एक प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या बनी हुई है। गर्भावस्था में रक्ताल्पता से मां और भ्रूण को खतरा बढ़ जाता है। ग्रेविडा स्थिति, महिला साक्षरता और खराब प्रसूति इतिहास गर्भवती महिलाओं में रक्ताल्पता के लिए योगदान देने वाले महत्वपूर्ण जोखिम कारक हैं।

मातृ एवं भ्रूण परिणाम में सुधार के लिए, यह अनुशंसा की जाती है कि प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल को मजबूत किया जाए और गर्भावस्था में रक्ताल्पता की रोकथाम, शीघ्र निदान और उपचार जैसे पहलुओं को उच्च प्राथमिकता दी जाए।इसके अतिरिक्त समुदाय के लोगों को भी इस समस्या के निराकरण में सहयोग देना चाहिए तथा गर्भवती महिलाओं के पोषण की व्यवस्था में आवश्यक सहयोग प्रदान करना चाहिए ।

प्रजनन स्वास्थ्य पर स्वास्थ्य शिक्षा, आयरन फोलिक एसिड गोलियों की खपत की निगरानी, उच्च जोखिम वाली गर्भावस्था का शीघ्र निदान, और उचित प्रबंधन और उनके स्वास्थ्य देखभाल संबंधी व्यवहार को मजबूत

करना सामुदायिक स्तर पर किए जाने वाले महत्वपूर्ण स्वास्थ्य देखभाल उपाय हैं। इसके अलावा, अब यह समझने का समय आ गया है कि स्वास्थ्य प्रणाली को रक्ताल्पता की घटना में योगदान देने वाले विभिन्न कारकों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और उन्हें राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति में महत्वपूर्ण संकेतक के रूप में शामिल करना चाहिए।

सन्दर्भ–सूची

1. अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आईआईपीएस) (2017) आईआईपीएस राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 2015 (एनएफएचएस–4)। (जनवरी 2019 को एक्सेस किया गया)। गूगल ज्ञानी

2.मेनन , केसी , फर्ग्यूसन , ईएल , थॉमसन , सीडी एट अल । (2014) सक्रिय आयरन अनुपूरण के क्षेत्र से गर्भवती भारतीय महिलाओं की आयरन स्थिति । पोषण 30,291–296–क्रॉसरेफ गूगल स्कॉलर पबमेड

3.कौर , के (2014) भारत में महिलाओं के बीच "एनीमिया एक मूक हत्यारा": वर्तमान परिदृश्य । यूरो जे जूल रेस 3,32–36–गूगल ज्ञानी

4.मेहता , आर , प्लैट , एसी , सन , एक्स एट अल । (2017) शहरी भारतीय महिलाओं में एनीमिया को कम करने के लिए आयरन–सप्लीमेंट बार की प्रभावकारिताः एक क्लस्टर–यादृच्छिक नियंत्रित परीक्षण । एम जे क्लिन न्यूट्र 105,746–757 । क्रॉसरेफ गूगल स्कॉलर पबमेड

5.स्टुअर्ट–मैकडैम , पी (2006) इंटीग्रेटिव एंथ्रोपोलॉजीः आयरन की कमी वाले एनीमिया पर ध्यान । आर्कियोल पेपर्स एम एंथ्रोपोल एसोसिएट 16,129–137 । क्रॉसरेफ गूगल स्कॉलर

6.रावत , के , रावत , एन , माथुर , एन एट अल । (2016) पश्चिमी राजस्थान में दूसरी और तीसरी तिमाही की गर्भावस्था में एनीमिया की व्यापकता और पैटर्न । इंट जे रेस मेड साइंस 4,797–799 । क्रॉसरेफ गूगल स्कॉलर

7.गुप्ता , एन , दिवेदी , एस , सिंह , एन एट अल । (2015) क्या हम गर्भावस्था में एनीमिया को नियंत्रित करने में सफल रहे हैं – तृतीयक देखभाल केंद्र में एक संभावित अध्ययन । इंट जे रिप्रोड गर्भनिरोधक ऑब्स्टेट गाइनकोल 4,995–999। क्रॉसरेफ गूगल स्कॉलर

8.डायमंड–स्मिथ , एनजी , गुप्ता , एम , कौर , एम एट अल । (2016) चंडीगढ़ शहर, उत्तर भारत की गरीब, शहरी गर्भवती महिलाओं में लगातार एनीमिया के निर्धारकः एक मिश्रित विधि दृष्टिकोण । फूड न्यूट्र बुल 37,132–143–क्रॉसरेफ गूगल स्कॉलर पबमेड

9.राय , आरके , फ़ॉज़ी , डब्ल्यूडब्ल्यू , बारिक , ए एट अल । (2018) भारत में महिलाओं में आयरन की कमी से होने वाले एनीमिया का बोझः आयरन और फोलिक एसिड के हस्तक्षेप का प्रदर्शन कैसा रहा है? डब्ल्यूएचओ दक्षिण पूर्व एशिया जे सार्वजनिक स्वास्थ्य 7,18–23 । क्रॉसरेफ गूगल स्कॉलर पबमेड

10.क्वोन , एचजे , रामासामी , आर एंड मॉर्गन , ए (2014) "कितनी बार? कितना? कहां से?" ग्रामीण तमिलनाडु, दक्षिण भारत में पांच साल से कम उम्र के बच्चों के लिए आयरन अनुपूरण कार्यक्रम के लिए माताओं और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का ज्ञान, दृष्टिकोण और अभ्यास । एशिया पीएसी जे पब्लिक हेल्थ 26,378–389क्रॉसरेफ गूगल स्कॉलर

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 5
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

व्यक्तित्वविकासे योगप्रकाराःआवश्यकताश्च

डॉ. अनुपविश्वासः
सहायकाचार्यः, शिक्षाशास्त्रविभागः, एकलव्यपरिसरः (त्रिपुरा), केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः।

Article Info

Publication Issue :
September-October-2023
Volume 6, Issue 5

Page Number : 06-11

Article History
Received : 01 Sep 2023
Published : 11 Sep 2023

शोधसारः- जगति प्रत्येकस्मिन् मनुष्ये साधारणा असाधारणाश्च गुणाः भवन्ति। एते गुणाः अन्येभ्यः मनुष्येभ्यः एनं पृथक्कृत्वा प्रदर्शयन्ति। एतेषां धर्माणां समुदाय एव व्यक्तित्वमिति उच्यते। तद्यथा- उत्साहः, धैर्यं, दया, स्थिरचित्तत्वं, दास्यबुद्धिः, अधिकारप्रियत्वं, क्रोधः, गर्वः, क्षमा इत्यादयः भवन्ति। एते विरुद्धाः अविरुद्धाश्च गुणाः भवन्ति। मनुष्ये समाजविरुद्धगुणानाम् आधिक्येन तस्य अशोभनव्यक्तित्वमिति, मनुष्ये समाजाविरुद्धगुणानाम् आधिक्येन तस्य शोभनव्यक्तित्वमिति उच्यते। समाजिकविरुद्धाविरुद्धगुणानाञ्च आधिक्ये वंशधर्मपरिवेशयोः प्रभाव भवति। अपेक्षाणाम् अपूर्तौ जीवे उद्रिक्तता उत्पन्ना भवति, तेन असन्तुलितव्यक्तित्वं सम्भवति। शारीरिकदृष्ट्या मानसिकदृष्ट्या च स्वस्थः एव स्वस्थः इति स्वीक्रियते। अतः व्यक्तित्वविकासाय, शोभनव्यक्तित्वाय, सन्तुलितव्यक्तित्वाय, शारीरिकमानसिकशक्तीनां विकासाय योगस्य महत्त्वपूर्णं योगदानं भवति। तद्यथा –

योगेन चित्तस्य पदेन वाचां मलं शरीरस्य च वैद्यकेन।
योऽपाकरोत्तं प्रवरं मुनीनां पतञ्जलिं प्राञ्जलिरानतोऽस्मि॥

योगविद्या भारतवर्षस्य अमूल्यनिधिः वर्तते। पुराकालद् एव अविच्छिन्नरूपेण गुरुपरम्परा यतः प्रचलिता आसीत् तद्वत् गुरूपरम्परेयम्। वस्तुत ऋषिमुनियोगिनामध्यवसायजनितं साधनालब्धम् अन्तर्जगतो महत्त्वपूर्णमन्तर्विज्ञानं वर्तते। अनेन योगसमाधिना ऋषयो मन्त्रान् द्रष्टुं समर्था आसन्। वेदानामाधारेण भारतीयानां षट् आस्तिकदर्शनानि सन्ति। दृश्यते अनेन इति दर्शनम्। येन सूक्ष्मतत्त्वानां ज्ञानपूर्वकदर्शनं भवति तदेव दर्शनशास्त्रं कथ्यते। तद्यथा- सांख्यदर्शनम्, योगदर्शनम्, न्यायदर्शनम्, वैशेषिकदर्शनम्, वेदान्तदर्शनम्, मिमांसदर्शनम् इति। सांख्ययोगात् योगदर्शनम् उत्पन्नमिति , सांख्यदर्शनं सिद्धान्तपक्षः योगदर्शनं प्रयोगात्मकमिति केषाञ्चनाभिमतं विद्यते।

सूचकशब्दाः- योगशिक्षा, पातञ्जलयोगदर्शनम्, योगसूत्रम्, योगप्रकाराः, महाभारतम्, वेदः इत्यादयः।

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

प्रास्ताविकम्- संस्कृतवाङ्मये 'वि'उपसर्गपूर्वकम्'अञ्ज्'धातो: क्तिन्प्रत्यये अथवा क्तिच्प्रत्ययेव्यक्तिपदं निष्पद्यते। तस्य भाव: व्यक्तित्वमिति। यस्य अभिव्यक्तौव्यवहारे सति अवगन्तुं शक्यते तद् व्यक्तित्वमुच्यते। पुरुषस्य वैशिष्ट्यं स्वरूपं व्यक्तित्वमिति पदेन गृह्यते। मानवानां मूलप्रवृत्तय:, संवेगा:, प्रत्यक्षज्ञानं, कल्पना, स्मृति:, बुद्धि:, विकासश्चेति सर्वमपि व्यक्तित्वेऽन्तर्भवति। इदं व्यक्तित्वं वंशधर्मे, परिवेशे, शरीरनिर्माणे, आहारे, कुटुम्बस्थित्यां, जनसमाजे च आधारितं भवति।

शिक्षाया: उद्देश्येष्वन्यतम: वर्तते सम्पूर्णव्यक्तित्वस्य विकास:। अत: अध्यापका: व्यक्तित्वस्य अर्थ:, सिद्धान्ता:, मापनम् इत्यादिविषयान् जानीयु:। सामान्यत: लोके शारीरिकसंरचना, स्वास्थ्यं, सौन्दर्यं, वेषभूषा इत्यादीन् सामान्यगुणान् व्यक्तित्वेन लौकिका: प्रयुञ्जते। कदाचिद् अन्नपानादीन् भाषणशैलीं चलनशैलीञ्च दृष्ट्वा व्यक्ते: विषये सामान्यीकरणं कुर्म:। यथा- अयं भोजनप्रिय:, अयं वाग्मी, अयं मितभाषी, अयं भ्रमणशील: इत्यादि। यथोक्तं पञ्चतन्त्रे-

आकारैरिङ्गितैर्गत्या चेष्टया भाषणेन च।

नैत्रवक्त्रविकारैश्च ज्ञायतेऽन्तर्गतं मन:॥इति।

व्यक्तित्वम् इत्यस्य आङ्ग्लभाषायांPersonality इति समानार्थकशब्द: वर्तते। आङ्ग्लभाषायांPersonality शब्द: व्यक्ते: बाह्यगुणान् आचारव्यवहारांश्च द्योतयति। वस्तुत: लाटिनभाषाया: Persona इति शब्दात् Personality शब्द: निष्पन्न:। Persona इत्यस्य लाटिनभाषायां मुखावरणम् इत्यर्थ:। अर्थात् रङ्गमञ्चे विविधा: नटा: स्वस्वभावं गोपयित्वा अन्यव्यक्तीनाम् अभिनयं कुर्वन्ति। तथैव नित्यजीवने जना: वास्तविकव्यवहारं गोपयित्वा भिन्नव्यवहारं प्रदर्शयन्ति। अत: विविधाभि: प्रक्षेपकाप्रक्षेपकपरीक्षाभि: व्यक्ते: गूढव्यवहारं ज्ञातुं प्रयत्न: क्रियते।

व्यक्तित्वविकासे योगशिक्षा- योग: नाम समाधि:, तन्नाम परमात्मन: साक्षात्कार:। योग: नाम संयमनं, तन्नाम आत्मनि नियन्त्रणम्। योगो नाम योजनं, कयो: योजनम् इति चेत्'**अन्त:विद्यमानस्य आत्मतत्त्वस्य परमात्मतत्त्वेन सह योजनम्**' इति। '**योगचित्तवृत्तिनिरोध:**' इति कथयति महर्षि: पतञ्जलि:। प्रमाणम्, विपर्यय:, विकल्प:, निद्रा, स्मृति: इति एता: पञ्चवृत्तय: सन्ति। अध्ययनद्वारा वैराग्यद्वारा च यदा एता: वृत्तय: मनसि विलयं प्राप्नुवन्ति, तादृशं च मन: आत्मन: स्वरूपे यदा दृढतया सम्मिलितं भवति तदा सा स्थिति: योग: इति कथयितुं शक्यते। तत्रापि विशिष्ययोगदर्शने योग: अष्टधा वर्णित: अस्ति।

योगस्य महत्त्वम्- यद्यपि योगस्य पारमार्थिकं महत्त्वम् अनिर्वचनीयमस्ति, तथापि सामान्यतया वक्तुं शक्नुम: यत् योगेन साधक: यत् किमपि प्राप्तुम् इच्छति। तस्य प्राप्तिं कर्तुं शक्नोति। योगेन अन्त:करणं तथा निर्मलीक्रियते यत् साधक: सर्वदा सात्त्विकम् इष्टम् एव कामयते। अनिष्टकारिणी कामना योगनिष्ठस्य साधकस्य न कदापि भवितुम् अर्हति। योग: अन्तस्स्थितम् आत्मतत्त्वं परिचाययति। शरीरं पूर्णतया रोगरहितम् आरोग्यञ्च करोति योग:। पृथिव्यां तादृश: य: कोऽपि रोग एव नास्ति, यस्य वारणं योगेन न स्याद्। भगवान् श्रीकृष्ण: कथयति-**योग: कर्मसु कौशलम्।**

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिक:।

कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद् योगी भवार्जुन:॥[i]

योगस्याभ्यासेन मानव: पूर्णतया स्वस्थ: भवति। यानि स्वस्थजनस्य शास्त्रोक्तलक्षणानि कथितानि सन्ति, तेषां प्राप्ति: भवति योगाभ्यासेन। तद्यथा आयुर्वेदे सुश्रुत:-

समदोषस्समाग्निश्च समधातुमलक्रिय:।

प्रसन्नात्मेन्द्रियमन: स्वस्थ इत्यभिधीयते॥[ii]

व्यक्तित्वविकासे योग:- सर्वेषु मानवेषु एका शक्तिर्भवति। परन्तु मानवा: तां शक्तिं ज्ञातुं न प्रयतन्ते सा एव दैवशक्तिर्भवति। केचनैव तां शक्तिं ज्ञात्वा आनन्दिता: भवन्ति। यथा- रामकृष्णविवेकानन्दचैतन्यादय:। परन्तु अधिका: स्वेषु विद्यमानशक्तिं विस्मृत्य इन्द्रियनिग्रहाभावात् विषयलोलुपिन: भवन्ति। एवमेतेन मिथ्याज्ञानेन सर्वे जननमरणचक्रे पतन्ति। मिथ्याज्ञानस्य कारणं भवति अज्ञानम्। अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशा: पञ्चक्लेशा: भवन्ति। एतेषां पञ्चक्लेशानां जननी भवति अविद्या। यदा मानविज्ञानज्योति:उदेति तदैव अज्ञानान्धकार: नष्टोभूत्वा ज्ञानं प्राप्तुं शक्नोति मानव:।

एवमज्ञानान्धकारस्य निवारणाय उत्पन्ना: विचारा: एव कालान्तरे दर्शनरूपेण परिणमिता:। एतेषां दर्शनानां लक्ष्यमासीत् मानवस्य शारीरिकमानसिकाध्यात्मिक- सांवेगिकशक्तीनांविकास: एव। एतेषु द्वादशसु दर्शनेषु योगदर्शनं विहाय प्रतिपादितानि सर्वाणि दर्शनानि बौद्धिकान्येव भवन्ति अर्थात् पूर्वमेव प्रतिपादितं वर्तते यत् सर्वेषु दर्शनेषु **'तापत्रयनिवारणाय'** प्रोक्ता: मार्गा: बौद्धिका: एव भवन्ति। शरीरमाध्यमं खलु धर्मसाधनमित्यधिकृत्य उक्तं यथार्थं योगदर्शनेनैव भवति यतो हि शरीरसंसाधनानि यानि वर्तन्ते, तेषां सम्पूर्णतया उपयोग: योगशास्त्रेण अभिलक्षितमस्ति। परन्तु योगशास्त्रे बुद्धे: साकं शरीरस्याप्युपयोगेन दु:खनिवारणोपाया: प्रोक्ता:। एते उपाया: बौद्धिका: शारीरकाश्च भवन्ति। बौद्धिकोपाया: नाम केवलबुद्धे: साहाय्येन क्रियमाणानि कार्याणि। यथा ज्ञानयोगभक्तियोगमन्त्रयोगादय:। शारीरिकोपाया: नाम बुद्धे: साहाय्येन शरीरस्यापि नियोजनम्। यथा राजयोगकर्मयोगाष्टाङ्गयोगादय:। एवमेताभ्याम् उभाभ्यां सम्पाद्यमानं प्रयोजनन्तु एकमेव भवतितापत्रयान्मुक्ति:।

बौद्धिकं तथा शारीरिकदृष्ट्या योगे नैके योगप्रकारा: दृश्यन्ते। ते भवन्ति- भक्तियोग:, लययोग:, ज्ञानयोग:, कर्मयोग:, राजयोग:, मन्त्रयोग:, सिद्धयोग:, जपयोग:, कुण्डलिनीयोग:, महायोग:, सूरतशब्दयोग:, अस्पर्शयोग:, शिवयोग:, मृत्युञ्जययोग:, विश्वकल्याणयोग:, संसारयोग:, शरणागतियोग:, सम्पूर्णयोग:, कवरीयोग:, भृगुयोग:, तारकयोग:, पूर्णयोग:, त्याग: तथा लोकसेवायोग:, रासलीलायोग:, बुद्धियोग:, अनन्ययोग:, नामसङ्कीर्तनयोग:, व्यक्तियोग:, पतिव्रतायोग:, सत्यङ्गयोग:, अनाशक्तियोग:, त्रिविधयोग: इत्यादय:। एवम् एते सर्वेऽपि योगप्रकारा: ज्ञानयोग-भक्तियोग-कर्मयोग-राजयोग-मन्त्रयोगेष्वेवान्तर्भवन्ति।

श्रीमद्भगवद्गीतायां श्रीकृष्णेनोच्यते यत् -

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासात् ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।

ध्यानात्कर्मफलत्यागं त्यागात् शान्तिरनन्तरम्॥[iii]

न पद्मासनात् योग: न नासाग्रनिरीक्ष्यनात्। अर्थात् पद्मासनादि आसनेभ्य: प्राणायामैश्च योगो न भवति। योगसूत्रेषु योगस्य निर्वचनमेवं दत्तं वर्तते यत् **'योगश्चित्तवृत्तिनिरोध:'** इति अर्थात् चित्तवृत्तीनां निरोध: एव योग: भवति। बन्धकारणेभ्य: वृत्तिभ्य: चित्तस्य निरोधात् व्यक्तित्वविकास: भवति। वृत्तय: प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतय: इति पञ्च। सत्त्वरजस्तमोभ्य: गुणेभ्य: मानवस्य व्यवहारो भवति। अर्थात् ये शीघ्रकोपिन: भवन्ति। ते रजोगुणिन:, ये शान्तस्वाभाविन: भवन्ति, ते सत्त्वगुणिन: भवन्ति, ये मन्दा: अलसाश्च भवन्ति, ते तामसगुणिनश्च भवन्ति।

व्यक्तित्वविकास: नाम व्यक्ते: सम्पूर्णविकास: इत्युक्ते शारीरिकमानसिकाध्यात्मिक-सांस्कृतिकसामाजिकसांवेगिकविकासाश्च। व्यक्ते: सम्पूर्णविकास: तदा भवति यदा स: सात्त्विको भवति अर्थात् सत्त्वगुणस्याधिक्यं तदा भवति यदा रजस्तमोगुणौ ह्रासं प्राप्नुयाताम्। सत्त्वगुणस्य आधिक्याय रजस्तमाभ्याम् अभिभूताय योगे नैके प्रकारा: उक्ता: वर्तन्ते। योगप्रकाराणां विषये स्वामी अभेदानन्द: एवमभिप्रयति यत् -

"Swami Abhedananda Says That Self Knowledge Is Acquired Neither By Sense Perception Nor By Regarding Of The Shastras. But By Studying One's Own Nature and by Practicing Different Branches of Yoga."

वैविध्यस्य कारणानि- जगति यावन्तो जीवजन्तव: वर्तन्ते, तावन्तो व्यक्तित्वप्रभेदा: वर्तन्ते। अर्थात् तेषां सर्वेषां चिन्तनधारा एकत्र कदापि न भवितुमर्हति। वैलक्षण्यमवश्यं दृश्यते एव। तदेव तेषाम् अभिरुचय: अपि भिन्ना: भवन्ति इत्युक्ते यदि केचन भक्तिमार्गेण मोक्षायप्रयतन्ते। तर्हि इतरे कर्ममार्गेण। परन्तु य: कोऽपिमार्गो वा भवतु, तस्य फलन्तु मोक्षप्राप्तिरेव।

भक्तियोग:- यद्यपि राजयोग: सर्वोत्कृष्टो भवति तथापि सर्वे राजयोगमनुसर्तुं न शक्नुवन्ति। भक्ति: तादृश: मार्ग: भवति, सर्वे कर्तुं कारयितुं च शक्नुवन्ति। भक्तिमुद्दिश्य स्वामिरामकृष्णपरमहंसदेवेन एवमुच्यते यत् -"Man's emotion is the expression of a force within, Which in Perfection , Love is the Positive expression of the force. By purifying the innate of love with in man, his inner perfection may be realized."

भक्तियोगस्य वैशिष्ट्यम् - चतुर्विधपुरुषार्थेषु तुरीयपुरुषार्थाय भक्ते: आवश्यकता विद्यते, किमर्थमिति चेत् इयं भक्ति: भगवत्प्राप्ते: सुलभोपाय: भवति। शङ्कराचार्येणोच्यते यत् -

मोक्षसाधनसाम्ग्र्यंभक्तिरेवगरीयसी।

स्वस्वरूपानुसन्धानं भक्तिरित्यभिधीयते॥

ज्ञानयोग:- पूर्वोक्तरीत्या "तापत्रय"निवारणाय प्रोक्तेषु विविधमार्गेषु ज्ञानयोग: अन्यतम:। भगवद्गीतायां चतुर्थे अध्याये ज्ञानयोगस्योल्लेख: कृत: दृश्यते। तद्यथा-

लोकेऽस्मिन् द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्तामयानघ।

ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम्॥[iv]

"संसारस्य हेतु: अविद्या इति प्रायश: सर्वेषामपि वेदान्तिनामभिप्राय:। तस्य हेतुर्विद्या" इति कथयन् पतञ्जलिरपि सिद्धान्तममुम् अङ्गीचकार। ब्राह्मीस्थिते: प्राप्तिरेव ज्ञानयोगस्य लक्ष्यं भवति। ब्राह्मीस्थितिप्राप्ते: साधना द्विविधा भवति। यथा -

1.बहिरङ्गसाधना, 2.अन्तरङ्गसाधना

अस्यां साधनायां चत्वार: प्रभेदा: दृश्यन्ते। यच्च साधनचतुष्टयमिति अभिधीयते।

क.नित्यानित्यवस्तुविवेक: ख.वैराग्यम्

ग.शमादय: घ.मुमुक्षुत्वञ्च

राजयोग: (अष्टाङ्गयोग:)-चित्तवृत्तिनिरोधाय उपयुज्यमानेषु बहुषु योगप्रकारेषु राजयोग: अन्यतम:। अस्यैव **अष्टाङ्गयोग: इ**त्यपि च व्यवहारो वर्तते।

मन्त्रयोग: (जपयोग:)-छात्राणां स्मरणशक्ते: विकासे मन्त्रयोगस्यावश्यकता अस्ति। योगप्रकारेषु मन्त्रयोगस्यापि विशिष्टं स्थानं वर्तते। अस्यैव जपयोगमित्यपि च व्यवहारो वर्तते। मन्त्रजपेन मनसि स्थरिं भवति अर्थात् स्मरणशक्ति: वर्धिता भवति। मन्त्रजपेन क्रियमाणा साधना एव मन्त्रयोगे भवति। यदा मन्त्रोच्चारणे परिपूर्णत्वमागच्छति तदैव स्मरणशक्ते: विकास: भवति तदैव साधक: सिद्धिं प्राप्नोति। योगसूत्रेषु अपि पतञ्जलि: मनस्सिद्धिमङ्गीचकार। तद्यथा-

जन्मोषदि मन्त्रतप: समाधिजा सिद्धय:।

स्वाध्यायादिष्टदेवतासम्प्रयोग:।

तस्य वाचक: प्रवण:।

तज्जप तर्दभावनम्॥इति।

मननात् त्रायतेति मन्त्र: अर्थात् केवलोच्चारणेनैव अस्मान् रक्षति। मन्त्रो नाम संस्कृते केषाञ्चन अक्षराणां समाहारैव। यदा गायत्रीमन्त्रोच्चारणे उत्पन्ना: तरङ्गा: अस्माकं मस्तिष्के क्रोधादिभावान् नियन्त्रयन्ति तद्वदेव इतरेषु विषयेष्वपि। मन्त्रोच्चारणे एकाग्रताया: तर्कशक्तेश्च वृद्धिर्भवति। अर्थात् स्मरणशक्ते: विकास: भवति।

मन्त्रजपाय नियमा:

१. मन्त्रजप: स्वरानुगुणं स्यात्।

२. पुस्तकं विनैव गुरुमुखात् मन्त्रदीक्षा स्वीकरणीया।

३. मन्त्राणां परिवर्तनं न करणीयम्।

४. केषां मन्त्राणाम् एकवारानुवर्तनेन फलं न सिद्धति।

५. मालादीनामपि उपयोग: न भवति, यतो हि मन एव मुख्यं भवति।

६. गुरुमुखादेव मन्त्रोपदेशं प्राप्य अभ्यास: करणीय:।

मन्त्रयोगस्य जपविधि:- गुरुमुखात् मन्त्रदीक्षां प्राप्यशुचीभूत्वानद्या: तटे वा मन्दिरे वा एकान्तप्रदेशे स्थित्वा स्थरिचित्तेन जपं कुर्यात्। नोचेत् गृहे एव मन्त्रजपाय उपयुक्तं स्थानं चिनुयात्। इष्टदेवं मनसि वा पुरत:वा संस्थाप्य निश्चिते समये जप: कर्तव्य: भवति। निर्दिष्टस्थानेनिर्दिष्टसमये जपं करोति चेत् अवश्यमेव स्मरणशक्ते: विकास: भवति। जपे अनेके भेदा: वर्तन्ते। ते भवन्ति- नित्यजप:, अचलजप:, चलजप:, वाचिकजप:, उपांशुजप:, अखण्डजप:, मानसजप:, प्रदक्षिणा, जप: इत्यादय:।

व्यक्तित्वविकासे मन्त्रयोग:- सुलभमार्ग: भवति। यदा जपे तीव्रता भवति तदैव साधके एकाग्रता आगच्छति। अनन्तरकाले इष्टदेवं विना अन्या कापि वृत्ति: मनसि न आगच्छति। सर्वदा इष्टदेव विषयकचिन्तनम् एव मनसि भवति। मन्त्रयोगसंहितायां प्रतिपादितं यत् -

प्रधानो मन्त्रयोग: आसने द्वे हितप्रदे।

पद्मं च स्वस्तिकं चैव तथा तच्छुद्धिरुच्यते॥

कुण्डलिनीयोग:- व्यक्तित्वविकासे कुण्डलिनीयोगस्य दानम् अनस्वीकार्यम्। कुण्डलिनीयोगस्य प्रशस्ति: तन्त्रशास्त्रे दृश्यते। **"कुण्डले अस्या: अस्ति इतिकुण्डलिनी"।** हठयोगो प्रतिपादितेभ्य: आसनप्राणायामक्रियाबन्धमुद्राभ्य: कुण्डलिनी जागरिता भवति। अस्माकं शरीरे 32000 नाड्य: वर्तन्ते इति आयुर्वेदे प्रतिपादितं यत् -

द्वासप्तति: सहस्राणां नाडीनां मलशोधने।

कुत: प्रक्षालनोपाय: कुण्डल्यभ्यासनाधृते॥[v]

एतासु द्वासप्ततिषु नाडीषु सुषुम्ना, पिङ्गला, सरस्वती, कुहू, यशस्वीनि, वारुणी, गान्धारी, शङ्खनी, पुषा, विश्वदरी, जिह्वा, आलम्वुषा, हंसिनी, इडा इति चर्तुदशनाड्य: मुख्या: भवन्ति। एतासु पुन: इडा, पिङ्गला, सुषुम्ना इति तिस्र: नाड्य: प्रसिद्धा: भवन्ति। इडापिङ्गलयो: मध्ये सुषुम्ना नाडी भवति। सा सुषुम्ना बालरण्डा (widow)इवास्ति। किमर्थमिति चेत् तस्या: पति: कैलासशिखरे सहस्रारे दूरे तिष्ठति। एवं स्थिता कुण्डलिनी स्वपतिं शिवं मेलितुमिच्छति अर्थात् सा मूलाधारात् स्वाधिष्ठानं गन्तुमिच्छति।

अत: साधक: आसनप्राणायामक्रयिाजपमुद्राभ्य: तानि सर्वाणि चक्राणि भित्वा कुण्डलिनी सहस्रारे प्रेषयितुं प्रयतते। एतदेव शक्तिचालनं भवति। एवं चालिताशक्ति: अधिकं समयं सहस्रारे न तिष्ठति पुन: मूलाधारे आपतत्येव। एवं साधक: कुण्डलिनी-नामकिया कुञ्चिकया मोक्षद्वारम् उद्घाटयितुं शक्नोति। तदेव अभिज्ञैरुच्यते यत् –

कुण्डलिनी कुटिलाकारा सर्पवत् परिकीर्तिता।

सा शक्ति चालिता येन स मुक्तो नात्र संशय:॥

निष्कर्ष:- योग न आधुनिक:। अस्य प्रामुख्यं प्राचीनकाले आसीत् अधुना वर्तते आगीमिकाले भविष्यति च। आत्मपरमात्मनो: मेलनं तथा मुक्ते: प्राप्तिरेव प्राचीनकाले योगस्योद्देश्यमासीत्। सम्प्रति सर्वे चिन्तयन्ति यत् योगो नाम एको व्यायामप्रकार: येन स्थूलत्वादयो नश्यन्तीति। एतत् सत्यमेव भवति यत् योगात् स्थूलत्वादय: नश्यन्तीति परन्तु एतत् युक्तं नास्ति यत् व्यायामादिषु यागस्य गणनम्।प्रतिदिनं योगाभ्यासेन मानसिकशक्तीनां सुसन्तुलनं, विकासश्च भवत:। योग: मानसिकशक्तीनां संशोधनात्मकं, अनुशासनात्मकञ्च साधनं भवति। स्वस्थे शरीरे स्वस्थं मन: निवसति इति कथनानुसारं शरीरिकमानसिकभयं स्वास्थ्यमेव सुस्वास्थ्यं भवति। सम्प्रति सर्वत्र महामारी करोनानाम विषाणु: पीडयन् अस्ति। एवमेव प्रदूषणसमस्या:, आर्थिकसमस्या:, पारिवारिकसमस्या इत्यादिभि: समस्याभि: जना: रुग्ना:, उद्वेगग्रस्ताश्च भवन्ति। योगं विना वयं स्वस्थ:, उद्वेगविमुक्त:, सानन्दश्च भवितुं न शक्नुम:। अत अस्माभि: नूनं योग: करणीय:। अधुना अखिलविश्वेनापि जूनमासस्य[1] दिनाङ्के योगदिवस: आयोज्यते। समस्तदेशा: सम्प्रति योगस्य महत्त्वमाङ्गीकुर्वन्ति। जयतु योग:, जयतु भारतम्,जयतु विश्वम्।

सन्दर्भग्रन्थसूची

1. श्रीवास्तव, सुरेशचन्द्र. (2008). पातञ्जलयोगदर्शनम्. वाराणसी. सुरभारतीप्रकासन।
2. शर्मा, आचार्यश्रीनिवास. (2010). घरेण्डसंहिता. दिल्ली. चौखाम्वा विद्याभवन।
3. Mahatani, Renu. (2016.) Power Pranayama (Hindi). JaicoPublishers.
4. टिलक, राजीवजैन. (2013). सम्पूर्ण योग विद्या. मञ्जुल प्राकाशन।
5. यागानन्द, परमहंस. (2014). योगी कथामृत. योगदा सत्सङ्ग सोसाइटि अफ इन्डिया।
6. वर्णवाल, सुरेश. डा. पाण्ड्या, प्रणव. (2010). योग और मानसिक स्वास्थ. दिल्ली. सारदा प्राकाशन।

[i].श्रीमद्भगवद्गीता. 6.46

[ii].सुश्रुतसंहिता. 15.10

[iii].श्रीमद्भगवद्गीता. 12.12

[iv].श्रीमद्भगवद्गीता.3.3

[v].आयुर्वेद:

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 5
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

त्यागपत्र उपन्यास की शिल्पगत समीक्षा

सतीश कुमार
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, ए0पी0एस0 विश्वविद्यालय रीवा, म0प्र0

Article Info
Publication Issue :
September-October-2023
Volume 6, Issue 5
Page Number : 12-15
Article History
Received : 01 Sep 2023
Published : 11 Sep 2023

शोधसारांश – उपन्यास कला की दृष्टि से त्यागपत्र जैनेन्द्र कुमार का एक सशक्त प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण उपन्यास है वस्तुतः त्यागपत्र अपने जीवन–दर्शन के कारण हिंदी साहित्य मे नवीन कीर्तिमान स्थापित करने मे समर्थ रहा है समीक्षकों की दृष्टि मे यह उपन्यास हिंदी साहित्य को नवीन विचारधारा की ओर उन्मुख कराता है ।

मुख्यशब्द– त्यागपत्र, उपन्यास, शिल्पगत, कला, जैनेन्द्र कुमार।

जैनेन्द्र कृत 'त्यागपत्र' उपन्यास हिंदी के मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों की कोटि मे एक प्रकाश–स्तंभ है । क्योंकि सन् 1937 ई0 में प्रकाशित हुए इस उपन्यास ने उस काल मे विशेष प्रसिद्धि प्राप्त मुंशी प्रेमचंद्र के सामाजिक उपन्यासों के प्रवाह को नूतन मोड दिया था। हालांकि जैनेन्द्र ने समाज के स्थान पर व्यक्ति को या कहिए समष्टि के स्थान पर त्यष्टि को महत्व प्रदान किया इस व्यक्ति में से भी जैनेन्द्र का झुकाव नारियों की ओर रहा है और उनके प्रायः सभी उपन्यास नारी प्रधान ही है। इन नारियों को भी उन्होने ऐसी पृष्ठभूमि मे प्रस्तुत किया है उसके जीवन मे ऐसे उतार–चढ़ाव किए है कि इन नारियों के चरित्र एक अबूझ पहेली जैसे बन गए है।

त्यागपत्र उपन्यास की कथावस्तु और उसका विकास पूर्वदीप्ति (फ्लैशबैक) शैली के माध्यम से किया गया है इसका प्रमुख पात्र प्रमोद या जज एम. दयाल अपने पद से इस्तीफा देते हुए उन कारणों का पुनरावलोकन करता है जिसके कारण उसे अपनी बुआ के नारकीय जीवन पर पश्चाताप होता है और वह तदर्थ स्वयं को भी अपराधी सा मानते हुए अपने पद से त्यागपत्र दे देता है। कथा का विकास प्रमोद इवारा अपने जीवन की घटनाओं के पुनरावलोकन के माध्यम से कराया गया है चूंकि प्रमोद और मृणाल का बाल्यकाल परस्पर संबंधित रहा था तथा बाद मे वह जब तब मृणाल से मिलता रहता था अतः मृणाल के जीवन पर भी इन मुलाकातों मे शांत हुई बातों को प्रकाश मे डाला गया है।

मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास मे सामान्यतः पात्रो की संख्या कम ही होनी चाहिए क्योंकि तभी उपन्यासकार उनका चरित्र चित्रण करने का अधिक अवसर प्राप्त कर पाता है इस दृष्टि से जैनेन्द्र ने

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

'त्यागपत्र' उपन्यास मे मात्र दो ही पात्रो को प्रमुखता देकर उचित कदम उठाया इन दोनों पात्रो–मृणाल और प्रमोद मे से भी उपन्यासकार ने प्रमोद का विस्तृत चित्रांकन नही किया है – वह भी मूलतः मृणाल के चरित्र के विभिन्न पक्षों के उद्घाटन का माध्यम मात्र है अतः समीक्षा की दृष्टि से कहा जा सकता है कि यह उपन्यास नायिका प्रधान है। हाँ मृणाल का चित्रोकन उपन्यासकार ने इस रूप में किया है कि सहज रूप मे पाठको के गले नही उतर पाता है उदाहरण के लिए सामान्य नारी कदाचित यह कदम नही उठाती कि वह अपने पति को अपने विगत काल के प्रेम संबध के बारे में बताए उसके इस आचरण को तो उसके भोलेपन और सत्य–प्रेम का प्रतीक स्वीकार किया जा सकता है किंतु मृणाल द्वारा कोयले वाले के साथ रहना और यह जानते हुए भी कि यह व्यक्ति मुझको छोड़कर चला जाएगा उसको सर्वस्य समर्पित करते रहना समुचित प्रतीत नही होता। इसी प्रकार उसका वेश्याओ, चोरों जेबकतरों आदि की बस्ती में रहना और इस तथ्य पर बल देना कि सच्ची मनुष्यता यहाँ ही है–यहाँ सभ्य जगत् जैसा मिथ्याडंबर नही है– आंत्यतिक रूप में ठीक होते हुए भी कोई अनुकरणीय प्रेरणा प्रदान नही कर पाता। यहाँ पर पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी का कथन उचित प्रतीत होता है कि– ''जैनेन्द्र की मृणाल पहेली बन गई है क्योंकि उन्होने उसके अंतर्गत के भाव सौन्दर्य को परिस्फुट नही किया। प्रेम की वह क्या गरिमा थी, जिससे उसने कलंक, निंदा और दुःख–तीनो को चुपचाप सहन कर लिया है''।

वहीं इस उपन्यास में बाह्य वातावरण की अपेक्षा आंतरिक वातावरण की नियोजना पर अधिक बल दिया गया है। आंतरिक वातावरण आज के देश काल के अनुसार या युगानुरूप है। आज व्यक्तिवादी समाज है और आज समाज की ईकाई का महत्व ही सर्वोपरि है अतः व्यक्ति की अपनी विचार–परिधि की आज के संदर्भ मे इतनी विवृंत श्रृंखला है कि नाना विकार अनजाने ही झाँक उठते है। उदाहरण के तौर पर–मन मे एक गाँठ–सी पड़ती पाती थी। वह न खुलती है न धुलती थी बल्कि कुछ करो तो वह उलझती और कसती ही जाती थी जो कुछ होता था, जो कुछ होना चाहिए था कुछ करना चाहिए कही कुछ गड़बड़ है। कहीं क्यों सब गड़बड़–ही–गड़बड़ है। सृष्टि गलत है, समाज गलत है जीवन ही हमारा गलत है सारा चक्कर यह ऊंटपटांग है।

इसमें तर्क नही, संगति नही, कुछ नही है।

सैक्स प्रेम और साहचर्य आधुनिक युगों मे खूब पनप रहा है फिर यह कैसे संभव है कि स्वतंत्रयोत्तर काल के उपन्यासकारो ने इसका स्पर्श न किया हो? इसके संदर्भ मे जैनेन्द्र जी लिखते हैं कि– ''समग्र मे अहं चेतनाओं के पृथक होते ही उनमे पर के सानिध्य की चाह उत्पन्न हुई। इसी चाह के दो रूप हो गए। एक ने चाहा 'वह मुझमें' हो। वह अहम् स्त्रीत्व प्रधान हो गया। दूसरे ने चाहा 'मैं' उसमे हूँ। यह अहम् पुरूष–युक्त हुआ। इस प्रकार एक ही अहम् के दो रूप या अर्द्धनारीश्वर की पौराणिक कल्पना को लेकर वे चले है। अतः आलोचकों व समीक्षकों की दृष्टि मे त्यागपत्र उपन्यास कि देशकाल और वातावरण योजना की दृष्टि मे सफल रहा है।

कथोपकथन की दृष्टि से इस उपन्यास मे पात्रों का चरित्र उद्घाटन, कथा का विकास, कथानक की विलुप्त कड़ियों को जोड़ना सामान्य बोलचाल इत्यादि का प्रथम दृष्टि मे कथाकार ने स्वीकारा है।

अतः समीक्षा की दृष्टि मे संवाद योजना की रीति सफल रही है।

भाषा– शैली की दृष्टि से त्यागपत्र उपन्यास मे कहीं–कहीं अतीव सरल तथा कहीं अत्यधिक सांकेतिक और गूढ़ भाषा–शैली का प्रयोग किया गया है शब्दावली की दृष्टि से उन्होंने भावाभिव्यक्ति मे सहायक तत्सम्, तद्भव, देशज और विदेशी सभी प्रकार की शब्दावली का प्रयोग किया है style is the men himself उक्ति जैनेन्द्र की भाषा–शैली पर पूर्णतया चरितार्थ होती है क्योंकि उनके प्रायः सभी उपन्यासों और कहानियों मे एक ऐसी विशिष्ट प्रकार की भाषा– शैली का प्रयोग किया गया है कि उसे पढ़कर तुरंत इस बात का ज्ञान हो जाता है कि यह जैनेन्द्र की रचना है कुछ उदाहरण अवलोकनीय है–

क– तू अब उसे कभी याद मत 'करियो'।

ख– हम लोगों का असली घर 'पछांह' की ओर था।

ग– 'नाहक' किसी को क्यों तकलीफ दोगी

घ– शीला ऐसी हो गयी जैसे ऊद–बिलाव के आगे मुसी। (उपमा अलंकार युक्त भाषा)

ड़– कहीं–कहीं अग्रेंजी भाषा का भी प्रयोग कर लिया करते थे जैसे– I Have you what more do I want ?

अतः जैनेन्द्र भाषा के संबंध मे कहा जा सकता है कि आत्मीयता विश्वनीयता का समन्वय युक्त भावों का समाहार संक्षिप्तता और अपनत्व की प्रभविष्णुता वहां विशेष रूप से विद्यमान है। भाषा दार्शनिकता के कारण सजीव होते हुये भी लाक्षणिक व्यंजना से कुछ बोझिल अवश्य है। अतः समीक्षा की दृष्टि से कहें तो भाषा–शैली–सरल–सजीव होते हुए भी यंत्र–तंत्र दुरूहता लिए हुए है।

समीक्षा की दृष्टि मे उपन्यास की वर्ण्य–वस्तु और उसकी परिणति कुछ ऐसी उलझनमयी है कि स्पष्ट रूप से कुछ कही नही जा सकता कि रचनाकार का उद्देश्य क्या है?

इसके अतिरिक्त 'त्यागपत्र' मे जैनेन्द्र नियतिवादी भी यदि परिलक्षित होते है यही कारण है कि वे भाग्य मे विश्वास करते है बहुत कुछ जो इस दुनिया मे हो रहा है वह वैसा क्यों होता है अन्यथा क्यों नही होता – इसका क्या उत्तर है? उत्तर हो अथवा न हो पर जान पड़ता है भवितव्य ही होता है। नियति का लेख बंधा है। एक भी अक्षर उसका यहाँ से वहाँ न हो सकेगा। वह बदलता नही बदलेगा नही। पर विधि का वह अतर्क्य तर्क किस विधाता ने बनाया है उसका उसमे क्या प्रयोजन है यह भी कभी पूछकर जानने की इच्छा की जा सकती है या नही?

निष्कर्षतः उपन्यास कला की दृष्टि से त्यागपत्र जैनेन्द्र कुमार का एक सशक्त प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण उपन्यास है वस्तुतः त्यागपत्र अपने जीवन–दर्शन के कारण हिंदी साहित्य मे नवीन कीर्तिमान स्थापित करने मे समर्थ रहा है समीक्षकों की दृष्टि मे यह उपन्यास हिंदी साहित्य को नवीन विचारधारा की ओर उन्मुख कराता है ।

संदर्भ सूची–

1 त्यागपत्र 'उपन्यास' एक विवेचन– डॉ कृष्णदेव शर्मा
2 त्यागपत्र मे चित्रित स्त्री जीवन की समस्याएं लेख– कमलेश
3 जैनेन्द्र की रचनात्मक दुनिया मे स्त्री– प्रीति चौधरी
4 हिंदीकुंज
5 हिंदी उपन्यासों मे चित्रित स़्त्री विमर्श– जितेन्द्र कुमार

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 5
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा के केन्द्र के रूप में तक्षशिला विश्वविद्यालय

संतोष कुमार पाण्डेय
शोध छात्र (जे0आर0एफ0), तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)
सम्बद्ध : वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)

Article Info
Publication Issue :
September-October-2023
Volume 6, Issue 5
Page Number : 16-20
Article History
Received : 01 Sep 2023
Published : 20 Sep 2023

सारांश :–
प्राचीन भारतीय संस्कृति का स्वर्णिम पक्ष उसकी शिक्षण प्रणाली ही रही है। जिसके कारण भारतीय संस्कृति को जगत शिरोमणि की उपाधि से विभूषित किया गया। प्राचीन काल में भारत शिक्षा प्रणाली एक ऐसा प्रभावशाली तंत्र था जिसने तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा शैक्षणिक व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से चलाने के साथ–साथ उन्हें सकारात्मक गति भी प्रदान की। प्राचीन काल में भारतीय शिक्षण प्रणाली को स्थापित तथा विकसित करने में तक्षशिला विश्वविद्यालय की मुख्य भूमिका रही है। इस शोध पत्र में तक्षशिला विवविद्यालय की शिक्षण प्रणाली का वर्णन किया गया है। प्राचीन काल में तक्षशिला विश्वविद्यालय न सिर्फ भारत बल्कि विदेशों में भी उच्च शिक्षा के केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध था।[1] कई प्रसिद्ध आचार्य यहाँ पर निवास करते थे, जिनके ज्ञान, प्रसिद्धि से आकर्षित होकर दूर–दूर से छात्र शिक्षा ग्रहण करने यहाँ पर आते थे।[2] यह विश्वविद्यालय त्रयी (तीनों वेद), दण्डनीति, वार्ता, दर्शनशास्त्र, शिल्पकला, आयुर्वेद, धनुर्विद्या जैसी विधाओं के अध्ययन–अध्यापन के लिए समस्त विश्व में प्रसिद्ध था।[3]

तक्षशिला, विश्वविद्यालय, प्राचीन भारत में महाभारत काल से ही शिक्षा का प्रधान केन्द्र था। इसी विश्वविद्यालय में धौम्य ऋषि के शिष्य उपमन्यु तथा उनके मित्र आरूणि ने भी शिक्षा प्राप्त की थी। ऐतरेय ब्राह्मण में गान्धार के एक शासक अग्निजीत का वर्णन मिलता है, जिसने 7वीं शताब्दी ई0 में यहाँ पर शासन किया।[4] शतपथ ब्राह्मण में अग्निजीत के साथ–साथ उनके पुत्र स्वर्जित का भी वर्णन मिलता है।[5] बौद्ध साहित्य में गान्धार के शासक के रूप में नग्रजीत का वर्णन मिलता है। विद्वानों का मानना है कि अग्निजीत, उनके पुत्र स्वर्जित तथा नग्रजीत ने यहीं पर रहकर अध्ययन कार्य पूर्ण किया।[6] यहाँ पर पांचाल, राजगृह काशी, अवन्ति, मिथिला से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे।[7] अष्टाध्यायी के लेखक तथा प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य पाणिनी ने यहीं से शिक्षा प्राप्त की। बिम्बिसार के राजवैद्य जीवक जो कि एक प्रसिद्ध चिकित्सक थे, ने यहीं पर रहकर 7 वर्ष तक अध्ययन किया।[8] कोशल नरेश प्रसेनजित, आचार्य चाणक्य, लिच्छवि महामलि, मल्ल सरदार बन्धुल, पंचतंत्र के लेखक विष्णु शर्मा ने यहीं पर रहकर शिक्षा–दीक्षा पूर्ण की।[9] अधिकांश विद्वानों का मानना है कि तक्षशिला में पृथक–पृथक तथा

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

छोटे–छोटे गुरुकुल भी थे जो यहीं के आचार्य द्वारा नियन्त्रित व संचालित होते थे, कुछ गुरुकुल में विद्यार्थियों की संख्या 500 तक हो जाया करती थी।[10] ए0एस0 अल्टेकर महोदय ने जातकों में वर्णित इस संख्या को अतिशयोक्ति बताया है। इनके अनुसार एक शिक्षक के अधीन 20 से अधिक छात्र नहीं रहते थे।[11] चूंकि तक्षशिला विश्वविद्यालय तथा यहाँ के आचार्य अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुके थे, अतः एक ख्याति प्राप्ति विशेषज्ञ आचार्य के अधीन मात्र 20 छात्र ही देश तथा विदेश से पढ़ने आते थे, ये बात तर्कसंगत प्रतीत नहीं होती। अतः यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ के शिक्षकों के अधीन 500 या उसके आस–पास विद्यार्थी अध्ययन करते थे।[12] इन गुरुकुलों में विविध प्रकार के विषय पढ़ाए जाते थे। यदि इन गुरूकुलों को महाविद्यालय कहा जाए तो गलत नहीं होगा। जातक ग्रन्थों से जानकारी प्राप्त होती है कि ईसा की प्रथम दो शताब्दियों में यह विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के केन्द्र के रूप में विख्यात था। यहाँ पर धनी तथा निर्धन दोनों प्रकार के विद्यार्थी समान रूप से शिक्षा ग्रहण करते थे। धनी विद्यार्थी शुल्क देते थे जबकि निर्धन छात्र निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करते थे। इस विश्वविद्यालय के द्वार जन–सामान्य तथा शासक वर्ग दोनों के लिए खुले थे।[13]

जातक ग्रन्थों में ब्रह्मदत्त नामक एक राजकुमार का उल्लेख है जो कि बनारस के राजा का पुत्र था, जिसने 16 वर्ष की आयु में एक जोड़ी चप्पल तथा पत्तों का बना हुआ छाता तथा 100 मुद्रा लेकर तक्षशिला में शिक्षा के लिए प्रवेश किया तथा शिक्षण कार्य पूर्ण किया।[14] अपोलोनियस के मतानुसार यहाँ पर शिक्षा प्राप्त करने के लिए यूनान तक के विद्यार्थी आते थे। इनको हस्तिविद्या, धनुर्विद्या, पशुओं की बोली की शिक्षा दी जाती थी।[15] मिलिन्दपन्हों में नागसेन नामक एक ब्राह्मण की शिक्षा प्राप्त करने का वर्णन है, जिससे पता चलता है कि तत्कालीन भारत में हिन्दू और बौद्ध धर्म दोनों की समान प्रकार से शिक्षा दी जाती थी।[16] एक अनुमान के अनुसार लगभग 1000 वर्षों तक इस विश्वविद्यालय की प्रसिद्धि देश तथा विदेशों में फैली रही। यहाँ न सिर्फ भारत के विविध स्थानों से बल्कि विदेशों से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आया करते थे। यहाँ पर वाराणसी, उज्जयिनी, राजगृह, पाटलिपुत्र, चम्पा तथा मिथिला के विद्यार्थी अध्ययन के लिए आते रहते थे।[17] 7वीं शताब्दी ई0 पूर्व में ही तक्षशिला उच्च शिक्षा के केन्द्र के रूप में विकसित हो चुका था।[18] उत्तरवैदिक काल में तक्षशिला नगर के रूप में स्थापित हो चुका था।[19] ई0 पूर्व छठी शताब्दी में बौद्ध धर्म की उत्पत्ति के बाद तक्षशिला की प्रसिद्धि में और वृद्धि हुई। यहीं पर प्रथम बार यूनानी और भारतीय दार्शनिक सम्पर्क में आए।[20] जातक ग्रन्थों से जानकारी मिलती है कि इस समय बनारस भी शिक्षा का प्रसिद्ध केन्द्र था। यहाँ अपर अनेक ऐसे अध्यापक भी थे जिन्होंने तक्षशिला में शिक्षा प्राप्त की थी।[21] यहाँ से शिक्षा प्राप्त करने वाले का देश तथा विदेश में बड़ा सम्मान किया जाता था।[22] यहाँ पर शिक्षा संस्कृत भाषा में दी जाती थी।[23] यहाँ पर मुख्य रूप से उच्च शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा का आधार परिवार प्रणाली था।[24] यहाँ पर शिक्षा का मुख्य लक्ष्य स्वांतः सुखाय था न कि किसी प्रकार की उपाधि प्राप्त करना था।[25] बौद्ध साहित्य (तेलपत जातक एवं सेतकेतु जातक) के अनुसार यहाँ पर विश्वप्रसिद्ध आचार्य निवास करते थे तथा यहाँ पर उच्च शिक्षा प्रदान की जाती थी। लगभग 16 वर्ष की आयु में विद्यार्थी को प्रवेश मिल जाता था और वे यहाँ रहकर 6 से 8 वर्ष तक अध्ययन करते थे। यहाँ पर सादा जीवन, उच्च विचार, उत्तम आचरण पर विशेष ध्यान दिया जाता था। जातक ग्रन्थों के समय यह विश्वविद्यालय अत्यन्त समृद्ध हो चुका था। इस समय तक यहाँ हिन्दू, बौद्ध धर्म से सम्बन्धित शिक्षा मिलने लगी थी। अफगानिस्तान, फ्रांस, सीरिया, यूनान तक इसकी ख्याति फैल चुकी थी। इस समय तक यह भारत की बौद्धिक राजधानी बन चुका था।[26] भारत की राष्ट्रीय लिपि ब्राह्मी यहीं से निकली तथा यहाँ के पाठ्यक्रम के 18 शिल्पों में यूनानी कला भी शामिल हुई।[27]

भौगोलिक दृष्टि से तक्षशिला उत्तरी–पश्चिमी सीमा पर स्थित था, यह झेलम, सिन्धु नदी तथा मरगला–हजारा पहाड़ी से घिरा हुआ सुरक्षित नगर था।[28] राजनीतिक व्यापारिक दृष्टि से यह विशेष महत्व का था। यहाँ पर तीन व्यापारिक मार्ग मिलते थे। इसकी भौगोलिक स्थिति, राजनीतिक तथा व्यापारिक स्थल इसे महत्वपूर्ण नगर के रूप में विकसित करने में प्रमुख भूमिका निभाई।[29] प्लिनी, प्लूटार्क, स्ट्रेबो तथा ह्वेनसांग जैसे विद्वानों ने इस नगर की प्रसिद्धि का वर्णन किया। सीमान्त प्रदेश होने के कारण अध्ययन–अध्यापन की दृष्टि से विदेशी विद्यार्थियों को भारत आने के लिए आकर्षित किया। ये विद्यार्थी अध्ययन–अध्यापन पूर्ण करने के बाद, जब पुनः अपने देश वापस लौटते तो तक्षशिला की प्रशंसा अन्य लोगों से करते। इस प्रकार अन्य लोग भी भारत आने को लालायित रहते। ए0एस0 अल्टेकर महोदय के अनुसार तक्षशिला से प्राप्त खण्डहरों से ऐसा अनुमान लगता है कि यवन, शक, कुषाण काल में पुरानी बस्तियाँ नष्ट हुई तथा नवीन बस्तियाँ स्थापित हुई। इस राजनीतिक उतार–चढ़ाव के परिणामस्वरूप नगर की समृद्धि नष्ट हुई होंगी। जिसका परिणाम यहाँ की शिक्षा–व्यवस्था पर निश्चित तौर पर पड़ा होगा। प्रायः सभी आक्रमणकारी शासकों ने तक्षशिला को अपनी प्रान्तीय राजधानी बनाई जिसके कारण यहाँ की समृद्धि शीघ्र ही स्थापित हो जाया करती थी।[30] खण्डहरों की खुदाई से ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि यह नगर कई बार बसा तथा कई बार उजड़ा भी परन्तु हर बार ये अपने–आपको पुनः स्थापित कर पाने, अपनी समृद्धि तथा शिक्षा व्यवस्था की नई ज्योति जगा पाने में सफल रहा।[31] इस नगर की समृद्धि की जड़ें इतनी गहरी थी कि लगातार विघटन के बाद भी ये नष्ट नहीं हुए यद्यपि इनमें कुछ परिवर्तन अवश्य हुए परन्तु अन्ततोगत्वा ये अपने आपको बनाए रखने में सफल रहे। छठी शताब्दी ई0 पूर्व यहाँ पर पार्सियनों का अधिपत्य बना रहा।[32] 327 ई0 पूर्व सिकन्दर ने भारत विजय की आकांक्षा से हिन्दुकुश पार करके निकाई नगर पहुँचा यहाँ पर तक्षशिला के तत्कालीन शासक आम्भी ने उसे बहुमूल्य उपहार दिया और भारत आने का निमन्त्रण दिया। 326 ई0 पूर्व में सिकन्दर तक्षशिला पहुँचा इस प्रकार तक्षशिला पर यूनानियों का प्रभाव स्थापित हुआ। द्वितीय शताब्दी ई0 पूर्व यहाँ पर इण्डो बैक्ट्रियनों का शासन रहा। कालान्तर में यहाँ पर मौर्य, शक, कुषाण शासकों का भी शासन, स्थापित हुआ।[33] लगातार विदेशी शासन के बाद भी यहाँ पर प्रजा तथा राजा के बीच सहयोग बना रहा। नवीन संस्कृति एवं विचारों ने यहाँ कि शिक्षा प्रणाली को समृद्ध ही किया। तीसरी शताब्दी तक तक्षशिला शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका था। वकाटक जातियों के आगमन के साथ ही इसका पतन प्रारम्भ हुआ। 7वीं शताब्दी में भारत आने वाला चीनी यात्री ह्वेनसांग ने तक्षशिला का कोई वर्णन नहीं किया।[34] संभवतः हूण आक्रमणकारियों ने 5वीं शताब्दी में इस गौरवशाली ज्ञान के केन्द्र को सदैव के लिए नष्ट कर दिया।[35]

निष्कर्ष :–

इस प्रकार कहा जा सकता है कि तक्षशिला विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के केन्द्र के रूप में वर्तमान विश्वविद्यालय के अत्यधिक निकट था। जिस प्रकार वर्तमान में उच्च शिक्षा के अन्तर्गत किसी विशिष्ट विषय के विशेषज्ञ अध्यापक द्वारा विद्यार्थी को शिक्षा देकर उसे ज्ञानवान बनाए जाने का प्रावधान है ठीक उसी प्रकार तक्षशिला में विविध विषयों के अध्ययन की समुचित व्यवस्था थी। इस विश्वविद्यालय का कुशल संचालन यही के आचार्यों द्वारा ही किया जाता था। तक्षशिला न सिर्फ भारत बल्कि सुदूर विदेशों में भी उच्च शिक्षा के केन्द्र के रूप में विख्यात हो चुका था, यहाँ पर कई विश्वविद्यालय के विद्वान आचार्य एक स्थान पर निवास करते तथा शिक्षा भी प्रदान करते थे जिनके ज्ञान, यश–कीर्ति को सुनकर दूर–दूर से विद्यार्थी शिक्षा के प्रयोजन से आते थे। यहाँ के पाठ्यक्रम में त्रयी (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद) हस्तिविद्या, धनुर्विद्या, आयुर्वेद, दर्शनशास्त्र, व्याकरण, सर्पविद्या, तंत्रशास्त्र, गणित, ज्योतिष, नृत्य संगीत, चित्रकला, वार्ता (कृषि, पशुपालन, व्यापार–वाणिज्य),

शस्त्र संचालन की शिक्षा को शामिल किया गया था।[36] किसी विद्यार्थी की शिक्षा–दीक्षा तब तक पूर्ण नहीं समझी जाती थी, जब तक वह तक्षशिला में रहकर यहाँ के विद्वान आचार्यों से ज्ञान प्राप्त कर पारंगत न बन जाए। तक्षशिला की प्रशंसा करते हुए आचार्य दीपांकर ने उचित ही लिखा है कि– ''तक्षशिला विश्वविद्यालय ऐसा प्रकाश स्तम्भ था जिसने पूरे भारत के साथ–साथ दक्षिण–पूर्वी, पश्चिमी एशिया तथा यूरोप को अपने ज्ञान रूपी प्रकाश पुंज से प्रकाशित किया।''[37]

संदर्भ सूची

1. प्रसाद, भुवनेश्वर, भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृ0 135
2. पाण्डेय, डॉ0 रामशक्ल, प्राचीन भारत के शिक्षा मनीषी, पृ0 94
3. वशिष्ठ, देवेन्द्र कुमार, भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृ0 54
4. ऐतरेय ब्राह्मण 7/34
5. शतपथ ब्राह्मण, 8/4/10
6. पाण्डेय, डॉ0 रामशक्ल, प्राचीन भारत में शिक्षा मनीषी, पृ0 95
7. वही, पृ0 94–95
8. अल्टेकर, डॉ0 ए0एस0, प्राचीन भारत में शिक्षा पद्धति, पृ0 85
9. तोमर लज्जाराम, प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, पृ0 109
10. जातक : फॉसवॉल प्रथम, पृ0 सं0 239, 317, 402, तृतीय संस्करण, पृ0 18, 235
11. अल्टेकर, डॉ0 ए0एस0, प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, पृ0 81–109
12. तोमर, लज्जाराम, प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, पृ0 110
13. जैन, डॉ0 हुकुमचन्द्र, ऐतिहासिक स्थल, पृ0 103
14. मुखर्जी, डॉ0 आर0के0, Education in Ancient India Page No. 477-78 जातक सं0 252
15. हत्थिसुत 2, 47, जातक, 2, 200, 3, 415, 3, 219
16. भुवनेश्वर प्रसाद, प्राचीन भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृ0 133
17. मिश्र, जयशंकर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ0 563
18. तोमर, लज्जाराम, प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, पृ0 108, दीपांकर, आचार्य, कौटिल्यकालीन भारत पृ0 43
19. मिश्र, जयशंकर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ0 563
20. वही, पृ0 564
21. ओम प्रकाश, प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, पृ0 344, जातक 5, 130, 185
22. आचार्य, दीपांकर, कौटिल्य कालीन भारत, पृ0 43
23. कौशितिकी ब्राह्मण 7/6
24. गोयल, डॉ0 प्रीति प्रभा, भारतीय संस्कृति, पृ0 122
25. मिश्र, जयशंकर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ0 563
26. भुवनेश्वर प्रसाद, भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृ0 135

27. तोमर, लज्जाराम, प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, पृ0 109
28. कनिंघम, अलेक्जेण्डर, The Ancient Geog of India.
29. गुप्त नत्थूलाल, शिक्षा का सांस्कृतिक इतिहास, पृ0 123
30. अल्टेकर, डॉ0 ए0एस0 प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, पृ0 82
31. तोमर, लज्जाराम, प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, पृ0 109
32. डोंगर केरी, एस0आर0, The University Education in India, Page 2
33. मार्शल, सर जॉन, A Guide to Taxila, Page No. 3, 16-18
34. पाण्डेय, डॉ0 रामशक्ल, प्राचीन भारत के शिक्षा मनीषी, पृ0 94–95
35. जैन, डॉ0 हुकुमचन्द, ऐतिहासिक स्थल, पृ0 103
36. वशिष्ठ, देवेन्द्र कुमार, भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृ0 54
37. आचार्य, दीपांकर, कौटिल्य कालीन भारत, पृ0 43

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 5
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

Use of Literary Devices and Figure of Speech in An Innovative Way

Dr. Jyoti Thakur
Department of Comparative Languages and Culture, India

Article Info
Publication Issue :
September-October-2023
Volume 6, Issue 5
Page Number : 21-24
Article History
Received : 01 Sep 2023
Published : 29 Sep 2023

ABSTRACT- The English language is used widely over the world. It has a fascinating power to the readers. The figure of speech creates a very expressive image. Literary devices and figure of speech play important role in English teaching and literature. A writer uses it to provide a clear idea in the mind of the reader to make things simplify and in a very logical way. It is a work through language. Use of them makes one writer differ from the other. One can see beauty andenjoyment in the piece of literature. It makes a reader connect to the writer. It contains a deep meaning inside. The reader has to visualize his imagination.The richness of a writer lies in his/her use of literary techniques. It leads a depth in his writing. A student can understand it and interpret things in a more figurative than literal way. An innovative idea for students to see the things around them in their daily life.

Keywords: Figurative Languages, Figure of speech, Literary techniques

Introduction- The figure of speech and literary devices areused to express extraordinary things on the mind of the reader. It can simply be the mode of expression of the writer. A writer can express his clear idea through thefigure of speech and literary devices. It helps the readers to polish their imagination. And by using these in the piece of literature enhances the beauty of the work in itself. A writer has to use these devices in a very balanced way. The piece of art wholly depends on the use of the figure of speech in a very balance and apt way. We can make students understand how to identify the figure of speech so that they manage to learn things in a very figurative language. The figure of speech forms an integral part of our day to day life, of our conversation and writing also. It generates an interest in the mind of readers.

A figure of speech is a poetic device which consists of words and phrases in such a manner which make the meaning more pointed and clear and the language more vivid and graphic. Figures may be represented as images because things are represented in the form of one image or the other. If we only consider thefigure of speech as only the tool to ornaments the language. It won't be the complete justice with the word itself. Human language is filled with these figure of speech. The figures are used in a very natural way and in an

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

instinctive way to express the feelings of the individual. Poets and writers have always use the images to enhance the beauty of their work. Figures are used by poets to decorate their language for a better effect to the reader. So that the reader easily gets connected to thethoughts of thewriter. It leads a great aesthetic satisfaction to the readers. A writer can communicate to the reader through the effective use of figures in a very pictorial and vivid manner. Both terms figure of speech and literary devices are interchangeable.

There are some terms below which are many times creates confusion:

Figurative language: It is a type of literary techniques, it means theuse of the meaning of theword not literal but in figures. It is used by the writers when they want to say and express more than the literal meaning of the work. It can be define as the word or phrase used in literature that may be different than the literal definition.

Literary techniques: it can be defined as any deliberate choice of language used by an author. Like imagery, irony etc.

Literary devices: These are the specific structures that writers often use to add meaning or create more compelling stories for the reader. These techniques can give the reader a greater understanding and meaning of the writers' intent. Literary devices include literary elements such as setting, theme, plot, protagonist, antagonist, narrator, narrative mode, dialogue, motif, tone, and conflict. These specific structures used by the writers in their works to convey his or her messages in a simple manner to the readers.

The figure of speech: It is generally a mode of expression in which words are used out of their literary meaning or out of their ordinary use.

The most common and important figure of speech and literary devices are simile, metaphor, verbal irony, situational irony, dramatic irony, cosmic irony, sarcasm, apostrophe, allusion, double entendre, allegory, symbolism, alliteration, ambiguity, anaphora, assonance, caricature, colloquialism, connotation, consonance, denotation, doppelganger, onomatopoeia, stanza. For more simplification these can be divided into some category as contrast (antithesis, epigram, oxymoron, paradox, pun), on the basis of association (metonymy, symbol, synecdoche), on the basis of repetition (alliteration, anaphora, assonance, refrain), on the basis of overstatement (hyperbole, litotes), based on sound and music (cacophony, onomatopoeia), on the basis of construction (anticlimax, climax, pathos, colloquialism, transferred epithet) on the basis of moral and criticism (fable, parable, irony).

A short definition of following thefigure of speech and literary devices.

Simple: according to oxford dictionary simile is a word or phrase that compares something to something else, using the words like or as. Example- brave as a lion, cute as a kitten, as busy as bee, life is like a box of chocolates, you never know what you are going to get. Simile interprets the words literally. We find simple examples in our daily speech. Simile inputs vividness into what we say. Using simile directly attracts the reader or listeners attention and encouraging their imagination to comprehend what is being communicated. It also relates the feelings of a writer to their personal experiences. So it would be easier for the readers to understand the subject matter of the work.

Sarcasm: use of irony to mock or convey contempt

Apostrophe: it addresses to an absent or imaginary person.

Allusion: passing areference or indirect mention of something.

Double entendre: double meaning.
Irony: a device in which action stands in contrast to what appears to be true or expected.
Verbal irony: saying the oppositeof what is meant.
Situational irony: difference between what audience or reader expects to happen and what actually happens.
Dramatic irony: failure of a character to see or understand what is obvious to the audience.
Cosmic irony: when awriteruses god, destiny or fate to flash the hopes and expectations of a character or humankind in general.
Colloquialism: use of local, regional dialect expression. Example look blue- look sad, buzz off- go away, wanna- want to, gonna- going to.
Doppelganger: it stands for look-alike or double of a living person.
Onomatopoeic: it is defined as a word, which imitates the natural sounds of a thing.
Connotation: symbol hidden in the words or image. Example- a red rose is a symbol of love and passion.
Denotation: it is the translation of a symbol to its meaning. Example- a red rose is a red rose in theimage.
Allegory: a story, poem or picture which can be interpreted to reveal a hidden meaning, typical, a moral or political one.
Onomatopoeia: it is defined as a word, which imitates the natural sounds of a thing.
Anaphora: the repetition of a word or phrase at the beginning of each one of a sequence of sentences
Alliteration: it is arepetition of a speech sound in the sequence of nearby words. The term applied only to consonants.
Assonance: the repetition of identical or similar vowels especially in stressed syllables.
Consonance: the repetition of consonants sounds in words. Example- tic tac toe.
Personification: an inanimated object or animal is given human qualities. Example- lilies are dancing.
Metaphor: direct comparison of two unlike things without the use of like or as.
Hyperbole: An exaggeration that can be used for dramatic effect or to help paint a word picture. Example-i is dying of thirst.
Metonym: an object is designated by the name of something which is generally associated with it. Example- crown for aking.
Symbolism- use of symbols for a vivid imagination.
Invective- abusive language.

Conclusion: English literature is the body which comes to life when the soul that is afigure of speech is used in a balance and ornamental way. The English language loses its originality without these devices. And to understand them completely we have a look to our surrounding for the common figure of speech we are using in our day today conversation. The writer's feelings can easily be expressed by using these devices. with the right use of these devices, a writer can bring tears and smile at the same time to his readers because it directly touches our emotions. It provides us the opportunity to feel the language with all our senses.

References

1. Wren and Martin, Revised by N.D.V. Prasada Rao: High School English Grammar and Composition
2. Britannica Concise Encyclopedia
3. Baldick, Chris. The concise oxford dictionary of literary terms. Oxford university press
4. Abrams, m.h.,and Geoffrey galt Harpham. A handbook of literary terms.
5. Nezami, syedthe use of figures of speech as a literary device:a specific mode of expressionin English literature, ed.b.mallikarjun and sam Mohanlal,1930-2940: language in India. 12 vols. 2012. Print.

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 5
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

पूर्वी उत्तर प्रदेश की थारू जनजाति का सामाजिक–सांस्कृतिक पार्श्वचित्र

डॉ0 योगेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी
आचार्य एवं अध्यक्ष–समाजशास्त्र विभाग
का.सु.साकेत.स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Publication Issue :
September-October-2023
Volume 6, Issue 5
Page Number : 25-29
Article History
Received : 01 Sep 2023
Published : 29 Sep 2023

शोधसारांश– भारत विविध सभ्यता एवं संस्कृति का देश रहा है। भारत में निवास करने वाली सर्वाधिक जनजातियां मध्य प्रदेश में पायी जाती हैं। सम्पूर्ण भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 8.1 प्रतिशत अनुसूचित जनजातियां निवास करती हैं। इनका जीवन जहां कृषि एवं पशुपालन पर आधारित रहा, वहीं विकास एवं परिवर्तन के साथ थारू भी सभ्य समाज के साथ जुड़ते गये। आज यह जनजाति मात्र वनों पर आधारित जीवन पर निर्भर ना होकर सरकार द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों में प्रतिभाग कर अपना जीवन उचित रूप में निर्वहन करने की दिशा की ओर अग्रसर है। स्वतंत्र भारत में भारतीय संविधान के अनुच्छेद–342 के अन्तर्गत भारत के राष्ट्रपति द्वारा विनिर्दिष्ट किया गया, जिसे संविधान के प्रयोजनों के लिए राज्य या केन्द्र शासित प्रदेश के संबंध में अनुसूचित जनजातियां कहा या समझा जाय। थारू जनजाति के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विविधताएँ प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक अपनी विविधता को संजोये हैं।

मुख्य शब्द – जनजाति, संस्कृति, परिवेश, थारू, अधिकार, जीवन, जागरूकता, सर्वांगीण विकास, लोक संस्कृति।

भूमिका– उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र के पाँच जनपदों यथा महराजगंज, सिद्धार्थनगर, श्रावस्ती, बहराईच तथा लखीमपुर खीरी के साथ–साथ बलरामपुर जनपद के तुलसीपुर तहसील में निवास करने वाली थारू जनजाति **'किरात वंश'** से अपनी उत्पत्ति मानते हैं, जो कई अन्य उपजातियों में विभाजित हैं। सम्पूर्ण थारू क्षेत्र को **'थरूआर'** कहा जाता है।

थारू जनजाति राणा वंश से संबंधित है जिनके संबंध में कहा जाता है कि मुस्लिमों के अत्याचार से भयभीत होकर 12 राणा राजपूतानें से भागकर गोरखपुर क्षेत्र में बस गये। पहाड़ी महिलाओं से विवाह करके यह उत्तर प्रदेश की तराई क्षेत्र में फैल गये। जौहर व्रत की असहनीय पीड़ा से घबराकर कुछ राजपूत स्त्रियां अपने सेवकों के साथ जंगलो की ओर छिपते हुए भाग निकलीं, उन्हीं के साथ संबंध स्थापित किये, उनसे उत्पन्न संतान को ही थारू कहा जाता है।[1]

थारू अपने पड़ोसी समुदायों के लिए विशिष्ट वनवासी जाति, धर्म, संस्कृति, भाषा, गंवार लोक जीवन दर्शन का बोधक बना है। थारूओं की भाषा हिन्दी, भोजपुरी एवं नेपाली से प्रभावित है। इनके मकान लकड़ी, बांस एवं नरकुल के प्रयोग से बनाये जाते हैं, जो कि दक्षिण–पूर्व या उत्तर में होता है, किन्तु मुख्य द्वार हमेशा पूर्व की ओर ही होता है। पूजाघर एवं रसोईघर हमेशा उत्तरी छोर पर आखिरी में होता है। इनका मुख्य पेशा या व्यवसाय कृषि आधारित

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

होता है। कृषि से संबंधित अनेक पूजा–पाठ या टोटके भी किये जाते हैं। वस्तुओं के आदान–प्रदान से इनका जीवन सरल बनता है।[2]

1951 की जनगणना में सर्वप्रथम 214 जनजातियों को अनुसूचित जनजाति का दर्जा प्रदान किया गया था, किन्तु थारू जनजाति को इसमें सम्मिलित नहीं किया गया था। तत्पश्चात् 1967 में उत्तर प्रदेश के भोटिया, बोक्सा, जौनसारी और राजी के साथ भी थारू जनजाति को अनुसूचित जनजाति के रूप में सम्मिलित किया गया। वास्तव में थारू जनजाति प्रकृति के अनुरूप ही अपनी संस्कृति को बचाने में सफल रही। उनके आवास, भोजन, कपड़ा, धर्म, कला, अर्थव्यवस्था और जीवन के अन्य भाग प्रकृति से जुड़े हैं, जो पर्यावरणीय पारिस्थितिकी के संतुलन से अनुकूलन रखती हैं।

तराई क्षेत्र में विकास करने के कारण इन्हें **'थरूआर', 'थडुवा'** भी कहा जाता है तथा इनके निवास को **'थडुआ'** के नाम से जानते हैं। बलरामपुर जनपद के गैसडी और पंचपेडवा ब्लाक में थारूओं की संख्या सर्वाधिक है। 2011 के जनगणना के अनुसार पंचपेडवा ब्लाक के कुल 33 गांव में थारूओं की जनसंख्या **19,097** थी। इसी क्रम में गैसडी ब्लाक के कुल 19 गावों में जनसंख्या **5510** थी। वहीं 2011 के जनगणना के अनुसार बलरामपुर जनपद में थारूओं की कुल जनसंख्या **24,761** दर्ज है।[3]

श्रावस्ती के राजा सुहेलदेव के प्रजा के रूप में थारूओं की पहचान रही है। सहज–जीवन और आत्मनिर्भरता इनकी पहचान रही है। ये सिर पर चोटी रख कर टोपी लगाते हैं। पुरुष अधनंगे और कौपीनधारी होते हैं। कमर से बंधी सूत की डोरी या रस्सी से दस इंच चौड़ी और पाँच फीट लम्बी सफेद कपड़े की पट्टी को दो परतों में लपेट कर लटका लेते हैं। जाड़े के दिनों में बड़ी सलूका और कमीज धारण करते हैं। महिलाएँ लहंगा–चोली तथा ओढ़नी पहनती हैं। आधुनिक परिवेश से यह जनजाति अब अछूती नहीं रह गयी है। पुरुष पैन्ट, शर्ट, कोट एवं महिलाएँ साड़ी, ब्लाउज, पेटीकोट आदि पहनने लगी हैं।

थारू जनजाति का भोजन हमेशा साधारण रहा है। यह नियमित रूप से चार बार भोजन करते हैं। सुबह कलेवा, दोपहर में मिझनी, शाम को सिझनी और रात्रि में बेरी खाते हैं। खाने में मांड, दही, रोटी, चावल, चावल का भूजा, मांस, सूखी मछली इन्हें सर्वाधिक पसन्द है।

इनकी पहचान अब धीरे–धीरे अब सीमित होती जा रही है। गोरे–चिटटे, सुडौल शारीरिक गठन वाले आकर्षक थारूओं की नई पीढ़ी पीत वर्णी होती जा रही है। इनमें आर्य, मंगोल वर्ण के साथ–साथ अन्य वर्णों का संक्रमण या मिश्रण दिखाई पड़ रहा है। जहां इनकी परम्परा आर्य संस्कार के साथ जुड़ी हैं, वहीं इनमें वर्ण व्यवस्था के भी लक्षण कहीं न कहीं सुरक्षित हैं। यह आर्य सत्य संस्कृति के व्यवहारी रहे हैं। इसी क्रम में इनकी पहचान संस्कृति सम, सन्तोष, त्याग, तप, दया, विवेक, प्रेम, श्रद्धा–भक्ति, दान, मान और स्वाभिमान के साथ मानव संस्कृति के रूप में रही है। अतिथि का सत्कार, सेवा, मांस, मंदिरा, मस्ती ही थारू संस्कृति रही है।

थारू वैदिक, पौराणिक एवं ग्राम देवता की पूजा –अर्चना करने वाली संस्कृति के पोषक रहे हैं। ये राम, कृष्ण, गौतम बुद्ध, लक्ष्मण, निराकार ब्रह्म, शंकर, काली, भवानी, भैंसासुर तथा पाँच पाण्डवों की पूजा सदियों से करते आ रहे हैं।

थारूओं में कर्म आधारित नाम रखने की रूढ़िगत परम्परा प्राचीन रूप से मिलती है, जैसे– गाड़ी हांकने वाला 'लढिवनवा', खेत जोतने वाला, 'किसनवा', खाना पकाने वाला 'भनसरिया', जानवर चराने वाला 'चरबहवा', पानी भरने वाला 'पनिभरवा', धान कूटने वाला व गेहूं पीसने वाला 'कुटनाहे–पिसनाहे' कहे जाते हैं।[4]

सामाजिक जीवन– प्राचीन काल से ही यह प्रचलित रहा है कि थारू समाज परम्परावादी, रूढ़िवादी एवं अन्धविश्वासी प्रवृत्तियों से घिरा हुआ है। स्वभावगत रूप से थारू पुरुष वर्ग स्त्रियों का गुलाम रहा है। इनकी संस्कृति पूर्ण रूप से आदिम जाति या जनजातियों के समान तो नहीं रही परन्तु उस प्रजाति (थारू) में भी अति प्राचीनता के साथ–साथ आदिम समाजों की कुछ विशेषता अवश्य पायी जाती है।[5] सामाजिक जीवन में राजनीति

की भूमिका अपेक्षाकृत अधिक रही है। राजनीतिक भूमिका ने निरन्तर थारू जनजाति के साथ–साथ अन्य समुदायों को भी प्रभावित किया है। ये लोग समाज के कमजोर और दबे–कुचले उपेक्षित वर्ग को अपने माया जाल में फंसा कर अपना निहित स्वार्थ सिद्ध करते रहे हैं। शिक्षा से वंचित थारू समुदाय भी अपने हितों, संविधान प्रदत्त अधिकारों से वंचित रहा जिसका परिणाम आज हमारे समक्ष है। सभ्य समाज के निरन्तर नजदीक रहने वाली यह जनजाति सामाजिक रूप से तो कमजोर रही है, राजनीतिक लाभ से भी वंचित रही।[6] जागरूकता की कमी स्वभावगत रूप से सीधा होना कारण रहा है। स्वतंत्रता के 75 वीं वर्षगांठ पर भी यह समुदाय आवश्यक आवश्यकताओं से वंचित और कमजोर स्थिति में है।

आर्थिक जीवन– थारू जनजाति भी अन्य जनजातियों की भांति कृषि पर आधारित जीवन निर्वहन करती रही है। इनके आय का प्रथम स्त्रोत कृषि एवं द्वितीय स्त्रोत मछली का शिकार करना रहा है। मछली पकड़ने को व्यवसाय तो नहीं कहा जा सकता है किन्तु यह पारिवारिक व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने में बड़ी भूमिका निभाता है। जंगलों के आस–पास क्षेत्रों में थारू शिकार भी करते हैं। ये जंगली क्षेत्र में सूअर, चीतल, पक्षी आदि का शिकार करते हैं। वास्तव में थारू समाज के पुरुष वर्ग स्वभावगत रूप से सुस्त एवं ढीले प्रवृत्ति के होते हैं। जो भी कृषि योग्य भूमि इनके पास है, उनसे भी अपेक्षाकृत उपज नहीं प्राप्त कर पाते हैं, जिसका मुख्य कारण है, परम्परागत यंत्रों का प्रयोग एवं प्रविधियां, इनके सभी कार्य परम्परागत रूप से होते हैं। सुस्त और सीधे स्वभाव के कारण यह मात्र जीवन यापन करने के लिए कृषि से अनाज प्राप्त कर पाते हैं।

मछली मारना थारूओं का पारिवारिक कार्य है जिसे वह आवश्यकता के रूप में करते हैं। ये समूह में मछली पकड़ने जाते हैं। स्त्री और पुरुष दोनों अलग–अलग मछली का शिकार करते हैं। ऐसा इसलिए है कि स्त्रियां अपने द्वारा पकड़ी गयी मछली ही खाती हैं। पुरुषों द्वारा स्पर्श की गई मछली वह नहीं खाती हैं। अधिकांश थारू जनसंख्या निर्धन और गरीब हैं, अकुशल और अपर्याप्त कृषि से उन्हें पेट भर भोजन भी नहीं मिल पाता है।[7]

सांस्कृतिक जीवन– थारू जनजातियों में भी धर्म एवं संस्कृति के प्रति गहरा लगाव है। उनकी प्रमुख देवी कालिका हैं। यह टोने–टोटके में भी विश्वास करते हैं। हिन्दू, मुस्लिम एवं अन्य धर्म के आराध्य को भी यह स्वीकार करते हैं। भरारा की मुख्य आराध्या कालिका हैं जिनका वह मंत्रों के माध्यमों से आह्वान कर उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। भैरव व महादेव भी उनके आराध्य हैं जिनकी वह पूजा करते हैं। इनके अन्य देवता भी हैं– वीर, झाक, गरार, रतिनाथ, देवहर, सावन, लूटा आदि, पर्वतिया, पुण्यगिरि, वनस्पति, पीपल आदि इनके लिए आराध्य हैं, जिनकी पूजा करते हैं।[8]

तीज, त्योहार– परिवर्तित परिवेश में भी वह अपने त्योहारों को बचाकर रखे हैं। वैसे तो वह अधिक त्योहारों में विश्वास नहीं करते हैं। इस समाज के त्योहारों में ब्राह्मणों की कोई भूमिका नहीं होती है। थारू जनजाति में **'चढ़ाई'** त्योहार को अधिक महत्व दिया जाता है जिसे वर्ष में दो बार **'चैत्र'** एवं **'वैशाख'** में मनाया जाता है। इस त्योहार को मुख्यतः परिवार की स्त्रियां गांव के बाहर देवी की आराधना को केन्द्रित करके मनाती हैं। तीज को दूसरा स्थान प्राप्त हैं। वैसे तो तीज–त्योहार हमारे रीति–रिवाज के अनुसार सावन माह में ही मनाये जाते हैं। वास्तव में **होली** व **मुण्डन** इनके मुख्य त्योहार हैं, जिसमें मछली व शराब का सेवन किया जाता है। 'दीपावली' को यह अशुभ मानते हैं।[9]

वास्तव में अशिक्षित एवं पिछड़े हुए थारूओं का जीवन अन्धविश्वास व परम्पराओं से पूर्ण रूप से घिरा हुआ है। चिकित्सा व धर्म में विश्वास एवं जादू–टोना को अधिक प्रमुखता दी जाती है। रोगी की मृत्यु होने पर भी डॉक्टरी सुविधाओं को छोड़कर टोने–टोटकों पर अधिक विश्वास किया जाता है। आज के भौतिकवादी परिवेश में थारू जनजाति नगरों की समीपता के प्रलोभनों एवं आकर्षणों से दूर तराई क्षेत्र में आत्मनिर्भर जीवन व्यतीत तो करती है किन्तु इनसे अलग नहीं हो सकते। औद्योगीकरण के बढ़ते प्रभाव, गरीबी और बेरोजगारी के कारण थारू जनजाति नगरों में मजदूरी आदि कार्यो के लिए पलायन कर रहे हैं।[10]

वैवाहिक जीवन– थारू जनजाति में विवाह केवल **'माघ'** में होता है, जिसे **'लठमरवा'** भोज कहा जाता है। विवाह के पश्चात् गौने की भी प्रथा प्रचलित है। जब दोनों पक्षों में विवाह कार्यक्रम तय हो जाता है तो इसे **'पक्की–पोढ़ी'** कहते हैं। थारूओं में विवाह की औपचारिकता **'दिखनौरी'** सगाई से शुरू होती है।

थारूओं में विवाह संस्कार प्रचलित परम्परागत रीति के साथ सम्पन्न किया जाता है। इसमें **'चूल्हा बैठाण', 'भूमिया पूजन'**, **'सर देना**, **'तेल चढ़ाना'**, **'पहनावा'**, **भौंणी**, **'कन्यादान'**, **'भंवर'**, आदि मुख्य रस्में निभाई जाती हैं। सामान्य विवाह के अवसर पर प्रत्येक रस्म के निर्वहन में अपने सभी सगे–सम्बन्धी तथा ग्रामवासियों को भोज दिया जाता है। लड़के के विवाह में **'भुईया रोटी'**, **'हल्दी रोटी'** तथा **'कच्ची रोटी'** के नाम पर सभी अतिथियों का सत्कार किया जाता है। इस प्रकार थारू जनजाति में कुल सात प्रकार के विवाह का प्रचलन है–

1. खासी या धर्म विवाह
2. खर्चा विवाह
3. चुटकुटा
4. उधरा या प्रेम विवाह
5. घूस विवाह
6. पति भ्राता विवाह
7. साली विवाह [11]

थारू महिलाओं की स्थिति– थारू समाज में महिलाओं को व्यवहारिक रूप से प्राथमिकता प्रदान की जाती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की इच्छा का सम्मान किया जाता है। स्त्रियों को प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त होती है। पुरुष वर्ग स्त्रियों की सहायता करते हैं लेकिन उन्हें कोई कार्य करने से रोक नहीं सकता है।

थारूओं का जीवन कच्ची शराब के अत्यधिक प्रयोग से एक अभिशाप बनता जा रहा है। भूख से मरते हुए, गरीबी, बेरोजगारी, ऋण ग्रस्तता में डूबे हुए जीवन की प्रमुख आवश्यकताओं को भी बड़ी ही कठिनाई के साथ पूर्ण करने वाले थारूओं की शराब एक आवश्यकता बन चुकी है। यही इनकी बीमारी का भी कारण है।[12]

आधुनिक भारतीय परिवेश के 75 वे स्वतंत्रता वर्षगांठ जिसे हम '**अमृतकाल'** के रूप में उत्सव मना रहे हैं किन्तु हमारे समाज के अंग के रूप में उत्तर प्रदेश की थारू जनजातियां आज भी जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित हैं। यह दुखद एवं विचारणीय पक्ष है। देश का सभ्य समाज, सरकार एवं सामाजिक स्वयं सेवी संस्थाएं भी इस विषय पर मौन दिखाई पड़ती हैं।

पितृवंशीय, पितृसत्तात्मक एवं पितृ स्थानीय परम्परा का निर्वहन करने वाली थारू जनजातियां अब पलायन के कगार पर खड़ी हैं। महिलाएँ पुरुषों से कम नहीं हैं, परिवार के वृद्धों के प्रति व्यवहार, श्रद्धाभाव, आज्ञाकारिता का हनन का कारण उनकी बेरोजगारी और गरीबी है। इनका आर्थिक पक्ष जहां कृषि और पशुपालन पर आधारित रहा है, वह अब अत्यन्त कमजोर पड़ चुका है। आज आवश्यकता है कि समसामयिक परिवेश में थारू जनजातियों के लिये विशेष रूप से स्थानीय स्तर पर शिक्षा, प्रशिक्षण एवं रोजगारपरक कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक लागू किया जाय जिससे कि इनका बहुआयामी विकास किया जा सके।

सम्दर्भ ग्रंथ सूचीः

1. मुकर्जी, रवीन्द्र नाथः सामाजिक मानवशास्त्र की रूपरेखा, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर–दिल्ली, पृ–378
2. दूबे, गिरिजा प्रसाद एवं त्रिपाठी योगेन्द्र प्रसादः जनजातीय समाज का समाजशास्त्र, मिश्रा टेडिंग कारपोरेशन वाराणसी, पृ– 55

3- राज जी यादव, अपर्णा; बलरामपुर में थारू जनजाति के बीच दो दिन, www.gaonkelog.com
4. बखसी पवन; सार, संकलन बलरामपुर जनपद, प्रकाशक सामाजिक एवं शैक्षिक विकास संस्था, तुलसीपुर बलरामपुर पृ–109
5. मुखर्जी; रवीन्द्रनाथ; सामाजिक मानवशास्त्र की रूपरेखा, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर–दिल्ली, पृ–379
6- गौतम, रीता एवं साहू डी0आर0; थारू जनजाति के सामाजिक परिवेश एवं मौलिक अधिकार का विशलेषण; www.jetir.org
7. मुखर्जी, आर0एन0;सामाजिक मानवशास्त्र की रूपरेखा, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर–दिल्ली, पृ–379
8. दूबे, गिरिजा प्रसाद एवं त्रिपाठी योगेन्द्र प्रसाद; जनजातीय समाज का समाजशास्त्र, मिश्रा टेडिंग कारपोरेशन वाराणसी, पृ– 55
9. मुखर्जी, आर0एन0; पृ– 382
10. उपाध्याय, विजय शंकर एवं शर्मा, विजय प्रकाश; भारत की जनजातीय संस्कृति, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल पृ–71
11. मुखर्जी; रवीन्द्रनाथ; सामाजिक मानवशास्त्र की रूपरेखा, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर–दिल्ली, पृ–381
12. उपाध्याय, विजय शंकर एवं शर्मा, विजय प्रकाश; भारत की जनजातीय संस्कृति, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल पृ–70

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 5
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

नागार्जुन के साहित्य में मार्क्सवाद

नीना शर्मा
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
डॉ. सविता वर्मा
शोध- निर्देशक एवं सह-प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

Article Info
Publication Issue :
September-October-2023
Volume 6, Issue 5
Page Number : 30-33
Article History
Received : 01 Sep 2023
Published : 29 Sep 2023

सारांश- हिन्दी जगत में बाबा नागार्जुन को मार्क्सवादी विचारक, महान दार्शनिक और शिक्षावादी तत्ववेत्ता के रूप में जाना जाता है । बाबा नागार्जुन की रचनाओं में मार्क्सवादी विचारधारा स्पष्ट रूप से व्यक्त होता है। नागार्जुन के विचारमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता और मुक्ति महत्वपूर्ण है और यही गुण उनके सम्पूर्ण साहित्य में परिलक्षित होता हुआ है। वह बड़ी व्यकुलता से मानव मुक्ति का पक्ष रखते हैं। और मार्क्सवाद भी इन्हीं मानव समाज के व्यक्तिगत आजादी और सामाजिक समरसताकी प्रोत्साहना करता है। दु:ख और संघर्ष का पर विचार करते हुए नागार्जुन का मानना है कि सुख, दु:ख और संघर्ष मानव जीवन का अभिन्न और महत्वपूर्ण अंग है जिसे अनुभव करना नितांत अवश्यक है। मार्क्सवादी विचारकों में श्रमिकों के दु:ख और संघर्ष का महत्वपूर्ण स्थान है, जिनकी दासता से मुक्ति के लिए समाज में परिवर्तन की आवश्यकता है। सामाजिक समरसता और न्याय का स्थान नागार्जुन के दर्शन में प्रमुखता से देखने को मिलता है । नागार्जुन की मान्यता है कि समाज में सभी वर्गो के प्रति न्यायपूर्ण व्यवहार होना चाहिए । मार्क्सवाद भी इन्हीं विचारों का पक्षधर है उनकी दृष्टि में सामाजिक न्याय और समाज में विभिन्न वर्गों के बीच समानता का ही सुखद समाज का पर्याय है । नागार्जुन द्वारा सभी धार्मिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत धाराएँ और असमानतो चाहे वह आर्थिक हो या समाजिक सबका पुरजोर विरोध करते हैं । मार्क्सवाद भी विश्वास करता है कि समाज और आर्थिक संरचनाओं में असमानता ही समाज के विकसित में अवरोध उत्पन्न करते है ।

बीज शब्द : मार्क्सवाद, प्रगतिवाद, भारतीय समाज, नागार्जुन, मुक्तिकामी साहित्य ।

नागार्जुन के साहित्य में मार्क्सवाद- गतिवाद हिन्दी साहित्य की विकास यात्रा में मील का पत्थर है । पहली बार कवियों ने कविता को सामाजिक सन्दर्भों से जोड़ने की कोशिश की। वर्गीय विषमताओं से मुक्ति के स्वर प्रगतिवादी कविता की ही देन है । नागार्जुन इसी काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। यानी हिन्दी कविता जिस दौर में स्वप्निल यथार्थ के लोक से ठोस वास्तविकताओं की जमीन पर उतर रही थी- प्रगतिवाद की धूम थी, नागार्जुन का कवि व्यक्तित्व उसी परिवेश में आकार पा रहा था। उनकी कविता कोटि-कोटि दुखियों की व्यथा-पूरित कविता है, कोटि-कोटि दुखियों के मुक्ति-संघर्ष की कविता है। हिन्दी साहित्य की जीवन्त परम्परा और भारतीय जनता के साहसी अभियान के प्रतीक है : कवि नागार्जुन ।

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

नागार्जुन एक प्रमुख भारतीय लेखक, कवि और चिंतक थे जिन्होंने साहित्यिक और सामाजिक विभिन्न मुद्दों पर अपनी लेखनी चलाए । वे मार्क्सवादी विचारधारा के प्रमुख प्रेरणा स्रोत रहे हैं और उनके साहित्य में मार्क्सवादी विचारों के प्रति समर्पण का प्रतीक मिलता है। नागार्जुन अपनें साहित्य लघुकथाओं, कविताओं और निबंधों के माध्यम से मार्क्सवादी विचारों को प्रस्तुत करता है, जिनमें वे समाज, राजनीति, आर्थिक न्याय और समाजशास्त्र के विभिन्न मुद्दों पर विचार करते हैं । नागार्जुन का साहित्य रचना सामाजिक न्याय, असमानता और शोषण के खिलाफ था जिसके लिए वह विभिन्न वर्गों के लोगों के अधिकारों की रक्षा के लिए उन्हें प्रोत्साहित कर, उनके भीतर चेतना रूपी प्राण फूंकने का कार्य करते थे । इनकी की रचनाओं में समाजवाद, आर्थिक न्याय, व्यावसायिकीकरण के खिलाफ आक्रोश देखने को मिलता हैं।

नागार्जुन जनवादी होने के नाते जनता के हित में बयान देते थे । किसी एक विचारधारा पर स्थिर नहीं रहने के कारण उनकी खूब आलोचना भी होती थी। पर उनका मानना था कि किसी विशेष विचारधारा के समर्थन की बजाए वे गरीबों, मज़दूरों, किसानों के हितार्थ कार्य करने के लिए पैदा हुए थे। उन्होंने गरीबों को जाति या वर्ग में विभाजित करने की जगह केवल गरीब माना । उन्होंने भीषण आर्थिक अभावों के बावजूद विशद लेखन किया। उनके गीतों में लयात्मक रूप से व्यक्त हुई काव्य की पीड़ा, अन्यत्र किसी रचनाकार के लेखन में नहीं दिखती है ।

नागार्जुन की कृतियां सामाजिक चेतना को उत्पन्न करने वाला प्रभावशाली रचना है । इनके साहित्य में समाज के विभिन्न परिस्थितियों का सजीव का चित्रण हुआ है । इनकी कविताओं और कहानियों में सर्वहारा वर्ग का देने वाली है । लेखक ने जिस भी जिस रूप में सहित्य रचा है उन सबमें गरीब-शोषित समाज ही रचनाओं का केन्द्र बिन्दु रहा । वह प्रदेश के विकृत होते परिवेश एवं उसके मूल तत्व की जांच-पड़ताल करते। नागार्जुन रचनाएं जन-जन की दासता से मुक्ति, उनके संघर्ष, उनके सुख-दु:ख, उनकी सुविधा-असुविधा, उनकी जीवन पद्वति आदि की संवाहिका है । डॉ. शंभूनाथ भी इस बात की पुष्टि अपने शब्दों में करते हुए कहते हैं- "जनता की भूख और विलोभ को वाणी देते हुए सर्वहारा के साथ रहने-जीने, उनके दुख-दर्द का साथी बनने की अद्भुत ललक मन मे रखने वाले जिस कवि को हम अपनी संवेदना के बहुत निकट पाते है तथा जिसे इतिहास भी चिरकाल तक जानेगा वह नागार्जुन ही है ।"[1]

सामाजिक चेतना में नागार्जुन का पहला मुठभेड़ धर्म से हेता है, जाने कितने बन्दिशें और बेडियां से धर्म के नाम पर लोगों को पहनाया जाता है और इन्हें जकड़ा जाता है। तत्कालीन धर्म परम्परा समाज उत्थान के लिए ठोस कदम नहीं उठा रहे थे और न ही प्रगतिशील भूमिका नहीं निभा पा पाए, बल्कि वह आम मानस के जिन्दगी को तबाही और पलायन के लिए धकेड़ता रहा। धर्म के नाम समाज में विसंगतियां फैलने लगी एक- दूसरे के पूरक होना छोड़ इंसान अपनों से ही भेद करना शुरू कर दिया । समाज में आंतक, अन्याय, भेदभाव और उत्पीड़न का सिलसिला धर्म के नाम पर तेजी से चलता रहा। देश विभिन्न जातियों और वर्गो में में बंट गया। धर्म के कारण देश की तत्कालीन स्थिति से तनाव ग्रस्त हो गई, धर्म के नाम पर चलने वाले अत्याचार में निरंतर वृध्दि होने लगी । वही दूसरी ओर आर्थिक असामानताने गरीब-अमीर वाले विचार से भारतीय जनमानस व्याकुल थे, जिस पर नागार्जुन ने लिख है-

श्रद्धा का तिकड़म का नाता
जय हो भिक्षुक, जय हो दाता ।
पियो सन्त हुगली का पानी
पैसा सच है दुनिया फानी ।[2]

नागार्जुन का सामाजिक चेतना और प्रगतिशीलता में दूसरा मुकाबला का नारी के प्रति दुव्यर्वहार करने वालों से होता है "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ।"[3] की प्रतिष्ठा वाली कुल उध्दारक स्त्री को समाज में धम आचरण वाले प्राणीविविध माध्यमों से शारीरिक और मानसिक कष्ट पहुचाते थे। "क्षणे रूष्टा, क्षणे तुष्ठा, रूष्ठा तुष्टा क्षणे क्षणे।"[4] कहकर नारी के निर्बल पक्ष का खूब उपहास उड़ाया है । कुत्सित मानसिकता के व्यक्ति नारी को केवल भोग की वस्तु मानकर इनका शोषण करना चाहते है। समाज उसे अनभिज्ञ पर्दे मे रखकर तमाम बन्दिशों में बांधकर, शिक्षा से दूर करके, आर्थिक दृष्टि से मजबूत करने बजाय मजबूर कर, परावलम्बी बनाकर आदर्श पत्नी , आदर्श बहु बनाकर पतिव्रता धर्म निभाने वाली कहकर समाज ने स्त्री के साथ छल किया । नागार्जुन ने अपनी

रचनाओं में इन्हीं छल और चालाकी को सबके सामने रखकर स्त्री शोषण को विराम देकर आदर्श समाज की स्थापना के लिए आह्वान किया है–

छूकर अब तुम्हारे दोंनो पाँव
होता राघव राम प्रतिज्ञाबद्व,
नारी के प्रति कभी न होगा क्रूर
कभी न मेरे अन्तरूपुर के मध्य,
होगा शोडशियों का जमघट व्यर्थ
नहीं करूगा सपने मे भी अम्ब,
क्रय कीत दासी का भी अपमान ।[5]

महाकवि नागार्जुन का महान जीवन दर्शन है–विश्वामानववाद, वसुधैव कुटुम्बकम, एक विशाल व्यापक विश्व दृष्टी । नागार्जुन का संपूर्ण कृतित्व प्रगतिशील चेतना का वाहक है। उनका मध्यमवर्गीय जीवन तथा मजदूर वर्ग की जिन्दगी का संपूर्ण चित्र यथार्थ रूप में मिलता है। उन्होंने जगत की वास्तविकता को सामने लाया । उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से एक नयी समस्या, एक नयी चेतना का अलोक दिखाया। उन्होंने अपनी रचनाओं में श्रमिक, दलित तथा शोषित समाज के दु:ख और कष्ट का चित्रण किया है । नागार्जुन की कविता में शोषित और पीड़ितों के प्रति गहरी सहानुभूति है कुली और मजदूर को देखकर कवि को इसका बड़ा करूणिक दृश्य खुरदरे पैर कविता में मिलता है वे जीवन के भयंकर यथार्थ का चित्रण करते हैं, उन्होंने पूंजीवाद, सामाज्यवाद, संप्रदायवाद सभी का विरोध किया है, जिससे श्रमिक, शोषित वर्ग और किसानों को उनके श्रम का उचित मान मिल सके।

नागार्जुन लगभग अपनी प्रत्येक रचनाओं में सर्वहारा वर्ग का पक्ष रखते हुए उनका प्रतिनिधित्व करते दिखाई देते है। उनकी रचनओं में केवल श्रमिक भर ही नहीं, अपितु कृषक, मध्यम वर्गीय समाज, कर्मचारी, शिक्षक, क्लर्क आदि का भी विशेष स्थान है । ये सभी शोषित वर्ग के लोग हैं जिनका शोषण समाज के उंचे तबके के द्वारा होता है। आम आदमी के साँचे गढ़ने वाले एक भारतीय पाठशाला शिक्षक की विपत्ति पर प्रकाश डालते हुए नगार्जुन लिखते है–

घून खाये शहतीरों पर की बाराखड़ी विधाता बाँचे,
फटी भीत है, छत है चूती, आले पर विस्तुइया नाचे ।
बरसाकर बेबस बच्चों पर मिनट–मिनट पर पाँच तमाचे
दु:खखहरन मास्टर गढ़ते है किसी तरह आदम के साँचे ।[6]

जैसी भावभूमि नागार्जुन की साहित्य का है, वही भावभूमि पीड़ित, शोषित और उपेक्षित जनता का है । इस पीड़ित, शोषित और उपेक्षित जनता की आवश्यकताएँ एंव आकाक्षाएं उनके काव्य की प्रमुख विषय–वस्तु है । लेखक का रचना कर्म मुख्य रूप से सामाजिक विशगतियों से जुडा हुआ है । साहित्यकार उन्मुक्त हृदय और खुली दृष्टि से हर सामाजिक घटना का अवलोकन करते है । आज भी समाज का एक वर्ग बेरोजगारी, भुखमरी, अकाल, द्ररिद्रता, मँहगाई, मुनाफाखोरी, अशिक्षा और भ्रष्टाचार से शोषित है । वही दूसरी तरफ इसी मानव समाज मे कुछ ऐसे भी लोग है, जिनका जीवन ऐश्वर्यशाली है जो ऐशो–आराम की जींदगी जी रहे है । यही असमानता अर्न्तद्वंद पैदा करती है इसी असमानता को साहित्यकार ने अपनी कविता द्वारा प्रकट करते हुए कहते हैं–

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त ।[7]

वस्तुत: नागार्जुन के काव्य का कोई एक रूप नहीं है । इस देश की भौगोलिक, सांस्कृतिक विभिन्नताओं की तरह ही उनके अनेकों काव्य रूप हैं । दोहे, गीत, छंदबद्ध कविता, मुक्तक और विभिन्न लोक धुनों पर रचे गए व्यंग्यों की उनके यहाँ भरमार है । नागार्जुन की भाषा में बोलियों, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी के अनेक शब्द आते हैं । ये वे शब्द हैं जो विभिन्न अंचलों में बोली जाने वाली

खड़ी बोली में घुलमिल गए हैं । उनकी कविता में अमीर–गरीब, मालिक–मजदूर, जमींदार–कृषक, उच्चवर्ग–निम्नवर्ग के बीच द्वंद्व दिखाई देता है। गरीबी, भुखमरी, बीमारी, अकाल, बाढ़ जैसे सामाजिक यथार्थ का सूक्ष्म चित्रण कवि ने किया है । कवि मूलत: मार्क्सवादी होकर भी श्रम और शांति की भाषा को व्यक्त करते हैं । उन्होंने शोषत, पीड़ित, श्रमिक और मजदूर वर्ग के प्रति अपना अलग जनवादी राष्ट्र बनाया । उनके काव्य का लक्ष्य व्यापक होने के कारण शोषित, पीडितों पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार के खिलाफ कवि ने अपनी आवाज बुलंद की है, वे सामाजिक विषमता के प्रति विद्रोह कर समाज में परिवर्तन लाना चाहते हैं । नागार्जुन की कविता समाज जीवन के विविध अंसो की, तथा पक्षों को उजागर करती है ।

निष्कर्ष - नागार्जुन को समझने के पश्चात यह कहना अनुचित न होगा कि नागार्जुन की रचनाएं सामाजिक चेतना उत्पन्न करने वाली प्रभावशाली रचना होती है । इनके साहित्य में समाज के विभिन्न परिस्थितियों का सजीव चित्रण मिलता है । इनकी कविताओं और कहानियों में सर्वहारा वर्ग को विषेश स्थान दिया गया है । लेखक ने जिस भी जिस रूप में साहित्य रचना किए है, उन सबमें गरीब–शोषित समाज को ही रचनाओं का केन्द्र बिन्दु माना । वह प्रदेश के विकृत होते परिवेश एवं उसके मूल तत्वों की जांच–पड़ताल कर समाज को एक नवीन और विकसित दिशा प्रदान करना चाहते हैं । सही अर्थों में नागार्जुन जनता के कवि हैं । वे एक मार्क्सवादी कवि माने गए क्योंकि नागार्जुन ने मार्क्सवाद को नहीं अपनाया बल्कि वे उनकी युगीन और आंतरिक जरूरत थी इस आंतरिक अनिवार्यता की जड़े उनके परिवारिक परिवेश में है इसलिए वह अपनी कविता के माध्यम से उन्होंने मार्क्सवादी, सिद्धांतों का प्रचार भी किया है ।

संदर्भ सूची -

1. नागार्जुन और प्रगतिशील साहित्य, डॉ.माधव सोनटक्के, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृ. सं 125
2. नागार्जुन, प्यासी पथराई आँखे, चौराहे के उस नुक्कड़ पर, पृ. सं 32
3. https://jantaserishta.com/editorial/yatra-naryastu-pujyante-ramante-tatra-deityah
4. https://bhattshailendra.wordpress.com/
5. नागार्जुन युगधारा, पाषणी, पृ. सं. 42
6. नागार्जुन, हजार हजार बाहों वाली, मास्टर, पृ. सं. 168
7. प्रतिनिधि कविताएं नागार्जुन, डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984, पृ. सं. 15

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 5
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

राष्ट्रीयशिक्षानीतौ 2020 इत्यस्यां मूल्यानि

ममता
असि.प्रोफेसर, शिक्षापीठ, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय, नवदेहली।

Article Info
Publication Issue :
September-October-2023
Volume 6, Issue 5
Page Number : 53-55
Article History
Received : 01 Sep 2023
Published : 29 Sep 2023

शोधसारांश:- छात्राणां व्यक्तित्वस्य सर्वाङ्गीणविकासे सहायकानि यानि अपेक्षितानि धार्मिक-सामाजिक-राजनैतिक-लोकतान्त्रिक-संवैधानिक-सांस्कृतिक-भौगोलिक-आर्थिकेत्यादीनि मूल्यानि भवन्ति। तेषां सम्यक् संयोजनं राष्ट्रीयशिक्षानीतौ तत्र 2020 इत्यस्यां कृतमस्ति। एतासां सर्वासां शिक्षासम्बद्धनीतीनां सम्यक् क्रियान्वयनाय राष्ट्रीयपाठ्यचर्यासंरचना 2023 NCERT इत्यनेन प्रस्तुता।

मुख्यशब्द: - धार्मिक:, सामाजिक:, राजनैतिक:, लोकतान्त्रिक:, संवैधानिक:, सांस्कृतिक:, भौगोलिक:, राष्ट्रीयशिक्षा, मूल्यानि।

ज्ञान-सत्ता-विचार-चिताख्यानबोधिका एवञ्च मोक्षमार्गनिर्देशिका शिक्षा नूनमेव अन्यैरनुशासनमिवेकमनुशासनमस्ति अन्यैरपि अस्या: शिक्षाया अपि स्वस्य तत्त्व-ज्ञान-मूल्यमीमांसश्चास्ति। स्वमेवानुशासनपक्षे अस्य स्वरूपमत्यन्तं विस्तरमेवञ्च जीवनं प्रति क्षेत्रं प्रतिएषा स्पृशति। पूर्वजेभ्य: प्राप्ताया: चरित्रशिक्षाया: (सम्पूर्णशिक्षाया: वा आत्मशिक्षाया:) दीर्घतमाया: यात्राया: एषान्यैरिव एका प्रमाणभूता साक्ष्यता वर्तते। व्यवस्थायामस्याम् अस्या: यद्रूपं स्वरूपमस्माकं देशे आवश्यकं तस्य दर्शनं पूर्णत्वेन न च कस्मिन्नपि आयोगे नीतिषु भवति। सर्वेषु आयोगेषु शिक्षानीतिषु तत्र 1968, 1977, 1984-85, 1995, 2005 इत्यादिषु नावलोक्यते। तासु नीतिषु भ्रमात्मकविषयाणां प्राचुर्येण स्थानप्रदानेन संयोजनेन सह भारतीयं प्राच्यज्ञान-बोध-कौशल-विचारान् प्रति प्रत्युपेक्षाभावास्ति।

कस्यापि राष्ट्रस्य सर्वा व्यवस्था: सर्वे विषया: दृष्टिपदे निमग्ना इति धिया शिक्षायामेव सन्निहितो भवन्ति।वस्तुतस्तु राष्ट्रीयशिक्षानीति 2020 इति भारतीयशिक्षाव्यवस्थाया: रचनात्मकं परिष्कारं प्रस्तौति।

बहुकालात् यस्या: शिक्षानीत्या: प्रतीक्षा भारतीयशिक्षाव्यवस्थायामासीत् यया भारतीया: भारतीयशिक्षा नवदिशां नव लक्ष्यमुद्देश्यं स्वधर्मदर्शनमूल्यमनुगुणं प्राप्नुयु:। चतुश्त्रिंशत् वर्षान्तरं कस्तूरीरंगनमहाशयस्य आध्यक्षे निर्मिताया: शिक्षानीते: 2020 इत्यस्या: प्रतिवेदनं भारतसर्वकारेण विंशत्योत्तरविंशतितमे वर्षे जुलैमासस्य ऊनत्रिंशत् दिनाङ्के (19-07-2020) प्रस्तुतम्। या शिक्षानीति: 2020 इत्यत्र प्रस्तुता सा नूनमेव भारतीयशिक्षाया: अपूर्णताया: विभिन्नसमस्याया: समाधानाय पूर्णतां प्रति अग्रेसराय च शैक्षिकपरिष्कारै: साकं नवशिक्षासंरचना 10+2+3 तथा च 5+3+3+4 इतीमां संरचनां प्रस्तौति।अनया नूनमेव अस्मदीया सर्वशिक्षाव्यवस्था उचिता भविष्यति। एषा शिक्षानीति 2020 इच्छति यत् भारतीयशिक्षा व्यवस्थायां समावेशनस्य एवञ्च संस्थानीकरणस्य नवायामा: स्थापिता: भवेयु:। अस्यां शिक्षानीत्यां 2020 इत्यस्यां चत्वारो भागा: स्कूलशिक्षा,(विद्यालयीयशिक्षा) उच्चतरशिक्षा, केन्द्रीयविचारणीयसन्दर्भा: एवञ्च क्रियान्वयनस्य रणनीतय: प्रस्तूयन्ते।

अस्या: शिक्षानीते: परिचयमार्गे बहूनां संवैधानिक- राष्ट्रीय-सांस्कृतिकमूल्यानां मानवजीवने महत्त्वं अवगत्य प्रथमे अनुच्छेदे वर्णितमस्ति। तत्र स्वतन्त्रभावेन निगदितमस्ति यत् शिक्षा पूर्णमानवस्य क्षमतां प्राप्तये न्यायसंगत-न्यायपूर्ण-समाजराष्ट्रयो: विकासाय एका मूलभूतावश्यकता अस्ति। एषा 2020 इति शिक्षानीति गुणवत्तापूर्णशिक्षां प्रति सार्वभौमिकविश्वतोमुखी चास्ति। वस्तुतस्तु सर्वे

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

भारतीया: गुणवत्तापूर्णशिक्षाविकारै: लाभान्विता भवेयुरिति। विश्वतोमुखात्वादेषा 2020 इति शिक्षानीति वैश्विकमानकेषु मञ्चेषु सामाजिकन्याय-समानता-वैज्ञानिकोन्नति-राष्ट्रीयैक्यता-सांस्कृतिकसंरक्षणस्य सन्दर्भे भारतराष्ट्रस्य सततप्रगते: आर्थिकविकासयोश्च कुञ्चिकास्ति। सार्वभौमिकी-उच्चस्तरीया शिक्षा तस्य समुचितं माध्यमस्ति यया अस्माकं राष्ट्रस्य सर्वेषां समृद्धप्रतिभानां संसाधनानां सर्वोत्तम: विकास: सम्वर्धनं व्यक्ति-समाज-राष्ट्र-विश्वस्य कल्याणाय अभ्युदयाय च वसुधैवकुटुम्बमिति धिया भवितुमर्हति। संवैधानिकमूल्यानां संयुक्तसामाजिकमूल्यानां सम्यग्संरक्षणेन सह अस्यां खलु 2020 शिक्षानीत्यां समावेशनात्मकमूल्यानां संयुक्तसामाजिकमूल्यानामपि महत्त्वपूर्णं स्थानमस्ति। अस्यां बहव: नीतिगता: संस्तुतय: प्रदत्ता: सन्ति। एषा 2020 इति शिक्षानीति बालकेभ्य:अनेकै: संसाधनै: या: शैक्षिकसमृय: प्रदीयन्ते तेषामधिगमनं ते नूनमेव कुर्यु:। एवञ्च तै: साकं सततााधिगमस्य कलामपि ते अवगच्छेयु:।मूल्यशिक्षाया: वा नैतिकशिक्षाया: सन्दर्भे अस्यां खलु नीत्यां निगदितमस्ति यत् सत्यं कर्तुमित्यस्य महत्त्वमल्पवयसि एव अधिगच्छेयु:। ते संरचनात्मकरूपेण नैतिकनिर्णयं कर्तुं सक्षमा: भवेयु:। कालान्तरे अनैतिकमूल्यानां तत्र वञ्चना, हिंसा,साहित्यात्मकमूल्यानां नाशाय परिष्काराय च सहिष्णुता, सहानुभूति: समानता-सामाजिकन्यायादीनां परमसंवैधानिकमूल्यानां विस्तरं रूपं प्रदास्यते। येषु सर्वेषु कार्येषु नैतिकाचरणाय विभिन्नै: संसाधनै: ते सक्षमा: भवेयुरित्यस्मिन् खलु पक्षे महत्त्वपूर्णं बलं प्रदीयते। येन स्वजीवनस्य सञ्चालनाय अपेक्षितानि मानवमूल्यानि तेषु विभिन्नेषु शिक्षाप्रारूपेषु शिक्षाप्राप्तवत्सु ध्वजेषु नूनमेव भवेयु:। अनया 2020 इति शिक्षानीत्या शिक्षाप्राप्तवन्त: छात्रा: पारम्परिकै: भारतीयमूल्यै: सह मानवजीवनस्य आधारभूतानां मूल्यानां संवैधानिकमूल्यानां च तद्यथा सेवा-अहिंसा-स्वच्छता-सत्य-निष्काम-कर्म-शान्ति-त्याग-सहिष्णुता-विविधता-बहुलवाद-नैतिक-आचरण-लैङ्गिकसंवेदनशीलता वृद्धान् प्रति सम्मानं सर्वेषां जनानां वैयक्तिकभिन्नतानां तेषामन्तर्निहितशक्तीनां क्षमतानां सम्मानं पर्यावरणं प्रति सम्मान-सहयोग-शिष्टाचार-धैर्य-क्षमा-सहानुभूति-करुणा-देशभक्ति-लोकतान्त्रिकदृष्टिकोण-अखण्डता-कर्तव्यबोध-न्याय-स्वतन्त्रता-समानता-बन्धुत्वादीनां च मूल्यानां विकास: छात्रेषु भविष्यन्ति। एतदर्थं राष्ट्रीयपाठ्यचर्यायां छात्रेभ्य: उक्तानां मूल्यानां समुपस्थानं पञ्चतन्त्रस्य कथा हितोपदेशस्य सम्बद्धकथा जातकथा अन्या: दन्तकथा: भारतीयपरम्पराभि: प्रेरिका: कथा: संयोजिता: भविष्यन्ति। येषां सरुचिभिरध्ययनस्य अवसरेण सह तासामधिगमस्यापि अवसरं ते प्राप्तुं समर्था: सक्षमाश्च भविष्यन्ति। एवञ्च एषां भारतीयपारम्परिकमूल्यान्तं संवैधानिकमूल्यानां वैश्विकस्तरे कीदृश: प्रभाव: विषयेस्मिन् ते नूनमेव शक्ता: सक्षमा: भविष्यन्ति।

छात्राणां जीवने व्यक्तित्वे च मूल्यानां सम्यक् संरक्षणाय भारतीयसंविधानस्य केचनांशा: छात्रेभ्य: अनिवार्या: भविष्यन्ति, तथा च शरीरमाध्यम खलु धर्मसाधनमिति महाकविकालिदासधियाप्राणसहितं शरीरं मूल्यसंरक्षणायमत्यन्तमपेक्षितमस्ति। एतदर्थं 2020 इति शिक्षानीतौ स्वास्थस्य आधारभूते प्रशिक्षणे निवारकस्वास्थ्यम्, मानसिकस्वास्थ्यम्, सुपोषणम्, वैयक्तिकीं सार्वजनिकीं च स्वच्छता, क्रियाभि: सह प्राथमिकचिकित्साया: महत्त्वपूर्णं स्थानं प्रतिपादितमस्ति। अनेन प्राकारेण उचितस्वास्थ्याय तस्मिन् सम्यक् मूल्यानां सम्वर्धनाय च पाठ्यचर्यायां पाठ्यक्रमे मदिरा, तमालपत्रम्, अन्यमादकपदार्थानां दुष्प्रभावानां वैज्ञानिकव्याख्या: क्रियापाठादयाश्च भविष्यति। तद्यथा-

Students will be fought at a young ang importance of "doing what's right" and with be given a logical framework for making ethical decisions. In later years, this would then be expandeddong themes of cheating, violence, plagiarism, littering, tolerance, equality, empathy, weak view to Enabling children to embrace moral/ethical Values in conducting one's life, formulate a portion argument about on an official issue forms multiple perspectives, and use ethical practices in all work. Ap consequences of such basic ethical reasoning traditional Indian values and all basic humon and constitutional values (such as Seve, Swachchata, satya, neklcam, Karma, sham bas, sacrifice,peace, tolerance, diversity, pluralism, pleas conduct, gender sensitivity, respect for elders, - respect for all people and their inherent capabilities Chimp. regardless of background, respect for environment. held fulness, courtesy, patience, friezeempathy "Compass con, patriotism democratic

outlook in -terrify, responsibility, justice, liberty, equality, and fraternity) will be divedofed in. Lall students (N.e. P. 2020, 4.28)

अनेन प्रकारेण राष्ट्रीयशिक्षानीतौ 2020 इत्यस्यां नीतेः सिद्धान्तर्गते मूल्यशिक्षायाः विषये निगदितमस्ति यत् नैतिक-मानवीय-संवैधानिकमूल्यानां सम्वर्धनं तत्र अन्यान् प्रत्यादरः वा सम्मानम्, स्वच्छजीवनचर्या, सुलोकतन्त्रात्मकमूल्यानां , स्वच्छसेवा, सामाजिकन्यायः, स्वतन्त्रता, समानता, भर्तृत्व-बन्धुता इत्यादीनां मूल्यानां महत्त्वपूर्णं स्थानं नीतित्वेन स्वीकृतमस्ति। तद्यथा-

Ethics and human and Constitutional values like emfathy, respect for others, cleanliness, Courtesy, democratic operate, spirit of service, respect for public property, scientific temper, liberty, responsibility, pluralism, equality and Justice. I NEP 2020, principles of the policy, P.5

निष्कर्षत्वेन कथयितुं शक्यते यत् छात्राणां व्यक्तित्वस्य सर्वाङ्गीणविकासे सहायकानि यानि अपेक्षितानि धार्मिक-सामाजिक-राजनैतिक-लोकतान्त्रिक-संवैधानिक-सांस्कृतिक-भौगोलिक-आर्थिकेत्यादीनि मूल्यानि भवन्ति। तेषां सम्यक् संयोजनं राष्ट्रीयशिक्षानीतौ तत्र 2020 इत्यस्यां कृतमस्ति। एतासां सर्वासां शिक्षासम्बद्धनीतीनां सम्यक् क्रियान्वयनाय राष्ट्रीयपाठ्यचर्यासंरचना 2023 NCERT इत्यनेन प्रस्तुता।

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

1. National curriculum framework for school education 2023, N.C.E.R.T New delhi.
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 शिक्षा मन्त्रालय भारत सर्वकार।
3. मणिः डॉ. वाचस्पति नाथ झा "शिक्षायाः दार्शनिकसामाजिकाधाराः" वर्षम्, 2018, प्रथम संस्करण, पोद्दार पब्लिकेशन, तारा कालोनी, छित्तूपुर, वाराणसी।
4. मणिः डॉ. वाचस्पति नाथ झा, पाठ्यचर्या विद्यालयश्च, वर्षम्-2016, प्रथम संस्करण, वीर बहादुर पब्लिकेशन, साउथसिटी, रायबरेली रोड, लखनऊ।
5. वर्मा वैद्यकाश, अधिनीति शास्त्र के मुख्य सिद्धान्त, एलाइड पब्लिशर्स, प्राइवेट लिमिटेड, वर्ष- 1987, प्रथम संस्करण, नईदिल्ली।
6. शर्मा.आर,ए. मानव मूल्य एवं शिक्षा आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ।

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 5
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास पर चयनित योगाभ्यास का प्रभाव: एक यादृच्छिक प्रयोगात्मक अध्ययन

डॉ. समरजीत सिंह
सह–प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, योग विभाग, सैम ग्लोबल विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)
अजय उनियाल
शोधार्थी, पी.एच. डी. (योग), सैम ग्लोबल विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

Article Info
Publication Issue :
September-October-2023
Volume 6, Issue 5
Page Number : 56-62
Article History
Received : 01 Sep 2023
Published : 29 Sep 2023

शोधसारांश- मनुष्य के सम्पूर्ण जीवनकाल में विद्यार्थी जीवन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है इस पर ही सम्पूर्ण देश का वर्तमान एवं भविष्य निर्भर करता है। जिस देश के विद्यार्थी सर्वाधिक शक्ति संपन्नता के साथ सही दिशा में उन्नति के पथ पर अग्रसर है , उस देश को पूरे विश्व में अग्रणी होने से कोई भी रोक नहीं सकता। विद्यार्थी जीवन की समस्याओं के समाधान एवं उनकी निरंतर प्रगति में योग की भूमिका महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों की आवश्यकता है–शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक स्वास्थ्य की, जिससे जीवन में निर्धारित प्रत्येक लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि महर्षि पतंजलि कृत यम, नियम आसन, प्रणायाम, एवं ध्यान का अभ्यास एवं हठ योग में वर्णित योगाभ्यास अनुकूल प्रभाव देता है। इससे शरीर क्रियाशील, मन ऊर्जावान एवं बुद्धि तेज होती है। ऊर्जा का संर्वधन होकर सकारात्मक दिशा में क्रियान्वयन होता है। योग के मर्मज्ञ वैज्ञानिक, ऋषि मुनियों–ने मानवीय मन एवं अंतर प्रकृति पर जो प्रयोग किये, उनमें योग विज्ञान में अद्वितीय अम्लय व दर्शनीय है। प्रस्तुत अध्ययन में "द्विसमूह पूर्वपश्चात् – यादृच्छिक समूह अभिकल्प'' की सहायता से आयु नौ से पंद्रह वर्ष के विद्यार्थियों को दो अर्थात् नियन्त्रित तथा प्रयोगात्मक(योग) समूहों में विभाजित किया गया। प्रारम्भिक परीक्षण अर्थात् मोहसिन जनरल इंटेलिजेंस टेस्ट के पश्चात् केवल प्रयोगात्मक समूह को तीन माह तक चयनित योगाभ्यास कराया गया। तीन माह के पश्चात् पुन(योग) परीक्षण करने पर प्रयोगात्मक : समूह के बौद्धिक विकास में सांख्यकीय रूप से सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए जबकि नियंत्रित समूह में कोई अंतर नहीं पाया गया। इससे सांख्यकीय परिकल्पना कि विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास पर नियंत्रित समूह की अपेक्षा प्रयोगात्मक समूह पर चयनित योगान्यास का सार्थक प्रभाव पड़ता है, सिद्ध होती है।

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

मुख्य शब्द: विद्यार्थी, किशोर, ऊर्जा, बौद्धिक, +मनोविज्ञान, योग, हठ योग, मोहसिन जनरल इंटेलीजेंस टेस्ट।

प्रस्तावना: विद्यार्थियों की जीवनयात्रा और वृद्धि एवं विकास की कहानी माँ के गर्भ में आने के साथसाथ शुरू हो जाती है। – वहभी माँ के गर्भ में एक पौधे की तरह छोटे से अंकुर के रूप में अपना जीवन प्रारंभ करता है तथा धीरेधीरे वृद्धि और – जैसे उसकी उम्र बढ़ती है उसमें विभिन्न शारीरिक–विकास को प्राप्त होता रहता है। इस वृद्धि और विकास की मंजिल में जैसे, मानसिक, संवेगात्मक, बौद्धिक और सामाजिक एवं नैतिक परिवर्तन होते रहते हैं। इन सबके आधार पर उसे क्रमश :शिशु, बालक, किशोर, प्रौढ़ तथा वृद्ध आदि कहकर पुकारा जाता है।

मनुष्य के सम्पूर्ण जीवनकाल में विद्यार्थी जीवन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है इस पर ही सम्पूर्ण देश का वर्तमान एवं भविष्य निर्भर करता है। जिस देश के विद्यार्थी सर्वाधिक शक्ति संपन्नता के साथ सही दिशा में उन्नति के पथ पर अग्रसर है ,उस देश को पूरे विश्व में अग्रणी होने से कोई भी रोक नहीं सकता।

तथाकथित आधुनिक युग में मौलिकता एवं सुख–सुविधाए ही लोगो का लक्ष्य बनती जा रही है। ईश्वर की सर्वोतम कृति मानव अपनी बुद्धि का प्रयोग न करके धन, सुख–सुविधा आदि में उलझता जा रहा है और किसी भी कीमत पर औरों से आगे निकलना चाहता है। यह कीमत है शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक स्वास्थ्य संतोष, पारिवारिक सुख–शांति एवं आपसी विश्वास की। वह बाहर से सम्पन्न होते हुए भी अंदर से निस्तेज एवं दुख संताप से ग्रसित है। इस समस्या से सबसे ज्यादा होने वाला वर्ग है विद्यार्थी । यही विद्यार्थी कल के समाज की मजबूत नींव है, इस देश का भविष्य है इसलिए राष्ट्र और समाज का कल वैसा ही होगा जैसा इन बच्चों का वर्तमान है । बौद्धिक विकास की अवस्था अधिकतम विध्यार्थी जीवन में होती है। तर्कपूर्ण चिन्तन, भावनात्मक विवेक तथा एकाग्रता जैसी बौद्धिक विशेषतायें बौद्धिक अवस्था में उत्पन्न होती हैं। इस अवस्था में बुद्धि अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच जाती है। कहा जाता है कि शैशव ऐन्द्रीय–बोध की अवस्था होती है, बचपन स्मरण करने तथा संग्रह करने की अवस्था होती है परन्तु विद्यार्थी जीवन तर्कपूर्ण चिन्तन, विवेकशीलता तथा गहन विचारों की अवस्था होती है। विद्यार्थी तर्क करना सीख जाता है और "प्रत्येक बात में कैसे और क्यों" का वैज्ञानिक उत्तर खोजने लगता है।

बुद्धि एक बहुत ही मुश्किल मानसिक प्रक्रिया है। बुद्धि वास्तव में क्या है, इस पर कोई भी विद्वान एकमत नहीं होता है। । इस शोध कार्य से यह निष्कर्ष निकलता है कि बुद्धि को एक मानसिक योग्यता मान सकते हैं जो नई परिस्थितियों के साथ समायोजन करती है; संबंध तथा सहसंबंध स्थापित करती है। योगाभ्यास विद्यार्थियों में उच्च विचारों को जन्म देता है तथा पुर्वानुभावों से प्राप्त ज्ञानार्जन की क्षमता को बढ़ाता है। योग द्वारा सामान्य बुद्धि का विशेष बुद्धि में परिवर्तन होता है।

शिक्षा जीवन का आधार है जिसके जीवन मे जैसी शिक्षा होती है उसके जीवन का निर्माण भी वैसा ही होता है। स्वामी विवाकनंद, रबीन्द्रनाथ टागोर और महात्मा गांधी के अनुसार –शिक्षा द्वारा बालक का न केवल शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास होता है बल्कि आध्यात्मिक,धार्मिक एवं नैतिक विकास भी होता है जिसे सर्वगीण विकास भी कहते है। आज ऐसे विकास की राष्ट्र स्तर पर आवश्यकता है जिसके लिए विद्यालय स्तर से ही नहीं अपितु अत: शिक्षा के हर स्तर पर योग शिक्षा को सम्मिलित किया जाना उपयोगी होगा । विद्यालयीन शिक्षण प्राणली को सुदृढ़ बनाने मे योग की अहं भूमिका है। शिक्षा के विभिन्न स्तरो पर योग पाठ्यक्रम को आवश्यक रूप से सम्मिलित किया जाना कहिए । योग की उपादेयता जितनी विद्यार्थी के लिए है उतनी ही अध्यापक के लिए भी है । योग शिक्षा से युक्त जीवन का सक्षेप मे अर्थ – शरीर का उपयुक्त व्यायाम, सात्विक आहार, सद्ग्रग्रंथो का अध्ययन और मन पर नियंत्रण है। योगाभ्यास करने वाला व्यक्ति सदाचारी ,

प्रसन्नचित, स्थिर बुद्धि एवं स्वस्थ शरीर वाला होता है। योग एक समग्र एवं पूर्वनिर्धारित अभ्यास है,जिसे अंगीकृत करने पर स्वास्थ्य, व्यक्तिगत विकास और चरित्र निर्माण का मार्ग प्रशस्त होता है । इस विषय पर अनेक शोध कार्य किए गए हैं । उनके विषय संबंधी कार्यो का समीक्षात्मक अध्ययन करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि योगाभ्यास के माध्यम से विध्यार्थियों और किसी भी वर्ग के मनुष्यों के शारीरिक और मानसिक मापदंडों में सुधार तो होता ही है, उनमें उत्पन्न हो रही कई बीमारियों से उन्हे छुटकारा मिलता है । उनका जीवन भी अनुशासित हो जाता है। विध्यार्थियों मे अनुशासन बढ़ने से एकाग्रता में वृद्धि होती है। उन्हें जो भी मानसिक तनाव होता है, वह योग के द्वारा कम या समाप्त हो जाता है। उनके भावनात्मक स्तर मे स्थिरता और बौद्धिक स्तर मे वृद्धि भी होती है। योग विध्यार्थियों के सम्पूर्ण जीवन के विकास मे सहायक है।

शोध अभिकल्प: प्रस्तुत अध्ययन में "द्विसमूह पूर्वपश्चात् यादृच्छिक समूह अभिकल्प-'' की सहायता से योग द्वारा बौद्धिक क्षमता में वृद्धि में आए सुधार को नापा गया है । शोध के समूह के चयन के लिए इसी गुरूकुल में अध्ययनरत 9 से 15 वर्ष तक के किशोर, जो कि कक्षा 6 से लेकर 11वीं कक्षा तक के विद्यार्थी है, का चयन किया गया ।

इस शोध में श्री दर्शन महाविद्यालय, शिवानन्द नगर, मुनिकीरेती (ऋषिकेश(, जिला टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड में अध्ययनरत नौ से पंद्रह वर्ष तक की आयु के सौ विद्यार्थियों का चुनाव किया गया । ये विद्यार्थी समान आर्थिक (Economic), सामाजिक परिवेश (Social) तथा समान शिक्षण संस्थान (Educational Institute) से चुने गए थे । इन्हें यादृच्छिक विधि द्वारा दो अर्थात् नियन्त्रित तथा प्रयोगात्मक (योग) समूहों में द्वारा विभाजित किया गया । अत: यादृच्छिकरण (Randomization) के कारण दोनों समूह समरुप (Homogenous) थे । दोनों समूहों को बहिरंग चरों (Extaneous Variables) के प्रभावों से परीक्षण परिणाम को मुक्त रखा गया तथा विषम संबंधित परिवर्तनशीलता का नियंत्रण किया गया । इस प्रकार शोध कार्य में स्वतंत्र चर का शुद्ध एवं सर्वाधिक परिणाम प्राप्ति का प्रयास किया गया ।

तालिका -1

प्रतिदर्श प्रक्रिया)संख्या (n) =100(

क्रं.	समूह	संख्या (n)	प्रयोग प्रक्रिया	स्वतंत्र चर का प्रयोग
1	प्रयोगात्मक समूह	50	प्रयोगात्मक समूह को लगातार तीन माह तक प्रतिदिन एक घण्टा चयनित यौगिक अभ्यास कराया गया।	योग के चयनित अभ्यासों का प्रयोग
2	नियन्त्रित समूह	50	नियन्त्रित समूह को किसी भी प्रकार की यौगिक क्रियाओं अथवा अभ्यास से मुक्त रखा गया ।	स्वतंत्र चर का प्रयोग नहीं किया गया ।

प्रारम्भिक परीक्षण अर्थात् मोहसिन जनरल इंटेलिजेंस टेस्ट के पश्चात् केवल प्रयोगात्मक समूह को तीन माह तक चयनित योगाभ्यास (अर्थात् स्वतंत्र चर) कराया गया । तीन माह के पश्चात् पुन(योग) परीक्षण करने पर प्रयोगात्मक : समूह के बौद्धिक विकास (अर्थात् आश्रित चर) में सांख्यकीय रूप से सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए जबकि नियंत्रित समूह में कोई अंतर नहीं पाया गया । इससे सांख्यकीय परिकल्पना कि विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास पर नियंत्रित समूह की अपेक्षा प्रयोगात्मक समूह पर चयनित योगान्यास का सार्थक प्रभाव पड़ता है, सिद्ध होती है ।

तालिका –2

शोध अभिकल्प

क्रं.	समूह	पूर्व परीक्षण	स्वतंत्र चर का प्रयोग	पश्चात् परीक्षण
1	प्रयोगात्मक अर्थात् योगाभ्यासी समूह	सभी आश्रित चरों (बौद्धिक विकास का मापन)	योग के चयनित अभ्यासों का प्रयोग	सभी आश्रित चरों (बौद्धिक विकास का मापन)
2	नियन्त्रित समूह	सभी आश्रित चरों (बौद्धिक विकास) का मापन	स्वतंत्र चर का प्रयोग नहीं किया गया	सभी आश्रित चरों (बौद्धिक विकास) का मापन

इस शोध में स्वतंत्र चर (Independent Variable) के रूप में "प्रयोगात्मक समूह'' को निम्नलिखित योगाभ्यास सप्ताह के छः दिन अर्थात् सोमवार से शनिवार के प्रतिदर्श को लगातार तीन महीनों तक एक घंटा (60 मिनट) कराए गए। निम्नलिखित आश्रित चर (Dependent Variable) के रूप में बौद्धिक विकास (Intellectual Development) का मापन किया गया ।

तालिका –3

स्वतंत्र एवं आश्रित चर

स्वतंत्र चर (चयनित योगाभ्यास)	**आश्रित चर** (Dependent Variable)
प्रार्थना (Prayer), सूर्य नमस्कार (Suryanamaskar), आसन (Asana), प्राणायाम (Pranayama), ध्यान (Meditation), शांतिपाठ (Prayer)	बौद्धिक विकास (Intellectual Development)

इस शोध में मोहसिन सामान्य बुद्धि परीक्षण टेस्ट से किया गया जिसमें मौखिक , संख्यात्मक एवं अमूर्त तर्क प्रश्न छः उप–परीक्षणों के रूप में शामिल हैं । प्रत्येक प्रश्न प्रकार को किसी व्यक्ति की संज्ञानात्मक क्षमताओं के एक अलग पहलू का आकलन करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इनके माध्यम से ब्राइटनेस के सूचकांक को मापा जाता है । इस प्रकार मोहसिन जनरल इंटेलिजेंस परीक्षण किसी व्यक्ति की संज्ञानात्मक क्षमताओं के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है, जिसका उपयोग उन्हें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने और अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने में सहायता करने के लिए किया जा सकता है।

मोहसिन सामान्य बुद्धि परीक्षण से किया गया । इस परीक्षण में मौखिक , संख्यात्मक एवं अमूर्त तर्क प्रश्न शामिल हैं । प्रत्येक प्रश्न प्रकार को किसी व्यक्ति की संज्ञानात्मक क्षमताओं के एक अलग पक्ष का आंकलन करने के लिए डिज़ाइन किया

गया है। इनके माध्यम से ब्राइटनेस के सूचकांक को मापा जाता है । इस प्रकार मोहसिन जनरल इंटेलिजेंस परीक्षण किसी व्यक्ति की संज्ञानात्मक क्षमताओं के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है, जिसका उपयोग उन्हें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने और अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने में सहायता करने के लिए किया जा सकता है।

तालिका क्रमांक – 4

मोहसिन सामान्य बुद्धि परीक्षण का डिजाइन

उप –परीक्षण	इकाइयों की कुल संख्या	अधिकतम समय	अधिकतम अंक
1	20	5 मिनिट	20*1=20
2	30	5 मिनिट	30*1=30
3	40	8 मिनिट	40*1=40
4	22	5 मिनिट	22*2=44
5	26	7 मिनिट	26*1=26
6	18	10 मिनिट	18*1=18
योगफल	**156**	**40 मिनिट**	**178** अंक

परीक्षण से प्राप्त आँकड़ों के संग्रहण सम्पादन, वर्गीकरण आदि प्रक्रियाँ सम्पन्न करने के पश्चात् माइक्रोसॉफ्ट एम .एस . एक्सेल शीट में किया गया ।आँकड़ों का सांख्यकीय विश्लेषण सटीक सांख्यकीय विधियों द्वारा किया गया । इसके लिए समूह के अंदर एवं अंतर समूह अर्थात् प्रयोगात्मक और नियंत्रण समूह के बीच के परिणामों की तुलनात्मक समीक्षा की गई । परिणाम को पीमान- (p-Value), एस. डी. आदि के रूप में दर्शाया गया जिससे परिणाम स्पष्ट हो सकें ।

उपपरीक्षणों के तुलनात्मक- अध्ययन से ज्ञात हुआ कि प्रयोगात्मक समूह अर्थात् जिन विद्यार्थियों को तीन माह तक योगाभ्यास कराया गया, उनके उपतक परिणाम सकारात्मक रहे जबकि नियंत्रित समूह में अंतर ज्ञात :परीक्षण एक से छ- नहीं हुए । इसका साक्ष्यउप परीक्षणों-के आंकलन से ज्ञात पी मान से मिलता है-

Independent Samples T-Test

	Test	Statistic	df	p
Scoring	Student	-15.776	98	<.001
	Mann-Whitney	49.500		<.001

Test of Normality (Shapiro-Wilk)

		W	p
Scoring	Control	0.908	<.001
	Experimental	0.944	0.019

Note. Significant results suggest a deviation from normality.

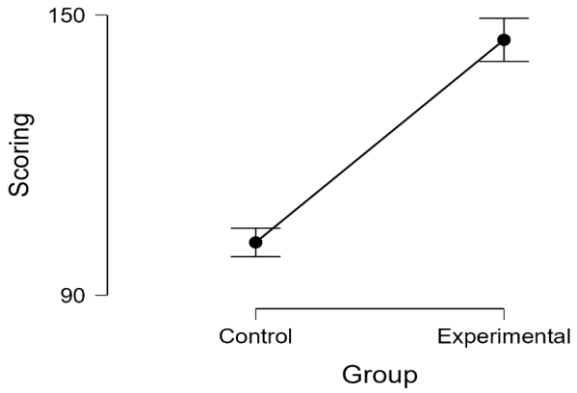

Test of Normality (Shapiro-Wilk)

		W	p
Scoring	Control	0.908	<.001
	Experimental	0.944	0.019

Note. Significant results suggest a deviation from normality.

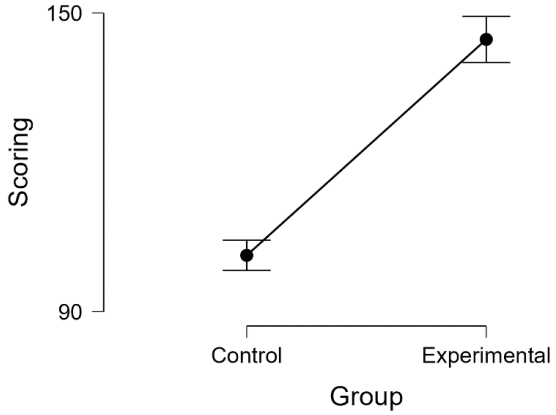

प्रयोगात्मक समूह एवं नियंत्रित समूह के प्राप्तांक की तुलनात्मक विवेचन करने से सिद्ध हुआ कि योगाभ्यास करने वाले विद्यार्थियों में मोहसिन सामान्य बुद्धि परीक्षण के प्राप्तांक में सकारात्मक रूप से वृद्धि आई जबकि नियंत्रित समूह में कोई सकारात्मक परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं हुआ । प्रस्तुत शोध की परिकल्पना कि विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास पर चयनित योगान्यास का सार्थक प्रभाव पड़ता है इस शोध के माध्यम से सिद्ध हुई । पी मान जो कि पाया गया के आधार पर 0.019 भी यही निष्कर्ष निकला कि सांख्यकीय परिकल्पना)Alternate Hypothesis अर्थात् (विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास पर नियंत्रित समूह की अपेक्षा प्रयोगात्मक समूह पर चयनित योगान्यास का सार्थक प्रभाव पड़ता है सही है । यह शोध शहरी अंचल के छात्रों पर किया गया परंतु भविष्य में ग्रामीण क्षेत्रों में पठनरत छात्रों पर भी किया जाना प्रासंगिक एवं तर्कसंगत है । इससे यह लाभ होगा कि शिक्षा में योग जैसा नवाचार केवल शहरों तक ही सीमित न रहकर ग्रामीण क्षेत्रों

में पठनरत छात्रों को लाभान्वित करेगा जिनमें उपस्थित अपार सम्भावनाएं कभी प्रदर्शित नहीं हो पातीं । प्रस्तुत शोध में से ग्यारहवीं तक के पुरुष विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है परंतु भावी शोधार्थी इससे :आयु के कक्षा छ 15 से 9 बालिकाओं को सम्मिलित कर सकते हैं ।–कम आयु के और दोनों बालकसाथ ही शोध में केवल एक स्वतंत्र चर अर्थात् बौद्धिक विकास का मूल्यांकन किया गया है। भविष्य में शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक तनाव, भावनात्मक अस्थिरता आदि मापदंडों को सम्मिलित किया जा सकता है।

अंत में यही निष्कर्ष निकला कि तीन मास तक चयनित योगाभ्यासों अर्थात् सूर्य नमस्कार, आसन, प्राणायाम और ध्यान का विद्यार्थी के बौद्धिक पक्ष पर सकारात्मक रुप से गहरा एवं सार्थक प्रभाव पड़ता है । वास्तव में योग सम्पूर्ण स्वास्थ्य का विज्ञान सम्पूर्ण स्वास्थ्य के अंतर्गत शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक स्तर आते हैं। इन स्तरों पर परस्पर तालमेल एवं समन्वय ही मनुष्य को आत्मिक आनन्द का अनुभव कराता है।

संदर्भ ग्रन्थ:

1. अरविन्द, श्री, योग के तत्व, श्री अरविन्द सोसायटी, पांडेचेरी, 1990
2. अरविन्द, श्री, योग के आधार, श्री अरविन्द सोसायटी, पांडेचेरी 1990
3. अरविन्द, श्री, योग के प्रारंभ श्री अरविन्द सोसायटी, पांडेचेरी 1990
4. आयंगार, बी.के.एस., योग दीपिका, ओरियन्ट लांग मैन लिमिटेड, दिल्ली,1999
5. आयंगार, बी.के.एस., प्राणायाम, ओरियन्ट लांग मैन लिमिटेड, दिल्ली, 1999
6. आयंगार, बी.के.एस., लाइट ऑन पातंजल योग,ओरियन्ट लांग मैन लिमिटेड, दिल्ली, 1999
7. आलम, श्रीवास्तव, शर्मा, तिवारी, आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, मोती लाल बनारसीदास, दिल्ली,1997
8. उपाध्याय, आर्यन, बल विकास तथा मनोविज्ञान, वन्दना पब्लिकेषन, नई दिल्ली, 2006
9. ओमानन्द तीर्थ, स्वामी, पातंजलयोगप्रदीप, गीताप्रेस गोरखपुर, 1988
10. कुवल्यानन्द, स्वामी, योगासन, कैवल्यधाम श्रीमन्माधव योग मंदिर समिति लोनावला, 1997
11. कुवल्यानन्द, स्वामी, प्राणायाम, कैवल्यधाम श्रीमन्माधव योग मंदिर समिति लोनावला, 1997
12. कुवल्यानन्द, स्वामी, आसन, कैवल्यधाम श्रीमन्माधव योग मंदिर समिति लोनावला, 1997
13. कुवल्यानन्द, स्वामी एवं विनेकर, एस.एल., यौगिक चिकित्सा, कैवल्यधाम श्रीमन्माधव योग मंदिर समिति लोनावला,1994
14. क्रमवेलकर, पी.बी., पातंजल योग सूत्र, कैवल्यधाम श्रीमन्माधव योग मंदिर समिति लोनावला, 2005
15. गौतम एवं चमन लाल, योग विज्ञान, संस्कृत संस्थान, पटना1986
16. गेमनका, हरिकृष्ण दास, योगदर्षन, गीता प्रेस, गोरखपुर,1966
17. घोष, श्याम, द ओरिजनल योगा, मेतीलाल बनारसीदास, दिल्ली,1994
18. जायसवाल, भारतीय मनोविज्ञान, आर्य बुक डिपो, दिल्ली,1986
19. जैन, एम.के., शोध विधियाँ, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली,2013
20. तिवारी,ओ.पी., आसन क्यों और कैसे, कैवल्यधाम श्रीमन्माधव योग मंदिर समिति लोनावला, 2005

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 5
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/ SHISRRJ236517

The Impact of Human Resource Information Systems : An Exploratory Study in Selected Private Firm

Ms. Priyanka Patel
Assistant Professor, Drs. Kiran and Pallavi Patel Global University, Waghodia, Gujarat, India

Article Info
Publication Issue :
September-October-2023
Volume 6, Issue 5
Page Number : 63-87
Article History
Received : 01 Sep 2023
Published : 20 Oct 2023

ABSTRACT
A system for the management of human resources can have a significant impact on employees and various aspects of their work experience within an organization. HRIS is a software solution that combines human resource management and information technology to streamline HR processes and improve overall efficiency. HRIS can have a beneficial or bad impact on employees, depending on how technology is introduced and used.
Keywords : Human Resource, Human Resource Information System, HRIS

Introduction

Human Resources Information System, or HRIS is a software that that collects, stores, processes, and retrieves employee information quickly in a secure and cost-effective manner. It is the integration of HR operations and information technology. Human resource information systems (HRIS) have significantly improved an organization's efficiency in today's dynamic business environment and era of knowledge workers. Human resources (HR) professionals can learn a lot from HRIS in order to become strategic partners with top management and meet the company's future needs. The HRIS coordinates to utilize the HR capabilities in a more proficient way and gives better data to navigation. The Human Resource Information System, or HRIS, is a methodical way to store data and information about each individual employee. This helps with planning, making decisions, and sending reports and returns to outside agencies. An organization's human resources information can be gathered, stored, and analyzed using integrated HRIS systems.

It consolidates HRM as a discipline and specifically its essential HR exercises and cycles with the data innovation field. It can be used to keep track of things like employee profiles, absence reports, salary administration, and a variety of reports. In the world of business, it is one of the most important HR practices.

As a result, HRIS has developed into a system that stores information about every aspect of human resources, including an employee's salary, medical care, education, family, qualifications, personal, performance, and career evaluation, and training and development. All of these records can be viewed on a single screen with

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

assurance of reliability using HRIS. Additionally, reports with numerous parameters can be easily created and modified. The day-to-day HR processes are handled by HRIS, paperwork is cut down, and employee data is kept up to date.

1.1 Features of HRIS

Using an HRIS has number of benefits. This tool is used by businesses of all sizes to support their people operations. Midway, the HRIS holds representative data. An extensive variety of representative information is then effectively open, in one framework.

1. **Data storage:** a Human Resource Information Systems (HRIS) is a system that records any employee-related changes. The HRIS should be available as the single source of truth for personnel data.
2. **Compliance:** Compliance demands the collection and storage of some data. This contains information for identifying employees in the event of stealing, defrauding, or other misconduct, as well as information for identifying residents for the tax office and mandatory certification expiration dates. This information can also be used to identify employees in the event of an accident. The HRIS can save all of this information. Data must be stored in a safe and secure manner, according to the General Data Protection Regulation (GDPR).
3. **Efficiency:** Having all of this data in one place improves precision as well as the duration of recovery. Some companies still store a lot of personnel information on paper. Selecting the right folder and document might take up a lot of staff work.
4. **Human Resources Framework:** The HRIS grants the following of information expected to propel the HR and business system. Contingent upon the needs of the association, various information will be fundamental for track. The HRIS excels in this area.
5. **HR Self Service:** A last advantage is the capacity to offer self-administration HR to workers and directors. Employees are given this ability to handle their own affairs. At the point when done well, the HRIS can offer a decent representative encounter. Keep in mind that not every HRIS system makes this easy to use.

1.2 Functions of HRIS

I here are various types of systems for HRIS and software. Because a Human Resources Information Systems includes all HR functionalities, all individual functionalities are included in the system. Among these features are:

1. **Candidate monitoring system (CMS):** This software handles the company's whole recruiting process. It helps recruiters match openings for employment with qualified candidates from the company's application pool, monitors candidate information and resumes, and guides the hiring process.
2. **Payroll:** Employee pay is automated with payroll. This system frequently receives contractual data and information on new hires, sometimes in conjunction with time and attendance data, and at the end of each month, payments orders are created.
3. **Benefits administration:** One more usefulness of the HRIS is it benefits the board. Worker benefits are a

significant part of pay and are additionally overseen in this framework. An employee self-service model for employee. Benefits are provided by more advanced systems. For this situation, workers can choose the advantages they are searching for themselves. One might want more paternity leave, while the other might want a company car that costs more. A cafeteria model is another name for this benefit self-service model.

4. **Time & Attendance:** This module collects employee time and attendance data. These are particularly applicable for shift laborers where workers clock in and out. In the past, employees frequently recorded their working hours on paper. Then, the chief would physically enter the information into a period global positioning framework. Payment orders were created and distributed to all employees based on this information. Nowadays, employees frequently use a card or fingerprint to check into work. This provides an accurate arrival and departure time. It is simple to identify any issues with lateness.
5. **Training :** When it comes to employee management, one of the most important aspects is education and training. This module permits HR to follow capability, affirmation, and abilities of the representatives, as well as a blueprint of accessible courses for organization workers. When used independently, this module is frequently referred to as an LMS, or Learning Management System. Employees typically have access to e-learning and other courses through an LMS.
6. **Performance management:** One important part of managing people is performance management. Execution evaluations are created once or on various occasions a year by the immediate director or companions of the representative.
7. **Succession planning:** Making an ability pipeline and having swaps accessible for key jobs in the association is one more key part of a HRIS.
8. **Employee self-service:** It is becoming increasingly important for businesses to encourage employees and direct supervisors to manage their own data. Holiday requests can be made by the employee themselves. After endorsement, these are then promptly saved into the framework (and enrolled to follow for finance and advantages purposes).
9. **Reporting & Statistics:** The HRIS analysis and reporting components Systems are far more uncommon. Thanks to contemporary systems, automated HR reports on a number of issues such as employee turnover, absenteeism, performance, and more are now possible. Analytics entails the study of these insights for better decision-making.

1.3 Type of Information needed in HRIS

Fig 1.4 : Type of Information

In addition to information from their internal environment, organizations need information about their human resources and how they work. Along these lines, HRIS permits us to gather, store, control, break down, recovered, and appropriate data from inside and outer climate.

Human Resources Information System in an organization should be designed in such a way that the data stored in it can be used for a variety of purposes. Because of these many information goals, there is a need to nurture a comprehensive means of social event, data management, and data streaming.

Several examples of information that is included in HRIS and is gathered from HR departments or the surrounding environment:

- Information about the employee (name, age, qualifications, etc.);
- Sort of employee hired throughout the year;
- Provided development and training;
- Outcomes of the performance review;
- Advancement, downgrade, move, division of workers;
- Financial and non-financial compensation packages are provided;
- Employee turnover and absenteeism;
- Support, wellbeing and wellbeing administrations;
- Accessibility of HR from various sources;
- Facilities for training and development outside the organization are available;
- Expectations from the organization regarding human resources.

1.4 Types of HRIS

Fig 1.5 : Types of Human Resource Information System

1. **Operational HRIS:** HRIS functions that help stakeholders perform certain operations are commonly referred to as Operational HRIS. For example, information kept on software about every staff member enables the management and the organization to locate them in order to carry out particular activities, such as locating individuals in the proper location within the organizational structure. Access to performance data for management and evaluation is also included in the Operational HRIS.
2. **Tactical HRIS:** The processes that managers use to make decisions about how to use resources are taken care of by tactical HRIS. This includes acquiring, job and design evaluation, training for staff members, and the organization's salary and benefits. All of these actions, which are carried out with the assistance of Tactical HRIS, require information about personnel, available jobs within the business, and so on.
3. **3. Strategic HRIS:** Strategic HRIS is used when a company wants to strategically expand or grow. Strategic human resource information systems (HRIS) aid in workforce planning and keep employees informed of available resources for labor.
4. **Comprehensive HRIS:** Comprehensive HRIS is a greater amount of all that engaged with HR activities, including the over three kinds. It goes about as a joined stage with all HR records, representative data, open positions, recruiting and work subtleties, work examination and configuration documents, rules records on representative security, and so forth., It goes about as a spot with all data that can be created whenever to play out any activity.

1.5 Types of HRIS Software

1. **QUIKCHEX:** Quikchex is a human resource management system (HRMS) that is affordable, easy to use, and highly configurable. It was created for Indian businesses with 20 employees or fewer to corporations with more than 2000 employees. The fact that they offer vertically integrated services like Payroll Outsourcing and Compliance Management, both of which seamlessly integrate with their HRMS software, sets them apart from the majority of the other options on this list. They are an all-around option in the market because they provide a mobile application and on-demand account managers who can assist you at any time.

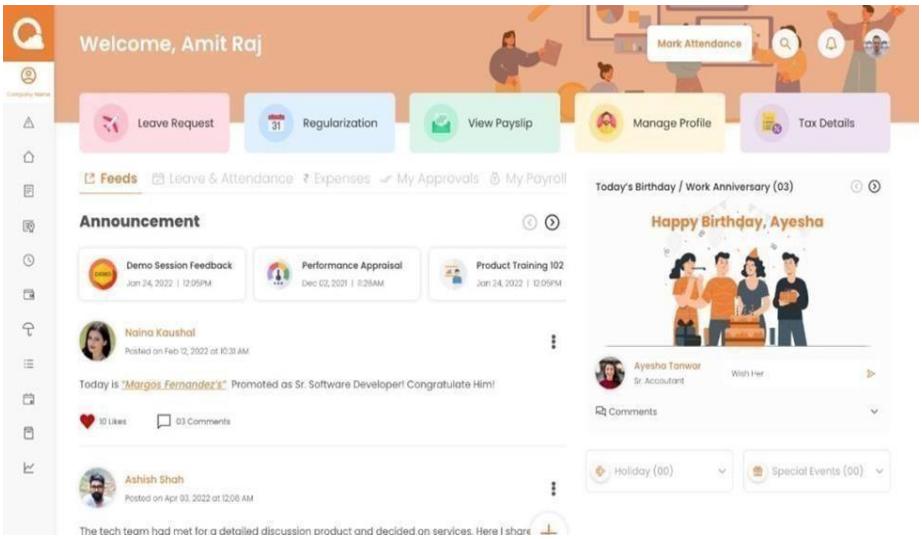

Fig 1.6.1 : Quikchex

2. **GREYTHR:** One of India's oldest HR software solutions for small to medium-sized businesses is GreytHR. They make it possible for users to manage employee data and reports and access them quickly. Because they do not provide niche HRMS modules like PMS and Recruitment, which the majority of growing businesses require as they scale, it may not be suitable as you scale further.

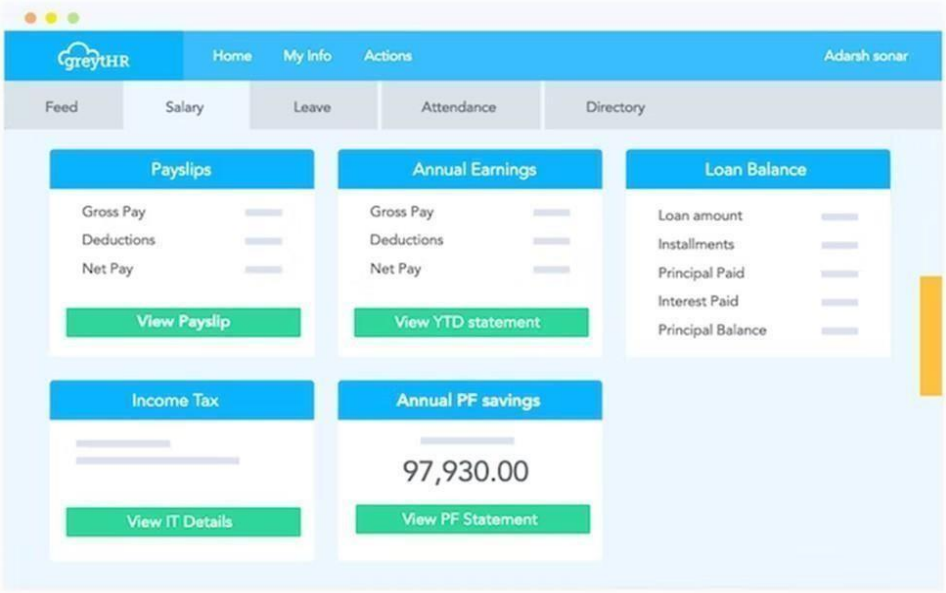

Fig 1.6.2 : GreytHR

3. **DARWINBOX:** In India, Darwin Box is a leading end-to-end HRMS platform for large businesses' intricate business requirements. It is a great alternative to SAP or Workday, two other enterprise-level HCM tools, and it provides its users with a comprehensive HR solution that includes tools like the applicant tracking system and rewards and recognition. Additionally, Darwin Box has a high price tag, making it difficult for most small and medium-sized businesses to afford.

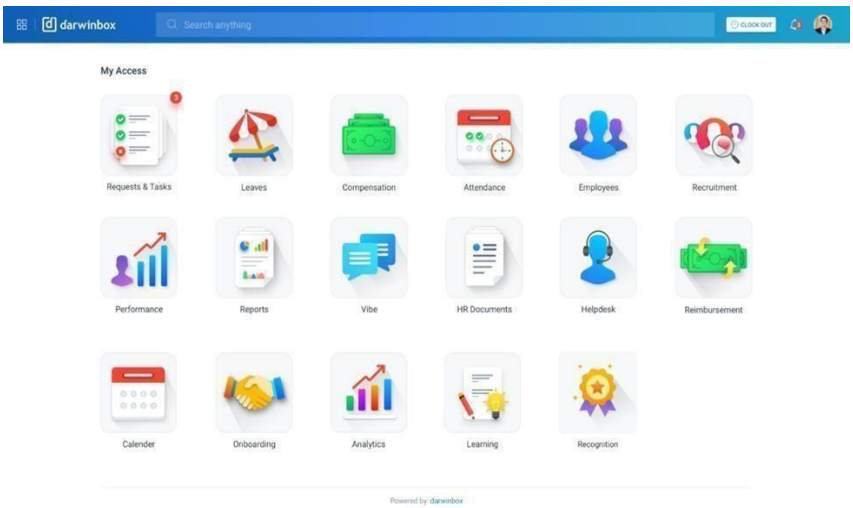

Fig 1.6.3 : Darwinbox

4. **KREDILY:** Kredily is a digital HR workspace in India for small and medium- sized businesses. With highlights, for example, kredily's 'welcome' and 'reach', numerous applications like groups, and other specialized instruments can be effectively supplanted by this HR Programming. They likewise give a payout door arrangement known as 'KREDPAY' which is coordinated into their HRMS. However, this tool does not include many modules, such as PMS, Timesheets, or other fundamental features.

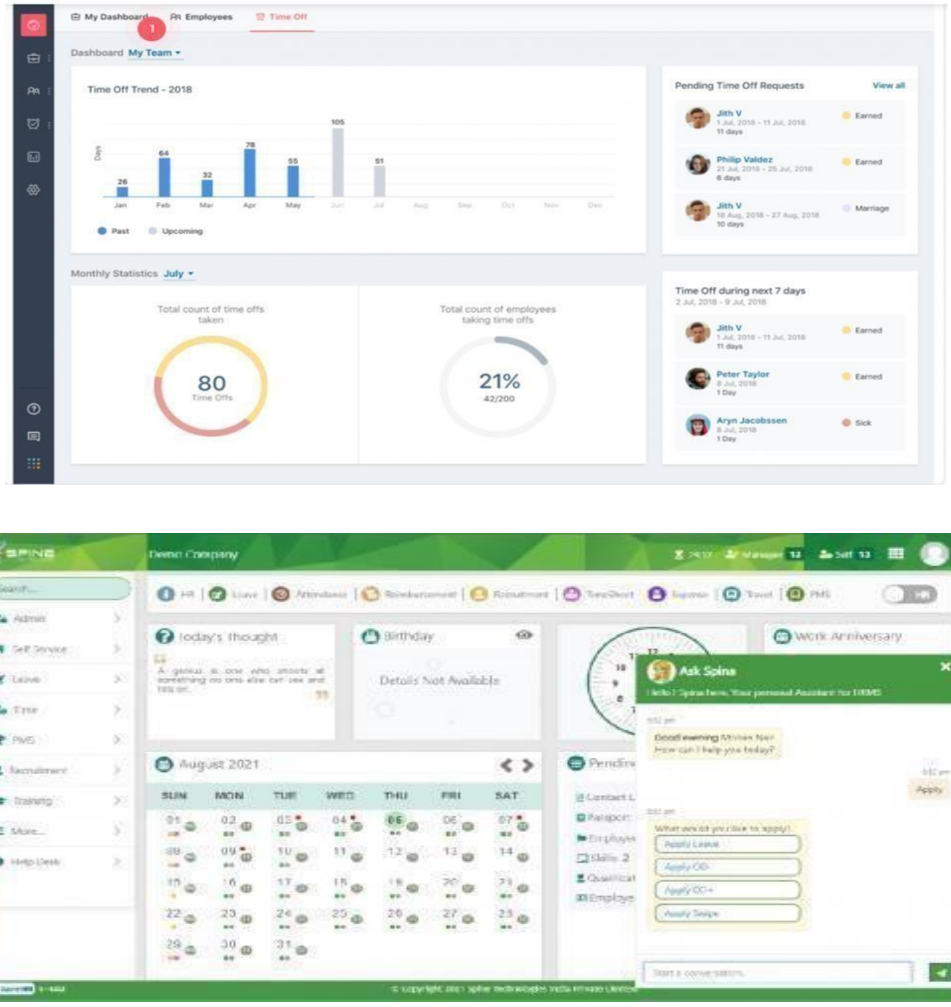

Fig 1.6.5 : SpineHR

5. SPINE HR : Spine HR is one of the more established players in India's HR technology market. They have proven to be a dependable payroll management tool and have primarily been a desktop-based solution. However, Spine HR can be a very complicated tool in a cloud-based environment with a user interface that many modern businesses would struggle to adapt to.

6. RAYZORPAYX Payroll : Razorpay entered the Indian payroll market by purchasing Opfin, a payroll gateway provider for a number of years. Users of Razorpay can take advantage of their comprehensive payroll automation solution, but the company does not offer a full-featured HRMS with modules like attendance tracking, PMS, and other functions due to the fact that it is still in its infancy.

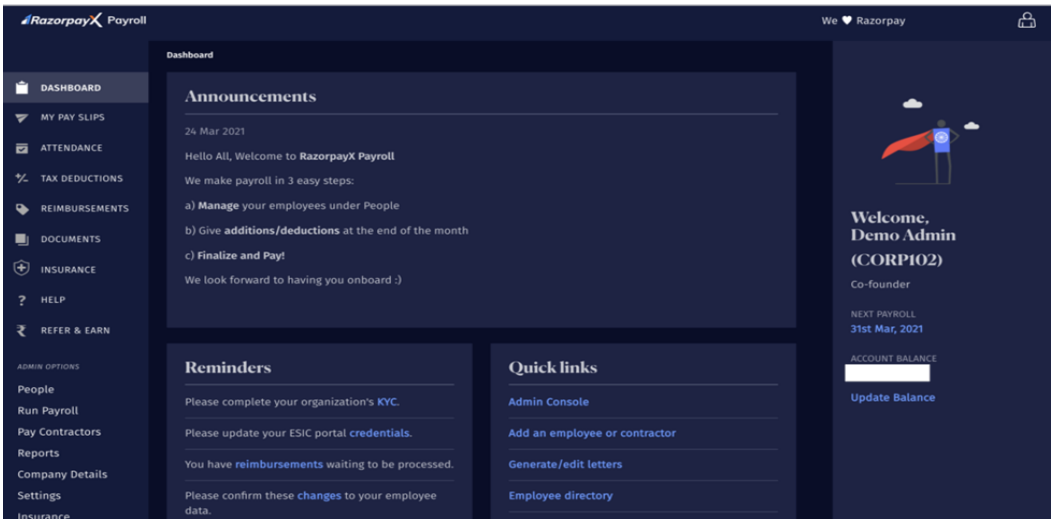

Fig 1.6.6 : Rayzorpayx Payroll

7. HR ONE : HR One, similar to any remaining programming applications this rundown, covers each of the major modules, for example, finance, leave following, reports, etc. They offer a mobile application that is easy to use and lets users configure more than 50 tasks while on the go.

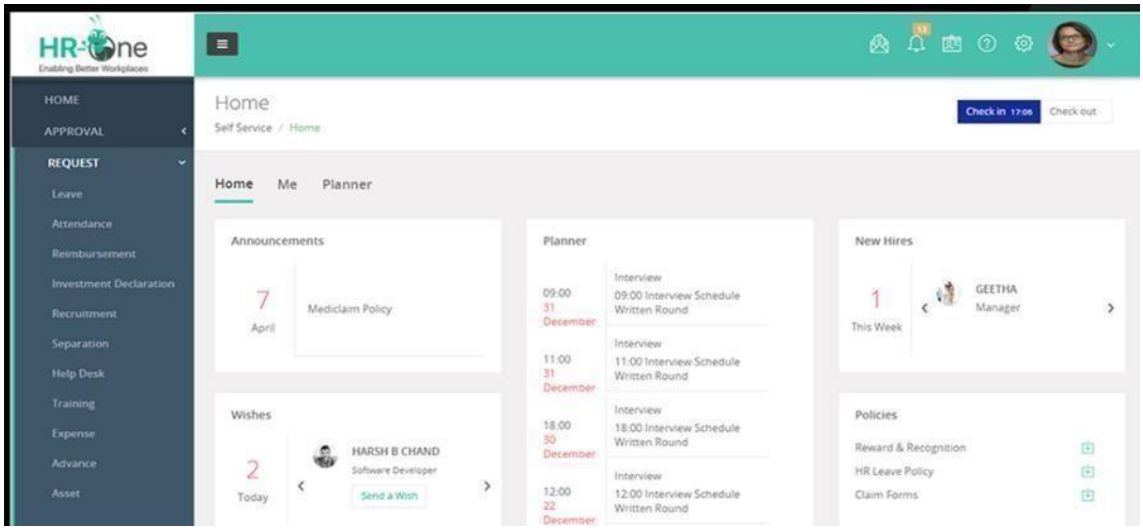

Fig 1.6.7 : HR One

1.6 HRIS implementation in 6 steps

There are several steps to software implementation

1. **Search:** Find out the requirements that each of your stakeholders have for an HRIS before you begin your implementation. You can compile a list of potential service providers on the basis of these prerequisites. You can then welcome these suppliers to make proposition. Ideally, you will have selected a suitable HRIS provider by the end of this phase.
2. **Plan and Align:** In this stage, you pick an execution accomplice, make a controlling council and an execution group. The internal project manager, senior delegates from your chosen HRIS provider, the HR director from your organization, and, ideally, a senior user from your business (optional) make up the steering committee. The execution group's fundamental obligation is chipping away at the everyday assignments that emerge from the execution.
3. **Define and design:** As of now, you really want to determine your client gatherings and guide out your cycles and work processes. Identify the security, system, and functional requirements for your HRIS infrastructure. Also keep in mind that this phase may require you to integrate your HRIS with other systems that are already in place.
4. **Configure and test:** You must establish a core test team during this phase to test your new HRIS and provide suggestions for enhancements. After this, you ought to likewise make a client acknowledgment test, where you can getvarious clients to give feedback.
5. **Train and communicate:** You will need to prepare a training program for your technical staff, a communication plan, a page with frequently asked questions, and other support documents before the Go-live moment.
6. **Deploy and sustain:** When all your help processes are set up, you can authoritatively send off your HRIS. Keep in mind that you should update your training materials to reflect the changing systems and collect feedback on a regular basis. Constant, accurate communication is key here.

2. About the Organization

Fig 2.1 : Company Logo

Techno Electromech Pvt. Ltd. (previously Techno Trade, founded in 1988) founded TECHNO LEDTM in 2008. They began with five employees and have now grown to employ over 300 people in India, U.S and

China. They are one of the major names in the field of LED luminaries, known for their robust setups, growing and rapidly changing technology, satisfied customers and exclusive product range. Since their establishment have been creating history, step by step. Their headquarters at Vadodara consolidates manufacturing, R & D, engineering design and product management along with offices situated at prime locations. They have their representatives in New Delhi, Dubai & Atlanta (USA). They are a proud family owned company which extends their family values into their customer and employee relationship. They work closely with their valued clients, giving each their prompt and efficient solutions and services for any specific requirement. Today, TECHNO LED™ is synonymous to the term trust, because of their team's effort to make a significant difference in the industry. They are proud that their customer are contented. With great pleasure, they want to thank their proficient team and customers for their encouragement and trust. Without them their journey would have been achievable.

LITERATURE REVIEW

1. Andre Petit and Victor (1997)

According to one author, computer-based HRIS workers want to understand how individual/task, organizational, and system conditions interact with one another. For system success, two measures are used: individual/task and organizational circumstances, size, availability of internal user assistance, and organizational computer experience. Third would be conditions engagement, training, support, documentation, and application development. According to the study's findings, conditions were discovered to be the most significant drivers of success.

2.Asoke and Sathiyanarayana (2007)

An author analyzed the challenges an organization faced when implementing HR technology. Association required application arranged programs like HR entry SAP HR Module that coordinates all areas of business. The HR Portal and the Employee Self Service (ESS) Module will function as a single-entry point for personalized and customized information.

3.John Edwards (2008)

An author suggested that HRMS accelerates HR activities by streamlining processes, reducing errors, collecting more data, enhancing budgeting, facilitating access, enhancing distribution, reducing duplication, enhancing security, facilitating better hires, facilitating compliance, and raising employee morale.

4.K P Tripathi (2011)

An author analyzed the role that management information systems (MIS) in human resources and created an MIS model to maintain control over how employees work at different levels. Birla Corporation Ltd. tried the system, and it helped them make good decisions about recording and capturing human resource attendance.

5. Obeidat, Bader Yousef (2012)

An author investigated the relationship between Human Resource Information Systems (HRIS) and Human Resource Management (HRM). It was determined that human resources functionalities are related to performance development, knowledge management, and records and compliance as dimensions of human resources information systems.

6.Dr. Shikha N. Khera and Ms. Karishma Gulati (2012)

An author made research on Human Resource Information System and its impact on Human Resource Planning: A perceptual analysis of Information Technology companies and concluded that HRIS identifies occupied and unoccupied positions in an organization very effectively and accurately.

Aim of study:

1. To comprehend why HRIS is necessary for contemporary companies.
2. Understanding the Human Resources Information System apps and tools.
3. To comprehend the advantages of HRIS.
4. Learn about several forms of HRIS software. To learn how to implement HRIS in an organization.
5. To understand the applicability of different software's.
6. To develop the system that will evaluate and rank employee's performance.
7. To reduce paper management of employee's records.

Scope of Study

HRIS has become exposed as a product bundle which gives selective highlights which helps the HR experts to fix, sort and adjust their information assets. Most organizations use this tool for data tracking, data information requirements, and data entry. HRIS stage can be used by any HR proficient for putting away and gathering significant information, further developing work quality and for smooth work process and in this way, it brings savvy and subjective arrangements by opportune controlling and dealing with the undertakings, supervising and continuous portion of assets to support the organization as well as the representatives.

This project's overall goal is to get extensive analysis and knowledge regarding the effective and efficient use of HRIS.

However, some possible areas of scope that could be included in such a report are:

1. HR information and communication system.
2. Implementation and adaption.
3. Data analysis and reporting.
4. Future trends and development.

Research Design

In my research I have used descriptive and exploratory research for data analysis.

Collection of Data

Primary data : The primary data collection method used for carrying out this research is questionnaire.

Secondary data : The secondary data collection method used for carrying out this research is Internet, Case Studies, Literature reviews, Articles etc.

Sampling Design & Size

Sampling Design : Convenience sampling

In convenience sampling, the sample consists of individuals who are most accessible to the researcher.
Sample Size : 25

Data Collection Instruments :
For this research I have used questionnaire with the help of Google forms as our data collection tool.

Data Interpretation :
1.Does your organization currently have a Human Resource Information System (HRIS)?
Table 1.1 : Data representing responses whether organization currently have a Human Resource Information System (HRIS)

Opinion	No. of Employees	Percentage (%)
Yes	25	100
No	0	0

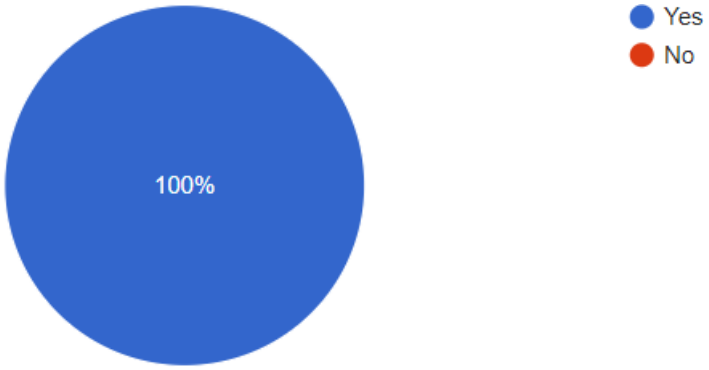

Fig. 1.1: Graphical representation of responses

ANALYSIS:

Based on the facts presented above, we can conclude that all respondents agree that their organization is currently using HRIS.

2. How long have your company been using Information System?

Table 1.2 : Data representing responses of time period since company usingInformation System

Opinion	No. of Employees	Percentage (%)
Less than 2 years	7	28
2-5 years	6	24
5-8 years	8	32
8-10 years	4	16

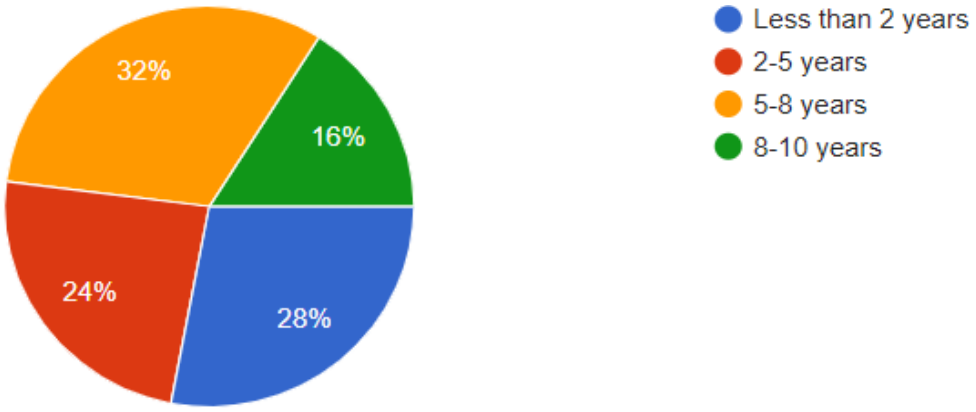

Fig. 1.2: Graphical representation of responses Analysis

Here we received 50-50% opinions where we can say that around 50% of respondents states that there company has been using HRIS since 5-10 years while others states that there organization has recently installed HRIS.

3.What functions does your HRIS support? (Select all that apply)

Table 1.3 : Data representing responses of the functions that HRIS support

Opinion	No. of Employees	Percentage (%)
Performance management	21	84
Training and development	12	48
Recruitment and applicanttracking	16	64
Payroll and benefits management	22	88
Inventory management	12	48

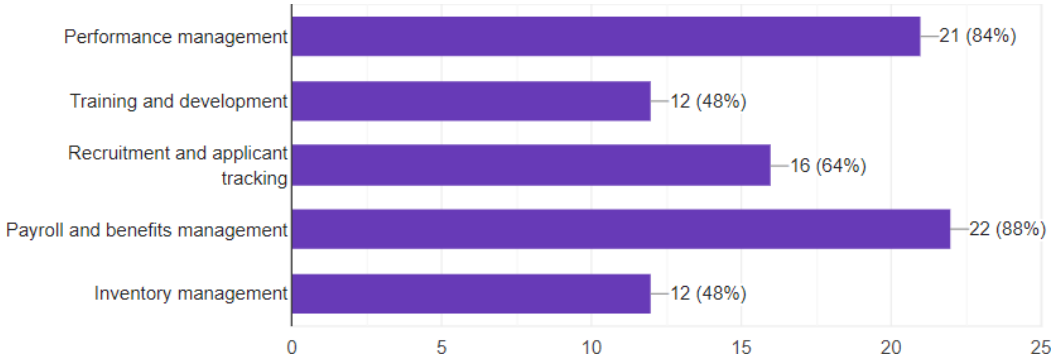

Fig. 1.3 : Graphical representation of responses

INTERPRETATION

From the above data we can interpret that there is a mixed opinions from the respondents in which around 80% of respondent's states that there HRIS performs multiple operations while 20% of respondents' states that there HRIS supports specific activities like training & development and inventory management.

4. How does your HRIS support HR activities in your organization?

Table 1.4 : Data representing responses of the HR activities supported by HRISin organization.

Opinion	No. of Employees	Percentage (%)
It helps to increase employee andsatisfaction	3	12
It enhances compliance with legal and regulatory requirements	3	12
It improves accuracy and efficiency inHR processes	3	12
All of the above	16	64

Fig. 1.4: Graphical representation of responses

Interpretation: -

From the above data we can say that 64% of respondents agrees that there HRIS supports multiple HR activities while 36% respondent's states that there HRIS performs only specific operations like compliance with legal regulations as well as helps in increasing employee satisfaction and their working accuracy.

5. What are some limitations or challenges with your current HRIS? (Select all thatapply)

Table 1.5 : Data representing responses of limitations of HRIS.

Opinion	No. of Employees	Percentage (%)
Limited customization options	14	56
Lack of integration with other organizational systems	9	36
Resistance to change fromemployees	10	40
High implementation and maintenance costs	3	12

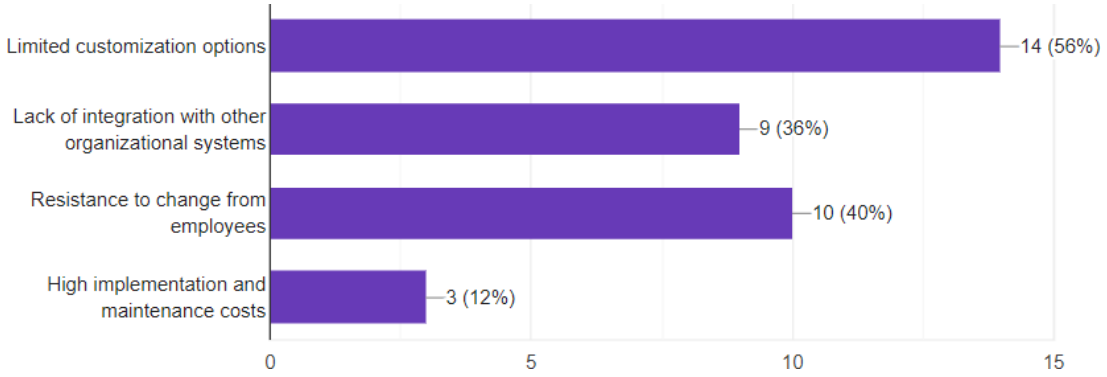

Fig. 1.5 : Graphical representation of responses

1) Interpretation

From the above data we can say that there are some limitations to HRIS installed in an organization. Majority of respondents states that it has limited customization options and difficult to integrate with other organizational system while few respondents states that some systems has high implementation and maintenance cost.

6.What security measures are in place to protect confidential employee informationwithin your HRIS?

Table 1.6 : Data representing responses regarding security measures taken toprotect confidential employee information.

Opinion	No. of Employees	Percentage (%)
Access controls and user authentication	7	28
Encryption of sensitive data	1	4
Regular backups and disaster recoveryplanning	4	12
All of the above	14	56

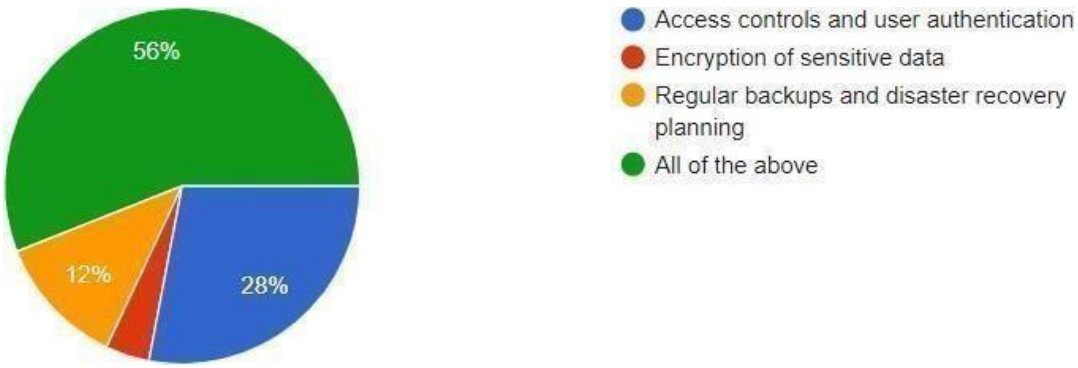

Fig. 1.6 Graphical representation of responses

1) Interpretation: -

From the above data we got to know the types of security measures provided by HRIS to protect confidential employee information. From statistical data we also determined the % of each security measures to which employees accept more.

7. Does HRIS help your firm to get rid of mistakes or erroneous problems?

Table 1.7 : Data representing responses of whether HRIS help to get rid ofmistakes.

Opinion	No. of Employees	Percentage (%)
Yes	12	48
No	2	8
Maybe	11	44

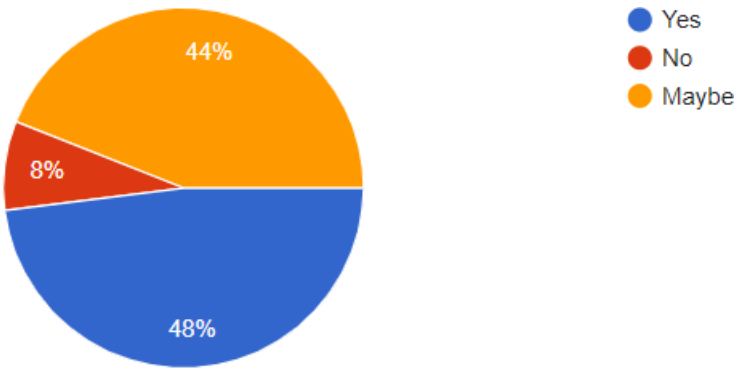

Fig. 1.7 Graphical representation of response

2) Interpretation

From the above data we can reveal that in majority of % HRIS can help respondentsto solve enormous problems and prevent them from making mistakes.

8. Do you considered upgrading or replacing your current HRIS?

Table 1.8: Data representing responses of whether to upgrade or replacecurrent HRIS.

Opinion	No. of Employees	Percentage (%)
Yes	8	32
No	12	48
Maybe	5	20

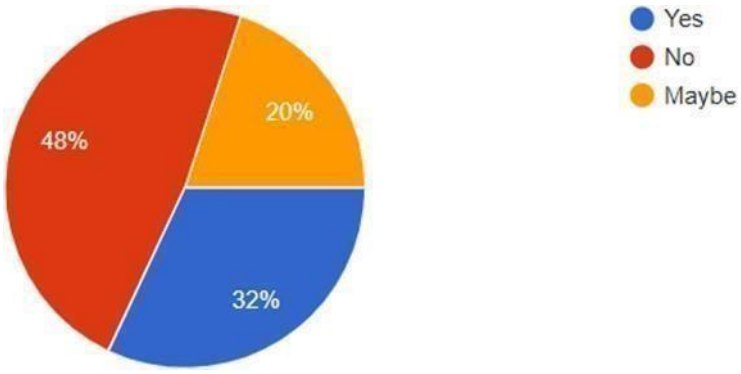

Fig. 1.8 Graphical representation of responses

3) Interpretation: -

From the above data we can interpret that 48% of respondents doesn't want to upgrade their HRIS while rest 52% of respondents reveals that it would be great if there HRIS get replaced or upgraded and will them to perform their jobs more efficiently.

9.What key features would you like to see in an ideal HRIS? (Select all that apply)

Table 1.9 : Data representing responses regarding key features that HRISshould support.

Opinion	No. of Employees	Percentage (%)
Mobile accessibility	13	52
Customization options for HR processes	14	56

Real-time reporting and analytics	20	80
Integration with other organizational systems	10	40

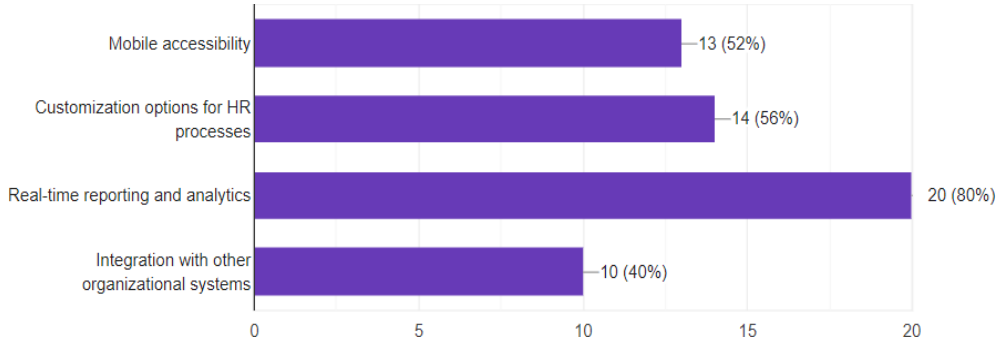

Fig. 1.9 Graphical representation of responses

4) Interpretation: -

From the above data we can disclose the key features that respondents would like to see in their HRIS. We received a mixed opinions where 80% of respondents want real time processing and analytics while 20% would go easy mobile accessibility and customization options.

10.What factors influence the decision to upgrade or replace your HRIS? (Select allthat apply)

Table 1.10 : Data representing responses regarding the factors that influence toupgrade or replace HRIS

Opinion	No. of Employees	Percentage (%)
Poor user adoption and satisfaction	7	28
Need for new features and functionality	17	68
High implementation and maintenance costs	9	36
Lack of integration with other organizational systems	4	16

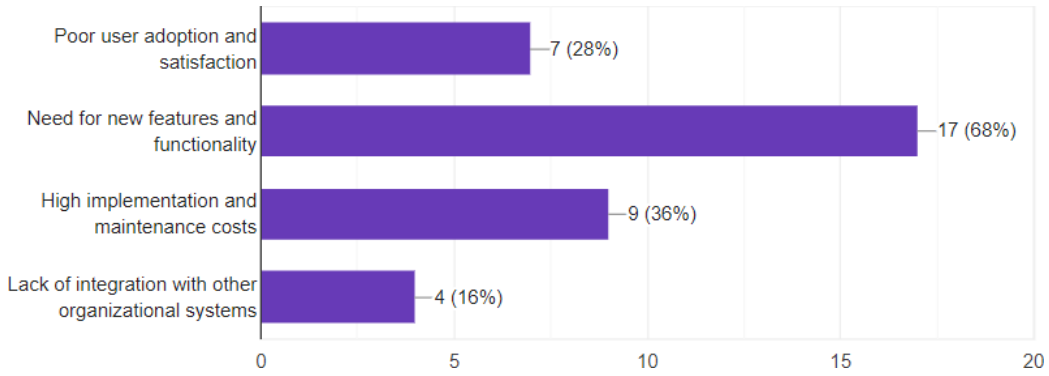

Fig. 1.10 Graphical representation of responses

5) **Interpretation**: -

From the above data we can determined the factors that influence the respondents to replace or upgrade their HRIS. To meet the changing demands of market easily technological upgradation is necessary and majority of respondents want their HRIS with new features that can help them to perform their jobs effectively as well as such systems that requires less maintenance.

11.Does the HRIS provide the customers with updated information in a quickinterval?

Table 1.11 : Data representing responses that whether HRIS supports customers.

Opinion	No. of Employees	Percentage (%)
Yes	21	84
No	4	16

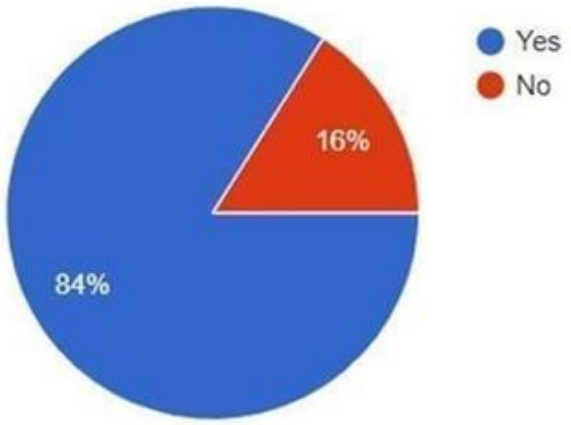

Fig.1.11 Graphical representation of responses

6) Interpretation: -

From the above data we can say that with proper use of HRIS an organization canconstantly provide their customers with updated information.

12. Current HRIS systems support life cycle updates (confirmation, transfer, promotion, and leave) as well as comprehensive workflow-based cycles based on employee type (Gig, Fulltime, Contractual).

Table 1.12: Data representing responses regarding common features supportedby HRIS.

Opinion	No. of Employees	Percentage (%)
Yes	12	48
No	3	12
Partial features are available	10	40

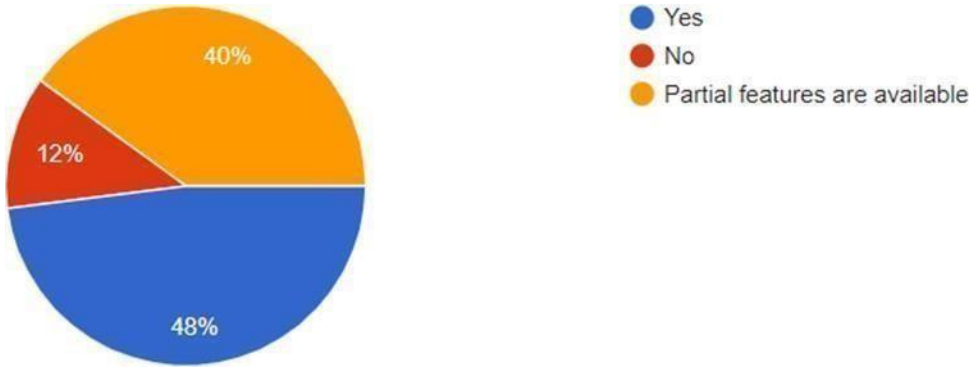

Fig. 1.12 Graphical representation of responses

7) Interpretation: -

From the above data we can determine the respondents answers regarding commonfeatures supported by HRIS.

13.Does your organization provide any sort of assistance/training to you?

Table 1.13: Data representing responses regarding whether organizationprovide assistance or training.

Opinion	No. of Employees	Percentage (%)
Yes	20	80
No	5	20

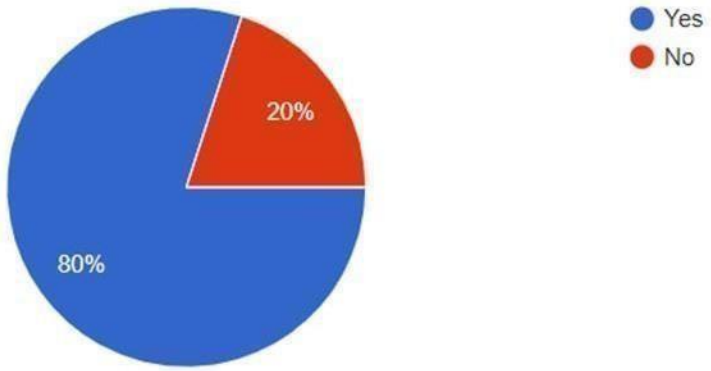

Fig. 1.13 Graphical representation of responses

Analysis:

Based on the statistics shown above, we can conclude that 80% of respondents agree that their organization gives training to ensure proper comprehension of HRIS, whereas 20% disagree.

14.What kind of training and support is provided to you by your organization toensure that you can use your HRIS effectively?

Table 1.14: Data representing responses regarding types of training provided byorganization.

Opinion	No. of Employees	Percentage (%)
Initial training on how to use the system	5	20
Ongoing training to keep employees up to date onnew features and processes	5	20
Help desk or support resources for technical issues	2	8
All of the above	13	52

Fig. 1.14 Graphical representation of responses

8) Interpretation: -

From the above data we can interpret that there is a mixed opinions regarding types of training. 52% of respondent's states that their organization provides all types of training while 20% each state that their organization support them through initial training and ongoing training to keep them up to date.

15.What changes in your working speed do you see after using HRIS in yourorganization?

Table 1.15 : Data representing responses regarding changes in working speed ofrespondents.

Opinion	No. of Employees	Percentage (%)
Increased	9	36
Increasing	15	60
Decreased	1	4

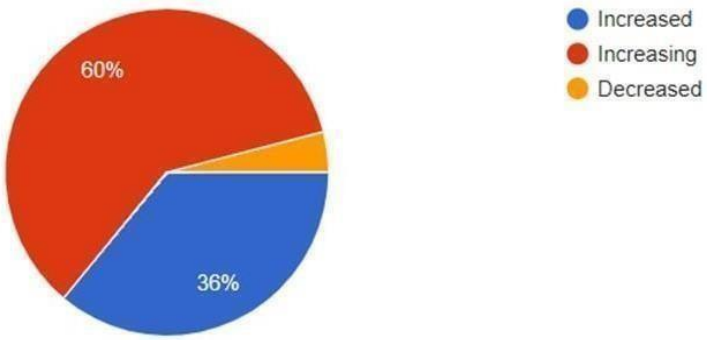

Fig. 1.15 Graphical representation of responses

9) Interpretation: -

From the above data we can determined that 60% of respondents reveals that their working speed has been increasing after using HRIS and 36% feels that their speed and efficiency has already been increased.

Findings:

- The Human Resource Information System, which consolidates employee data and other relevant records, was developed as a result of this study. The developed system was used to manage, validate, and maintain employee data, including personal, educational, employment, and learning development interventions and training programs.
- A HRIS server can be installed locally or online. Employees will be granted user access to update employee records, track leave credits and benefits, submit online applications for leave of absence, and stay informed about activities and announcements. Direction and user trainings will be led with individuals from the organization to acclimate the work force to the use of the HRIS.
- All of the IT and HR professionals who evaluated the system gave the HR system's functionality an excellent rating.
- For the course of execution, the created framework was planned to be utilized in view of the requirements of the association's Human Asset capability. The framework - data sources and cycles for public or confidential association/office can be integrated into the HRIS framework.

Conclusion:

- The Human Resources Information System is critical for any good organization to ensure effective people management and, as a result, gain a competitive advantage in the corporate sector. • Business owners should view it as an investment rather than an expense. If this method is followed meticulously, it will assure the growth of people' competencies while also providing the organization with a competitive advantage. The investigation of human resource information systems is a useful step toward the advancement of human resource information systems and their practices. Having such a sophisticated understanding will also allow you to create more understandable human resource information system apps.
- Therefore, the importance of HRIS and its usage in HR processes has emerged as an important module for discussion, debate and research among all information technologists, management thinkers, corporate giants and host of others who are using HRIS for gaining a competitive advantage in various domains of HR processes especially in software companies.

Reference:

1. Al Doran, (2003).,Protecting our HR systems from Disaster, HR Professional pp 39-40.
2. Amy Trappcy (2002).,Human Resource Assignment System for Distribution Centers, Industrial Management Data Systems. Vol 102, pp 64-72

3. Andrew Winthorp (2002),Importance of A Human Resource System to an organization, Website: http://EzineArticles.com/?expert=Andrew_Winthorp.
4. Anthony.M.,(2003),Toensed Human Resources and Information Technology, Journal of Labor Research Vol XXIV.
5. Armstrong.M (1984)., A Handbook of Personnel Management Practice,2nd edition, Kogan Publisher Ltd, pp 47-48
6. Armstrong.M.(1994).,Using the HR Consultant: Achieving results, adding values, IPM, pp 23.
7. Arthur Yeung (1995)., Reengineering HR through Information Technology, Human Resource Planning, Vol.18,pp12-17.
8. Asoke and Sathiyanarayana (2007).,E-Enable HR Management,IIPM Intelligence Unit Publication India, pp 46-55.
9. Aston Beadles (2005)., Impact of Human Resource Information System: An Exploratory Study in the Public Sector, Communication of the IIMA,Vol.5, Issue.4.pp39-46.
10. Astrid M (2002).,A DSS classification model for research in human resource information systems, Journal of information Systems Management,Vol.19, No.3, pp 41-50.
11. Awazu,Yukika.,Desouza, Kevin .C.,(2003) Knowledge Management, HR Magazine,48(11), p107.
12. Bader Yousef Obeidat,The Relationship between Human Resource Information System (HRIS) Functions and Human Resource Management Functionalities,Journal of Management Research,4,(4).
13. Baran.M.,Karabulut,E.,Semercioz.F.,Pekdemir,I.(2002).,The new HR practices in changing organizations: an empirical study in Turkey, Journal of European Industrial Training,Vol.26 No.2/3/4,pp.81-7.
14. Beckers.A.M.,Bsat.M.Z.(2002).,A DSS classification model for research in human resource information systems,Journal of Information Systems Management,19,3,pp 41–50.
15. Bill Robert (1999).,Who's change in of HRIS, HR Magazine Vol 3 pp 23-26
16. Boudreau.John.W.(1991).,the evolution of computer use in human resource management: interviews with ten leaders, Journal of Human Resource Management,Vol.30 issue 4,pp 485-508.
17. Brijesh Kapil (2007).,Focused Approach by Leveraging IT in HR,IIPM Intelligence Unit Publication India,12 pp 17-18.
18. Brown.David.,(2002).,eHR-Victim of Unrealistic Expectations, Canadian HR Reporte,Vol15, pp 1- 6.
19. Buckley,Kathleen,Joy.,Michaels (2004).,The use of an automated employment recruiting and screening system for temporary professional employees: A case study" Journal of the Intersection of Information Technology and Human Resource Management,Vol 43 Issue 2-3, pp 233-241
20. Carole Tansley and Sue Newell, (2009).,"A Knowledge-based View of Agenda-formation in

the Development of Human Resource Information Systems",.Management Learning, Vol.38, No.1, pp 95-119.

21. Carole Tansley and Tony Watson,(2000).,Strategic exchange in the development of Human Resource Information Systems (HRIS),New Technology,Work and Employment, Vol 15 Issue 2,pp 108-122.

Cite this Article

Ms. Priyanka Patel , "The Impact of Human Resource Information Systems : An Exploratory Study in Selected Private Firm", Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal (SHISRRJ), ISSN : 2581-6306, Volume 6 Issue 5, pp. 63-87, September-October 2023.

URL : https://shisrrj.com/SHISRRJ236517

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : **www.shisrrj.com**
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 5
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

गीतवीतरागेऽलङ्कारविमर्श:

जगदीश नस्कर
शोधच्छात्र:, अनुसन्धानप्रकाशनविभाग:, सहायकाचार्य:, सर्वकारीयशिक्षाशास्त्रमहाविद्यालय:, सहायकाचार्य:, गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ एजुकेशन, वाणीपुरम्, पश्चिमबङ्ग:।

Article Info
Publication Issue :
September-October-2023
Volume 6, Issue 5
Page Number : 88-94
Article History
Received : 01 Sep 2023
Published : 29 Sep 2023

सारांश: - संस्कृतकाव्येषु गीतिकाव्यानामुच्चस्थानं वर्तते। गीतिकाव्येषु अन्यतमं वर्तते श्रीजयदेवेन विरचितं श्रीगीतगोविन्दम्। श्रीगीतगोविन्दस्य साहित्यकला – नैपुण्यमतीवसमृद्धं वर्तते। राधाकृष्णयो: प्रेमकथाधारेणएतत्काव्यं विरचितमस्ति। परवर्तिनि समये श्रीगीतगोविन्दगीतिकाव्यमाधारीकृत्य अनेकानि काव्यानि विरचितानि। एतेषु अन्यतममस्ति अभिनवचारुकीर्तिपण्डिताचार्येण विरचितं “गीतवीतरागगीतिकाव्यम्” वा “बाहुवलिस्वाम्यष्टपदी”। एतदेकं जैनकाव्यं भवति। अस्य काव्यस्य कर्ता अभिनवचारुकीर्तिपण्डिताचार्य: । काव्यमिदं सौन्दर्यशास्त्रदृष्ट्या सकलसहृदयहृदयग्राह्यं भवति। अत्र कविना सन्निवेशिता: अलङ्कारा: प्रतिपदमपूर्वं झङ्कारं सृजन्ति। शोधपत्रेऽस्मिन् अलङ्कारसिद्धान्तपरिशीलनपुरस्सरं केषाञ्चन अलङ्काराणां विचार: क्रियते ।

कूटशब्दा: – अलङ्कार:, उपमा, रूपकम्, उत्प्रेक्षा, सन्देह:, दृष्टान्त:, परिकर:, उल्लेख:, सङ्कर:, संसृष्टि:, गीतवीतराग:, अभिनवचारुकीर्ति: ।

अलङ्कारा: रसोपकारका: भवन्ति। काव्येऽलङ्कारस्य प्राधान्यं दण्डिना स्वीकृतम्। भामहाचार्य: कथयति– “न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनिताननम्”[1] इत्युद्घोष्यालङ्कारस्यैव सर्वाधिकमहत्त्वं प्रतिष्ठापयामास। आचार्येण आनन्दवर्धनेनापि भामहस्य मतं समर्थयता उक्तं यत्–“यत: प्रथमं तावदतिशयोक्तिगर्भा सर्वालङ्कारेषु शक्यक्रिया कृतैव च सा महाकविभि: कामपि काव्यच्छविं पुष्यतीति कथं ह्यतिशययोगिता स्वविषयौचित्येन क्रियमाणा सती काव्ये नोत्कर्षमावहेत्”[2] इति । अलङ्कारसम्प्रदायसमर्थकाचार्येण दण्डिना उक्तं –

[1].भा.का.अ. – 1/13
[2].ध्वन्या – 3/37 कारिकायाम्

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

काव्यशोभाकरान् धर्मानलङ्कारान् प्रचक्षते ।

ते चाद्यापि विकल्प्यन्ते कस्तान् कात्स्न्र्येन वक्ष्यति ।।[3]

एतदेवोक्तं पीयूषवर्षजयदेवेनापि –

अङ्गीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलंकृती ।

असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलंकृती ।।[4]

अग्निपुराणे अर्थालङ्कारशून्या सरस्वती विधवा इव प्रतिभाति इति प्रतिपाद्य काव्येऽलङ्कारस्य महत्त्वमङ्गीक्रियते। यथा – "अर्थालंकाररहिता विधवैव सरस्वती"[5] इति । वक्रोक्तिजीवितकारेण कुन्तकेन स्वीकृतं यत् –

अलंकृतिरलंकार्यमपोद्धृत्य विवेच्यते ।

तदुपायतया तत्त्वं सालङ्कारस्य काव्यता ।।[6]

एतेषां विनिवेशने कविः जागरूकः भवेदिति ध्वन्यालोककारः आनन्दवर्धनः कथयति । यथा –

रसाक्षिप्ततया यस्य बन्धः शक्यक्रियो भवेत् ।

अपृथग्यत्ननिर्वर्त्यः सोऽलङ्कारो ध्वनौ मतः ॥

ध्वन्यात्मभूते शृङ्गारे समीक्ष्य विनिवेशितः ।

रूपकादिरलङ्कारवर्ग एति यथार्थताम् ॥[7]

साहित्यदर्पणकारो लिखति – **"उत्कर्षहेतवः प्रोक्ताः गुणालङ्कार-रीतयः"**[8] इति । काव्ये रसो भवति आत्मा, अलङ्काराः कटककुण्डलादिवद् भवन्ति । यथा देहद्वारेण अङ्गद्वारेण वा कटककुण्डलादयः अलङ्काराः अङ्गिनः आत्मनो वा उपस्कारकाः भवन्ति, तथैव शब्दार्थद्वारा अनुप्रासाः उपमादयः अलङ्काराः उपस्कारकाः भवन्ति । एतेषां शब्दार्थालङ्काराणम् औचित्यपूर्णं विनिवेशनं स्यात् । ध्वन्यालोककारः लिखति –

शृङ्गारस्याङ्गिनो यत्नादेकरूपानुबन्धवान् ।

सर्वेष्वेव प्रभेदेषु नानुप्रासः प्रकाशकः ॥

---

[3].काव्यादर्शः – 2/1

[4].चन्द्रालोकः – **1/8**

[5].अ.पु. – 343/12

[6].वक्रोक्तिजीवितम् – 1/6

[7].ध्वन्यालोकः – 2/16–17

[8].सा.द. – **1/3**

ध्वन्यात्मभूते शृङ्गारे यमकादिनिबन्धनम् ।

शक्तावपि प्रमादित्वं विप्रलम्भे विशेषतः ॥[9]

प्रकृतकाव्ये अलङ्काराणां समुचितविन्यासः विहितः प्रतिभाति। काव्येऽस्मिन् शान्तरसः प्रधानः वर्तते। अपि च शृङ्गारोऽपि अत्र वर्णितः। एतयोः रसयोः पोषकतायाम् अनुप्रासाः विघ्नकराः इत्युच्यन्ते । किन्तु श्रीजयदेवस्य श्रीगीतगोविन्दे यथा अनुप्रासानां यमकानां बाहुल्यं दृश्यते न तथा अन्येषु काव्येषु। अपि च तत्र शृङ्गारः प्रधानः रसः। ध्वन्यालोककारस्य मतेन अनुप्रासः शृङ्गारे परिहर्तव्यः इति। अनुप्रास–शृङ्गारयोः मिश्रणस्य श्रीगीतगोविन्दस्य प्रसिद्धिः यथा वर्तते, तथैव तत्र शृङ्गाररसास्वादोऽपि भवति । तत्र अनुप्रास एव शृङ्गारं द्योतयति । अत्र विचार्योऽयं विषयो यत् अनुप्रासः द्विविधः – कठोरानुप्रासः, कोमलानुप्रासश्च । ओजोव्यञ्जकवर्णानां महाप्राणादि– वर्णानाम् अनुप्रासः कठोरः, अपि च प्रसादगुणगुम्फितः माधुर्यदायकः अनुप्रासः कोमलः । कोमलानुप्रासः प्रायशः सर्वेषु गीतिकाव्येषु प्राप्यते ।

प्रकृतकाव्ये गीतवीतरागे कोमलानुप्रासः बहुधा प्राप्यते । यथा –

चण्डकिरणविधुमण्डलवियदिव कुण्डलिस्रववयुगभासम् ।

पिण्डितशशिसरसिजसमशुभगुणमण्डितवदनविलासम् ॥[10]

अत्रान्त्यानुपासः, छेकानुप्रासः, लाटानुप्रासः वर्णितः । एवं प्रत्येकमपि गीतं गीतवीतरागे अनुप्रासविमण्डितं वर्तते । शृङ्गाररसे अस्योदाहरणं यथा –

सुललितचन्दनपल्लवसङ्गमकोमलकमलसमीरे,

अलिकुलविमिलितकोकिलकूजितमेरुनिकुञ्जकुटीरे ।

व्यहरदतिसुरभिभरितवसन्ते,

नर्त्तनसक्तजनेन समं निजविरहिसुरस्यदुरन्ते ॥[11]

अत्र अन्त्यानुप्रासः, श्रुत्यनुप्रासः अपूर्वसाङ्गीतिकमूर्च्छनां संसृज्य शृङ्गाररसास्वादे सहयोगं करोति ।

एवम् अनुप्रासं विहाय नैके उपमा, रूपकम्, अतिशयोक्तिः, उत्प्रेक्षा प्रभृतयः अर्थालङ्कारा अपि अत्र प्रयुक्तास्सन्ति । कानिचनोदाहरणानि अत्र प्रस्तूयन्ते ।

उपमालङ्कारस्योदाहरणं यथा – गीतवीतरागस्य तृतीयप्रबन्धे प्रथम– श्लोके – **"इष्वाकारगिरौ"** इत्यत्र इषुः उपमानम्, गिरिः उपमेयः, आकारः साधारणधर्मः । इवेति उपमावाचकः शब्दः लुप्तस्तस्मात् लुप्तोपमायाः इदमुदाहरणम् ।

तथैव "शशधरसितसौधे"[12] इत्यस्मिन् वाक्यांशे शशधरः उपमानम्, सौधम् उपमेयः, सितत्वं साधारणधर्मः । इवेत्युपमावाचकः लुप्तः । तस्मात् लुप्तोपमायाः इदमुदाहरणम् ।

---

[9].ध्वन्यालोकः – 2/14–15

[10].गी.वी.रा.– 19/गी.1/प.3

[11] .तत्रैव – 3/गी.1–प.1

विरोधालङ्कारस्योदाहरणं यथा –

इन्दुर्घर्मकरायते प्रियतमे वायुश्च हीरायते

लेपोऽपि ज्वलनायते कुसुमसन्मालाहि जालायते ।

आवासो गहनायते स्मरवशाद्देहोऽपि कारायते

हा कष्टं पतिविप्रयोगसमयः संवर्तवेलायते ।।[13]

अस्मिन् उदाहरणे इन्दोः साधारणगुणः शीतलतं किन्तु अत्र घर्म– करौष्ण्यगुणस्य, तथैव वायोः, चन्दनलेपस्य, कुसुममालायाः, आवासस्य च विरुद्धधर्माः क्रमः हीरायते, ज्वलनायते, जालायते, गहनायते इत्येतेषां प्रतिपादनात् विरोधालङ्कारो भवति । अस्य लक्षणमुच्यते साहित्यदर्पणे –

जातिश्चतुर्भिर्जात्याद्यैर्गुणो गुणादिभिस्त्रिभिः ।।

क्रिया क्रियाद्रव्याभ्यां यद्द्रव्यं द्रव्येण वा मिथः ।

विरुद्धमिव भासेत विरोधोऽसौ दशाकृतिः ।।[14]

दृष्टान्तोपमालङ्कारयोः संसृष्टिः यथा –

सुकविविमलबुद्धिश्श्लिष्टमर्थं वृणोति

सुनयविहितराज्यं श्रीरवाप्नोति यद्वत् ।

नलिनसुभगनेत्रे मेलयिष्यामि तद्वत्

पतिमिह तव कन्ये ! मा कृथास्त्वं विषादम् ।।[15]

अस्मिन् उदाहरणे प्रथमांशे – सुकवेः विमलबुद्धिः श्लिष्टमर्थं वृणोति, सुनयविहितं राज्यं श्रीः अवाप्नाति इति उच्यते । तथैव द्वितीयवाक्ये – हे कन्ये! तद्वत् अहं तव पतिं त्वया सह मेलयिष्यामि इति उल्लिख्यते । अत्र – बुद्ध्या साकं श्लिष्टार्थस्य वरणम्, सुनयविहितराज्येन साकं श्रियः प्राप्तिः इति उपमानांशस्य राज्ञा साकं कन्यायाः मेलनं नामोपमेयवस्तुनः बिम्वप्रतिबिम्ब–भावः प्रकाश्यते। अतः– **"चेद्बिम्बप्रतिबिम्बत्वं दृष्टान्तस्तदलङ्कृतिः"** [16] इति कुवलयानन्दोक्तदृष्टान्तलक्षणाधारेण अत्र दृष्टान्तो नामालङ्कारः ।

अपि च अस्मिन् श्लोके "नलिनसुभगनेत्रे" इति पद्ये नलिनमुपमानम्, नेत्रम् उपमेयम्, सुभगत्वं सौन्दर्यं वा साधारणधर्मः, इवेत्युपमावाचकलुप्तः। तस्मात् लुप्तोपमायाः अपि इदमुदाहरणम्। एवमत्र दृष्टान्तोपमायाः संसृष्टिः ।

---

[12].गी.वी.रा.–4/श्लो.2

[13].तत्रैव – 4/श्लो.3

[14].सा.द. – 10/67–68

[15].गी.वी.रा. – 5/1

[16].कुवलयानन्दः – का.52

परिकरानुप्रासयो: संङ्करोऽलङ्कारस्योदाहरणं यथा –

गत्वा तमभ्येत्य सुरेन्द्रलीलं

महाबलं भोगसुखातिलोलम् ।

उदग्रसौधाग्रगतं सुशीलं

ददर्श मन्त्री प्रतिबोधार्थम् ।।[17]

अत्रान्त्यानुप्रास:, तथा सुरेन्द्रलील–सुशीलादिविशेषणानि सार्थकानि इतिकृत्वा परिकरालङ्कार:। साहित्यदर्पणे उक्तं च परिकरलक्षणम् – **"उक्तैर्विशेषणैस्साभिप्रायै: परिकर: मत:"**[18] इति । यथा च –

गतभवमिलितां तां वज्रदन्तात्मजातां

विरहदहनदग्धां श्रीमतीं प्रौढकान्ताम् ।

त्वदभिगमनलीनालोचनं प्रार्थ्यमानां

सपदि सुभग ! गत्वा खण्डितां रक्ष भूप ! ।।[19]

अत्र नायिकाया: प्रत्येकमपि विशेषणं साभिप्रायमस्ति । अत: परिकर: ।

अपि च –

तं दृष्ट्वा चिरमाकलय्य पुलकव्याप्ताङ्गयष्टिर्मुदा

तुष्टावेति निजात्मरक्षणपरा तां पण्डितां श्रीमती ।

दुग्धक्षीरकुचप्रवेशनिपुणे ! स्त्रीरूपसन्धारित-

प्रज्ञे ! कौशलभूमिके ! मम पतेरन्वेषणे तत्परे ! ।।[20]

अत्रापि सख्या: कृते दुग्धक्षीरकुचप्रवेशनिपुणे, स्त्रीरूपसन्धारितप्रज्ञे, कौशलभूमिके इति उक्तानि विशेषणानि पते: अन्वेषणरूपकार्यस्य सफलतायै साभिप्रायाणि भवन्ति । अत: परिकरालङ्कार: ।

अपि च –

मेरोरुत्तरदिक्स्थिते कुरुवरक्षेत्रे सुभोगाकरे

जायेते स्म हि दम्पती सुरसमौ बालार्कचञ्चत्प्रभौ ।

केयूरप्रमुखोद्भभूषणधरौ सुव्यक्तवाग्भूषणौ

---

[17].गी.वी.रा. – 1/2

[18].सा.द. – 10/57

[19]. गी.वी.रा. – 6/1

[20].गी.वी.रा. – 7/श्लो.3

पूर्वोपार्जितपुण्यपाकजनितान् भोगान् अभुक्तान् सदा ।।

अस्मिन् उदाहरणे अनुप्रासः, उपमा, परिकरः इति त्रयाणाम् अलङ्काराणां सङ्करः दृश्यते। उत्तरदिक्स्थिते, जायेते इत्यन्त्यानुप्रासे एकधा साम्यम् । जनितान्, भोगान्, अभुक्तान् इत्यत्रान्ते बहुधा साम्यम् । मेरोः, उत्तरदिक्, कुरुवरक्षेत्रे, सुभोगाकरे, केयूरप्रमुख-भूषणधर इत्यादिषु शब्देषु रेफस्य बहुधा साम्यम् । तस्मादनुप्रासः ।

तथैव - दम्पत्योः कृते प्रदत्तानि सुरसमौ, बालार्कचञ्चत्प्रभौ, इद्धभूषण- धरौ, सुव्यक्तवाग्भूषणौ इत्यादीनि सर्वाणि विशेषणानि भोगानुकूल-तया साभिप्रायाणि सार्थकानि च । अतः परिकरालङ्कारः ।

तथैव, बालार्कचञ्चत्प्रभौ इत्यनेन बालार्कः उपमानम्, तौ दम्पती उपमेयौ,चञ्चत्प्रभत्वं साधारणधर्मः, इवेत्युपमावाचकः लुप्तः, अतः लुप्तोपमा ।

एवं प्रकारेण अनुप्रास-उपमा-परिकराणामत्र संसृष्टिः वर्तते ।

रूपकालङ्कारस्योदाहरणं यथा -

विद्याव्याप्तसमस्तवस्तुविसरो विश्वैर्गुणैर्भासुरो

दिव्यश्रव्यवचःप्रतुष्टनृसुरस्सद्ध्यानरत्नाकरः ।

यः संसारविषाब्धिपारसुतरो निर्वाणसौख्यादरः

स श्रीमान् वृषभेश्वरो जिनवरो भक्त्याऽऽदरान् पातु नः ।।[21]

अस्मिन् श्लोके "संसारविषाब्धिपारसुतरः" इत्यस्मिन् पदे संसारस्योपरि विषाब्धेः आरोपणात् रूपकालङ्कारः । एवमेव,

इत्थं सुरोक्तं सकलं विधाय

स श्रीधरस्तत्र सुखाब्धितीर्णः ।

च्युत्वा ततः पूर्वविदेहभूमौ

पुत्रः पवित्रस्सुविधिर्बभूव ।। [२] **।।**[22]

अत्र सुखाब्धितीर्णः इत्यस्मिन् पदे सुखस्योपरि अब्धेः आरोपणाद्रूपकं नामालङ्कारः । एवं नैकत्र शान्तरसानुकूलरूपकालङ्कारः विविक्षितः कविना स्वीयपद्येषु, शृङ्गावर्णनासन्दर्भे च शृङ्गारोचितपदानि । तथैव "स्वयंप्रभावक्त्रसरोजभृङ्गः"[23]इत्यत्र स्वयंप्रभायाः मुखस्योपरि सरोजस्य आरोपणात्, तथैव च स्वयंप्रभायाः पत्युः उपरि भृङ्गस्यारोपणात् रूपकालङ्कारः ।

उत्प्रेक्षालङ्कारस्योदाहरणं यथा –

---

[21].गी.वी.रा. - 1/1

[22].तत्रैव - 10/2

[23].तत्रैव - 3/2

तत्रैव चैत्यालयपट्टशाला-

मध्यासितं विभ्रममानसं तम् ।

व्योमावतीर्णं त्विव वज्रजङ्घं

सा पण्डिताऽपीत्थमुवाच वाणीम् ।।[24]

वज्रजङ्घं व्योमावतीर्णमिव ददर्श इत्युत्प्रेक्षते ।

उल्लेखालङ्कारस्योदाहरणं यथा –

गुरुर्विधाता गुरुरेव दाता

गुरुः स्वबन्धुर्गुणरत्नसिन्धु :।

गुरुर्विनेता गुरुरेव तातो

गुरुर्विमोक्षो हतकर्मपक्षः ।।[25]

अत्र एकः गुरुः विधाता, दाता, स्वबन्धुः, गुणरत्नसिन्धुः, विनेता, तातः, विमोक्षः, हतकर्मपक्षश्चेति इत्येवं प्रकारेण बहुधा उल्लिखितः । अतः –

क्वचिद्भेदाद्ग्रहीतृणां विषयाणां तथा क्वचित् ।

एकस्यानेकधोल्लेखो यः स उल्लेख उच्यते ।।[26]

इति साहित्यदर्पणोक्तलक्षणाधारेणात्रोल्लेखालङ्कारः ।

एवमन्येऽप्यलङ्काराः तत्र श्रीगीतवीतरागेऽस्मिन् विलसन्ति । अत्र दिङ्मात्रमेवादृहतम् । शोधार्थिभिः अन्यैरस्योपरि स्वतन्त्रां गवेषणां कर्तुं प्रभविष्यन्ति ।

सहायकग्रन्थसूची

1. गीतवीतरागः – सम्पादक डा.आ.ने.उपाध्ये, भारतीय ज्ञानपीठ,1972
2. काव्यप्रकाशः –सम्पादना ड.विपदभञ्जन पाल,संस्कृत पुस्तक भाण्डार, कलकाता।
3. साहित्यदर्पणः – व्याख्याकारः आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी,चौखम्वा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी ।
4. रसगङ्गाधरः – व्याख्याकारः डा. रामाधार शर्मा,भारतीय बुक कार्पोरेशन ।
5. कुवलयानन्दः–व्याख्याकार डा.भोलाशङ्कर व्यास,चौखम्वा विद्याभवन, वनारस ।
6. ध्वन्यालोकः–सत्यनारायण चक्रवर्ती,संस्कृत पुस्तक भाण्डार, कलकाता, 1998।
7. वक्रोक्तिजीवितम् – अञ्जलिका मुखोपाध्याय,सदेश, कलकाता ।

[24].तत्रैव – 7/1

[25] गी.वी.रा. – 9/5

[26] गी.वी.रा. – 10/37

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 5
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

श्रीरामलक्ष्मणसीतानां तापसानामाश्रममण्डले आतिथ्यविषये विषमपदार्थटीकादिशा समीक्षणम्

सुभाषिनी उमरावः
शोधच्छात्रा, संस्कृतसाहित्यविद्याशाखा, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, लखनऊपरिसरः।
डॉ. नीरजतिवारी
निर्देशकः, संस्कृतसाहित्यविद्याशाखा, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, लखनऊपरिसरः।

Article Info
Publication Issue :
September-October-2023
Volume 6, Issue 5
Page Number : 95-101
Article History
Received : 01 Sep 2023
Published : 29 Sep 2023

शोधसारांशः- तत्राश्रममण्डले श्रीरामस्य सौकुमार्यं रूपसंहननं तेजकान्तिर्युतं च मुखं दृष्ट्वा सर्वेऽपि वनवासिनः ऋषिमहर्षयश्च आश्चर्यभूता बभूवुः। अग्नितुल्यपरमतेजस्विमहर्षिभिः कन्दमूलफलपुष्पैः विधिवत्सत्कृत्य सम्पूर्णं स्वाश्रममपि श्रीरामं समर्पितवन्तः तथा च निवेदितवन्तः- हे रघुनन्दन ! दण्डधरः धर्मपालकः महायशस्वी राजा भवान् सर्वैश्च पूजनीयः सर्वेषामपि गुरुः विद्यते। अस्मिन् भूतले इन्द्रादिलोकपालकानामेव चतुर्थांशः विद्यमाने सति सः प्रजानां रक्षितारः, अतः राजा सर्वेभ्योऽपि वन्दनीयो भवति उत्तमान् भोगान् उपभुङ्क्ते च। वयं भवद्विषयवासिनः, भवता वयं रक्ष्याः। यथा गर्भस्थभूतं बालकं माता रक्षति, तथैव भवता वयमपि रक्षणीयाः। एवमुक्त्वा फलैर्मूलैः पुष्पैरन्यैश्च वन्यैः विविधाहारैः राघवमपूजयन्।

मुख्यशब्दाः- श्रीरामः, लक्ष्मणः, सीता तापसानामाश्रममण्डलः, विषमपदार्थटीकादिशा, रामायणः, साहित्यम्।

प्रस्तावना- प्रस्तुत आलेख आदिकवि महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित महाकाव्य रामायण के अरण्यकांड पर देवरामभट्ट जी द्वारा लिखित विषमपदार्थव्याख्यानटीका पर आधारित है। यह मातृका अभी तक अप्रकाशित है। संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में नवीन ज्ञान की वृद्धि हेतु इस मातृका के आधार पर यह आलेख प्रस्तुत किया जा रहा है। रामायण के अरण्यकाण्ड पर लिखी गई देवरामभट्ट जी की यह टीका सम्पूर्ण भारत में अलवर(राज.), होशियारपुर (पं.), बनारस (उ.प्र.) तथा कोलकाता(प.बं.) आदि चार स्थानों पर प्राप्त होती है, जोकि अलवर एवं कोलकाता में पूर्ण रूप में प्राप्त होती है तथा पंजाब एवं

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

बनारस में अपूर्ण रूप में प्राप्त होती है। अतः यहां अलवर द्वारा प्राप्त पांडुलिपि को मुख्याधार मानकर तथा कोलकाता से प्राप्त पांडुलिपि को पाठभेद हेतु प्रयोग कर "श्रीरामलक्ष्मणसीतानां तापसानामाश्रममण्डले आतिथ्यविषये विषमपदार्थटीकादिशा समीक्षणम्" यह शीर्षकयुत लेख प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसमें श्री राम, लक्ष्मण और सीता का तापसों के आश्रममण्डल में जाने का एवं ऋषियों-महर्षियों द्वारा आश्रम के कंदमूलफल एवं पुष्पों द्वारा उनके आतिथ्य सत्कार का वर्णन है। श्री राम के तेज-कांतियुक्त, ओजस्वी मुख को देखकर आश्चर्य प्रकट कर, उनकी प्रशंसा करना तथा ऋषियों द्वारा सभी आश्रम वासियों की रक्षा हेतु दशरथसुत से प्रार्थना करना कि- हे रघुनन्दन ! जैसे एक माता गर्भस्थ शिशु की रक्षा करती है ठीक उसी प्रकार आप भी सभी आश्रम वासियों की रक्षा करें। आदि विषय वर्णित हैं।

प्रस्तुतशोधपत्रस्य क्षेत्रं साहित्यमेव। अस्यान्तर्गतं वाल्मीकीयरामाणमहाकाव्यस्य रामायणस्य अरण्यकाण्डमाधारीकृत्य विषमपदार्थव्याख्यानटीकानुसारेण कार्यं वर्तते। रामायणस्योपरि विरचितासु अनेकासु टीकासु देवरामभट्टकृतविषमपदार्थव्याख्यानटीका अन्यतमा अस्ति। तथेयं टीका सम्प्रति अप्रकाशिता एव। अतः संस्कृतसाहित्ये नूतनज्ञानार्जनार्थं पाण्डुलिपिमिमामाधारीकृत्याग्रे कार्यमस्ति। अत्र अरण्यकाण्डे "शूर्पणखावधः" प्रकरणादारभ्य "सीताहरणम्" इति प्रकरणपर्यन्तं घटनाः समायान्ति। सम्पूर्णकाण्डं पञ्चसप्ततिः(75)सर्गेषु निबद्धं, येषु चत्वारिंशदधिकचतुर्विंशतिः(2440) श्लोकाः प्राप्यन्ते। तत्रादौ प्रथमे सर्गे श्रीरामलक्ष्मणसीतायाश्च तापसानामाश्रममण्डले सत्कारः दरीदृश्यते।

विषयप्रवेशः- श्रीगणेशाय नमः। श्यामं सुंदरविग्रहं करलसद्वाणं लसत्कार्मुकंसासिं तूणधरं नरं धरणिजा सौमित्रिसंसेवितम् पुष्पावद्जटं सुवल्कलपटं त्रैलोक्यमोहिच्छटं संसारैकभटं परं कमपि तं ध्यायेदररोयभटम्। इह तावदिक्ष्वाकुवंशप्रभव इत्यारभ्य दंडकान्प्रविवेश हेत्यं तेन ग्रंथसंदर्भेण संक्षिप्य नारदेनोक्तं श्रीरामचरितं सर्वलोकोपकारकं महाप्रबंधेनोक्ताऽधुना देवदेवस्य भगवतो दंडकारण्यसंचारे सौलभ्य भूषितानद्भुतविशेषान्विस्तरेण वक्तुं तृतीयकांडमारभते।

प्रविश्य तु महारण्यं दंडकारण्यमात्मवान्।
रामो ददर्श दुर्धर्षस्तापसाश्रममंडलं।।[1]

विषमपदार्थटीकाव्याख्या- प्रविश्येत्यादिना आत्मवान् स्वायत्तचितरू दुर्धर्षो द्विषद्भिरप्रधृष्यरू महारण्यमिति सामान्येनोक्तस्य विशेषसंज्ञादंडकारण्यमिति दंडकनाम्ना राज्ञा परिपालितो देशरू शुक्रशापादरण्यमभूत् प्रविश्य तापसाश्रमाणां मंडलं समूहं ददर्शेतिसंबंधः। किन्तु कलिकातातः प्राप्तपाण्डुलिप्यां प्रविश्येत्यादि तु शब्दः पूर्वारण्याद् वैलक्षणद्योतनार्थः, समः दुःखगाहं, तत् इति अतिरिक्ता व्याख्यास्ति शेषव्याख्या अलवरतः प्राप्तपाण्डुलिपिवत् वर्तते।

कुशचीरपरिक्षिप्तं ब्राह्म्या लक्ष्म्या समावृतं।

यथाप्रदीप्तं दुर्दशं गगने सूर्यमंडलम्।।[2]

तद् वर्णयति कुशेत्यादि सार्धं सप्तश्लोकैरू चीराणि वल्कलानि परिक्षिप्तं व्याप्तं ब्राह्मीलक्ष्मीरू तपोजनिततेजोविशेषरू तया समावृतं अतए व गगनाधिकरणसूर्यमंडलिव दुर्दर्श रक्षोऽसुरादिभिर्द्रष्टुमप्यशक्यं । कुशैर्यज्ञार्थमाहृतैः चीरैः स्नानंतरमातपे परिशोतृणार्थं क्षिप्तैर्वल्कलैश्च।

शरण्यं सर्वभूतानां सुसंमृष्टाजिरं सदा।

मृगैर्बहुभिराकीर्णं पक्षिसंघै: समावृतं।।[3]

शरण्यमावासार्हं सुसंमृष्टाजिरं अलंकृतप्रांगणं। अतएव सर्वभूतानां रक्षो भीतानाम्।

पूजितं चोपनृतं च नित्यमप्सरसांगणै:।

विशालैरग्निशरणै: स्रुगभांडैरजिनै: कुशै:।।[4]

अक्षरसांगणै: उपनृतं उप समीपे कृतनर्तनं अतिमनोरमदेशत्वात् अतएव तै: पूजितं च अग्निशरणैरग्निहोत्रगृहै: स्रुगादिभिर्यज्ञोपकरणैश्च शोभितम्।

समिद्भिस्तोयकलशै: फलमूलैश्च शोभितं।

आरण्यैश्च महावृक्षै: पुण्यै: स्वादुफलैर्वृतं।।[5]

आरण्यै: अरण्यभवै:।

बलिहोमार्चितं पुण्यं ब्रह्मघोषनिनादितं।

पुष्पैश्चान्यै: परिक्षिप्तं पद्मिन्या च सपद्मया।[6]

बलिहोमार्चितं वैश्वदेवहोमबलिहरणै: सत्कृतं ब्रह्मघोषो वेदघोष: तेन निनादितं संजातनिनादं पद्मिनीसर: सपद्मया पद्मपुष्पयुक्तया।

पद्मिन्या पद्मसरसा अन्यै पुष्पैश्च देवपूजार्थमुत्क्षिप्तैः परिक्षिप्तव्याप्तं।

फलमूलाशनैर्दांतैश्चीरकृत्माजिनां वरै:।

सूर्यवैश्वानराभैश्च पुराणैर्मुनिभिर्युतं।।[7]

पुराणैर्वृद्धै: ।

पुण्यैश्च अनियताहारै: शोभितं परमार्षिभि:।

तद्वब्रह्मभवनप्रख्यं ब्रह्मघोषनिनादितं।।[8]

ब्रह्मभवनं ब्रह्मलोक:।

तत् प्रख्यतत्सदृश ब्रह्मघोषेति प्राधान्यात्पुनरुक्तिः।

ब्रह्मविद्भिर्महाभागैर्ब्राह्मणैरुपशोभितं।।[9]

ब्रह्मविद्भिर्ब्रह्मज्ञानवद्भिर्महाभागैर्महाभाग्यैः ब्रह्मविद्वा ब्रह्मणयुक्तत्वादेव ब्रह्मलोकतुल्यत्वमाश्रमस्य।[9]

तं दृष्ट्वा राघवः श्रीमांस्तापसाश्रममंडलम्।

अभ्यगच्छन्महातेजाविज्यं कृत्वा महद्धनुः।।[10]

विज्यं अवरोपितगुणं आश्रमवर्तिमृगपक्षित्रासनिवृत्यर्थमितिभावः।

दिव्यज्ञानोपपन्नास्ते रामं दृष्ट्वा महर्षयः।

अभिजग्मुस्तदा प्रीता वैदेहीं च यशस्विनीं।।[11]

दिव्यज्ञानोपपन्नाः रामोयं रमणीयचिदानंदविग्रहोमुक्तैरधिगम्यस्तारकं ब्रह्मलोकानुजिघृक्षया रावणवधार्थमवतीर्णः सीता च चिदानंदरूपा महालक्ष्मीर्लक्ष्मश्च तदेशो नेत इति दिव्यं लोकविलक्षणं ज्ञानं तेनोपपन्ना युक्तास्ते रामं सीतां च ल्लक्ष्मणं च दृष्ट्वा प्रीता अभिजग्मुः आभिमुख्येन जग्मुः।

ते तुसोममिवोद्यंतं दृष्ट्वा वै धर्मचारिणं।

लक्ष्मणं चैव दृष्ट्वा तु वैदेहीं च यशस्विनीं।

मंगलानि प्रयुंजानाः प्रर्तयगृह्णन्दृढव्रताः।।[12]

ते तु उद्यतं सोममिव प्रियदर्शनं धर्मचारिणं रामं दृष्ट्वा लक्ष्मणं यशस्विनीं सीतां च दृष्ट्वा मंगलानि प्रयुंजानाः स्वेष्टदेवतात्वेन प्रत्यगृह्णन् स्वीचक्रुरितिसंबंधः।

रूपसंहननं लक्ष्मीं सौकुमार्यं सुवेषतां।

ददृशुर्विस्मिताकारा रामस्य वनवासिनः।।[13]

रामस्य रूपं भूषणविभूषणमंगं तस्य संहननं अवयवानां सुश्लिष्टसंधिबंधनं सौंदर्यं रव्यं अंगप्रत्यंगानां यथोचितसन्निवेशमित्यर्थः यद्वा रूपमिति पृथक्पदं अभूषणोपि विभूषितभासनत्वं रूपं संहननं सौंदर्यं लक्ष्मीं कांतिमुक्ताफलेषु छायातरलत्वमिवांगेषु विभातं लावण्यं सौकुमार्यं मार्दवं सुवेषतां उचितश्रृंगारसंपन्नतां विस्मिताकाराः अद्भुतदर्शनेन विस्फारितेक्षणा वनवासिनो मुनयो ददृश्युरिति संबंधः।

वैदेहीं लक्ष्मणं रामं नेत्रैरनिषैरिव।

आश्चयिभूतान्ददृशुः सर्वेते वनचारिणः।।[14]

वैदेहीमिति वनचारिणः पशुपक्षिमृगादयः अयं भावः पद्मभव प्रमुखानामप्यगोचरो भगवान् सीतालक्ष्मणोपेतः श्रीरामोऽस्माकमपि पुरतः प्रादुरासीदिति जगन्मोहनदिव्यमंगलविग्रहदर्शनानंदविछेदभयेन निमेषरहितैर्नेत्रैर्मृगादयोप्यश्चर्यवंतो ददृश्युरिति।

अत्रैनं हि महाभागाः सर्वभूतहिते रताः ।

अतिथिं पर्णशालायां राघवं संन्यवेशयन्।।[15]

अत्राश्रममंडले महाभागा: कृतपुण्यपुंजा: अतिथिं परमपूज्यमेनं राघवं पर्णशालायां संन्यवेशयन् आसने स्थापयामासु।

ततो रामस्य सुसत्कृत्य विधिना पावकोपमा:।

आजह्रुस्ते महाभागा: सलिलं धर्मचारिण:।

मंगलानि प्रयुंजाना मुदा परमया युता:।।[16]

तत इति परमपुरुषस्य तव संदर्शनेनैव वयं महाभागा अतिधन्या इति प्रियवचनै: सुसत्कृत्य सलिलं सलिलादिपूजाद्रव्यं आजहु: रामस्य पूजार्थमितिशेष: मंगलानि दिव्यस्तोत्राणि।

मूलं पुष्पं फलं वन्यमाश्रमं च महात्मन:।

निवेदयित्वा धर्मज्ञास्तत: प्रांजलयो ब्रुवन्।।[17]

वन्यं वने भवं आश्रमं निवासस्थानं च निवेदयित्वा इमानि वस्तूनि देवत्वदीयानीत्युक्त्वा प्रांजलय: अयमेवादिपुरुष इति निश्चयबुद्ध्या समुद्वुद्धभक्तिरसेनबद्धांजलयो भगवंतं श्रीराममब्रवन् विज्ञापयंति स्मेत्यर्थ:।

धर्मपालो जनास्यास्य शरण्यस्त्वं महायशा:।

पूजनीयश्च मान्यश्च राजा दण्डधरो गुरु:।।[18]

विज्ञापनाप्रकारमेवाहु: धर्मपाल इत्यादिना धर्मपाल: वर्णाश्रमधर्मपालक: शरण्य: आर्तसर्वलोकस्य रक्षिता पूजनीयो देवतावता बुद्ध्या पालकत्वेन गुरुत्वाच्च मान्यो राजबुद्ध्यात्कारार्हश्च त्वमसीतिशेष:।

इंद्रस्यैव चतुर्भाग: प्रजा रक्षति राघव:।

राजा तस्याद्धरान्भोगानग्न्यान् भुंक्ते नमस्कृत:।।[19]

उक्तमर्थं कैमुत्यन्यायेन दृढयति इंद्रस्येति दिक्पालचतुष्ट्या प्रत्येकं चतुर्थांशो राजनि संक्रामतीति न्यायेन इंद्रस्य त्वन्नियम्यस्य चतुर्थांशभूतो राजापि प्रजाधर्मेण रक्षति तस्माद्रक्षणादग्न्यान् भोगान् भुंक्ते च नमस्कृतश्चेति संबंध: यदा एवंविधस्य राज्ञोप्येवं प्रभावस्तदा सकलजगद्रक्षणा यावतीर्णस्योत्तमस्य पुरुषस्य तव धर्मपालकत्वशरण्यत्वादिकमस्तीति किमु वक्तव्यमितिभाव:।

ते वयं भवता रक्ष्या भवद्विषयवासिन:।

नगरस्थो वनस्थो वा त्वन्नो राजाजनेश्वर:।।[20]

अस्तु प्रकृते किमायातमत आहुस्ते वयमिति ननु नगरं विहायागतेन चतुरं गबलरहितेन वनस्थे न मया भवेत: कथं रक्ष्या इत्यत आहु: नगरस्थ इति यतस्त्वं नगरस्थो वनस्थोवान: राजा अतस्ते त्वदेकं शरणावयं भवता करुणाशालिना रक्ष्या: अत्रास्मद्रक्षणं नामानंतकल्पाणगुणैकनिलयजगन्मोहन्दिव्यमंगलत्वन्मूर्तिं ध्यानानंदानुभवांतराय भूतरक्षो निवारणरूपं

अंतप्रसंगपरिहार्यमाहु: भगवद्विषयवासिन इति विषयोदेश: अयं भाव: इतरे राजानो बुद्धिबलेन चतुरंगबलेन च स्वराज्यमात्ररक्षणे शक्ता भवति सकललोकरक्षणे धुरीणस्यामहाय शूरस्य तवनगरवासे किं वमुपचीयते स्वाभाविकनिरतिशयज्ञानशक्तिसंपन्नास्य तव वनवासे किमपचीयते अतो यत्र कुत्रापि स्थितस्य तवासाध्यं किमपि नास्तीति।

न्यस्तदंडा वयं राजन् जितक्रोधा जितेंद्रिया:।

रक्षितव्यास्त्वया शश्वत् गर्भभूतास्तपोधना:।।[21]

ननु महाप्रभावानां कुतो रक्षकांतरापेक्षतेत्यत्राहु: न्यस्तदंडा: त्यक्तभूतनिग्रहा: यद्वा त्वय्येव विन्यस्तसकलराक्षसशिक्षाभारा: तत्र हेतुर्जितक्रोधा: तपोनाशभयात् अतो रक्षितव्या: गर्भभूता: यथा मातुर्गर्भे प्राप्तो जीवो मात्रा रक्षते तद्वद् रक्ष्या: इत्यर्थ:।

एवमुक्त्वा फलैर्मूलै: पुष्पैरन्यैश्च राघवं।

वन्यैश्च विविधाहारै: सलक्ष्मणमपूजयन्।।[22]

अतस्तेषां भगवदेकनिष्टानां यथोचितभगवदनुवृत्तिमाह एवमिति अन्यै: नीवारादिभि:।

तथान्ये तापसा: सिद्धारामं वैश्वानरोपमं ।

न्यायवृता यथान्यायं तर्पयामासुरीश्वरं।।[23]

तथेति सिद्धा: भरद्वाजादिवत्सिद्धसंकल्पा: न्यायवत्ता: न्यायो भगवदुपासनादिरूपो धर्म: स एव वृत्तं शीलं येषां ते कृताभ्यवहारमीश्वरं सकलजगत्स्वामिनं नीराजनमंगलस्तुत्यादिभिर्यथान्यायं यथाविधितर्प्पयामासु:।

सन्दर्भः-

[1]. राजस्थानप्राच्यविद्याप्रतिष्ठानतः प्राप्तपाण्डुलिप्याम्।

* अत्र राजस्थानतः प्राप्तपाण्डुलिपिकृते (**क**) इति शब्दः प्रयुज्यते।

* तथा एशियाटिकसोसायटी,प.बं.तः प्राप्तपाण्डुलिपिकृते (**ख**) इति शब्दः प्रयुज्यते। इति विशेषः।।

[2]. एशियाटिकसोसायटी-कलिकाता(प.बं.)तः अर्थात् 'ख' प्राप्तपाण्डुलिप्याम्।

3. 'क' पाण्डुलिप्याम्।

4. 'ख' पाण्डुलिप्याम्।

5. 'क' पाण्डुलिप्याम्।

6.'ख' पाण्डुलिप्याम्।

7. क एवं ख उभयोः पाण्डुलिपयोः।

8. क एवं ख उभयोः पाण्डुलिपयोः।

9. 'क' पाण्डुलिप्याम्।

10. 'ख' पाण्डुलिप्याम्।
11. क एवं ख उभयोः पाण्डुलिपयोः।
12. 'क' पाण्डुलिप्याम्।
13. 'ख' पाण्डुलिप्याम्।
14. क एवं ख उभयोः पाण्डुलिपयोः।
15. क एवं ख उभयोः पाण्डुलिपयोः।
16. क एवं ख उभयोः पाण्डुलिपयोः।
17. क एवं ख उभयोः पाण्डुलिपयोः।
18. क एवं ख उभयोः पाण्डुलिपयोः।
19. क एवं ख उभयोः पाण्डुलिपयोः।
20. क एवं ख उभयोः पाण्डुलिपयोः।
21. क एवं ख उभयोः पाण्डुलिपयोः।
22. क एवं ख उभयोः पाण्डुलिपयोः।
23. क एवं ख उभयोः पाण्डुलिपयोः।

सन्दर्भग्रन्थसूची -

1. रामायणस्यारण्यकाण्डस्य देवरामभट्टकृतविषमपदार्थव्याख्यानटीका-(राजस्थानप्राच्यविद्याप्रतिष्ठान-अलवरतः प्राप्ता)
2. रामायणस्यारण्यकाण्डस्य देवरामभट्टकृतविषमपदार्थव्याख्यानटीका-(एशियाटिकसोसायटी-पश्चिमबंगाल-कलिकातः प्राप्ता)
3. वाल्मीकिरामायणम्-गोविन्दभवन, गीताप्रेस, गोरखपुर ।
4. रामायणम्, तिलकभूषणशिरोमणिटीकात्रयेणोपस्कृतम्-परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 20021

शोधशौर्यम्

Publisher

Technoscience Academy
(The International open Access Publisher)
Website : www.technoscienceacademy.com

Email: editor@shisrrj.com